



ठैकीराम की चारपाइयां

• जगदीशचन्द्र पांडेय

ज्ञान भारती

4/14 रूप नगर

दिल्ली 110007

हाल प्रकाशित

•

संस्करण 1992

•

•

मूल्य 35 00

•

परमपिटर्स

नवीन इन्डस्ट्रियल डिप्टी 32

में मुद्रित

ISBN 81 85749 10-4

पूज्य पिताजो
की
स्मृति मे

क्रम

दूरी	1
दायित्व	17
डेलीवजर	25
शिकायत	33
पागल	41
मैं, मेरी दराज और चूह	47
हसा की ईजा	56
पीधे	63
एक और कालिदास	73
भूचाल	84
सम्मलन	93
नेकीराम की चारपाइया	99

अफ्रीका एबेयू के जिस हिस्से पर हरित रहता है उम जगह से निखिल के क्वाटर की दूरी आज भी उतनी ही है जितनी कि कल या तब, जब तीन माल पहले निखिल को भी यही क्वाटर एताट हुआ था। वैसे भी जाने क्या अजीब बात थी कि जब से हरित ने होश सभाला, तभी से वह एक बात देखता था कि उसकी और निखिल की रिहाइश के बीच की दूरी कमोवेश एक-सी ही रही है। अलबत्ता उस मवा डेढ साल की बात और थी जब हरित नैनीताल में पढता था निखिल दिल्ली में नौकरी करने लगा था। शायद ऐसा इसलिए कि धरती के दो स्थानों के बीच की दूरी बिना हिमालयी परिवर्तन के घटती बढ़ती नहीं है। हिमालयी परिवर्तन में ही समुद्र की जगह हिमालय का उभरना संभव है, वस नहीं। हरित इसी दूरी को दृष्टि अब तक कितना खुश रहता था। वह अक्सर सोचा करता था, यदि वह इधर रहता है तो निखिल इसी एबेयू के उस हिस्से पर, जहां दिल्ली की रिंग रोड इसे दूसरे हिस्से में बाटती है। पर आज निकी की एक छोटी-सी बात ने हरित के मन मस्तिष्क को झकझोर डाला। निकी ने तो उसे यह तक अहसास करा दिया कि वह अब तक जिस भ्रम को पाले हुए था, वह बिल्कुल गलत था। निखिल और उसमें मीलों और कौसों की दूरी है। तभी तो निकी की बात सुनते-सुनते वह झटपट के साथ बालकनी पर आकर खड़ा हो आया। देखने लगा उसी ओर जिधर देख वह परेशानी के क्षणों में भी राहत की सांस लिया करता था। सामने वाली सड़क की पल्लो ओर टाइप वन क्वाटरों के बीच चप-रामियों के बच्चे हम समय भी खेल रहे थे। अलबत्ता उनके बगलवाला

वह हिस्सा आज मूना पडा हुआ था जहाँ जमान पहले मात जाठ सी झुगिया थी। परशानी के क्षण म वहीं अकसर यही पर खडा हो मामन देखा जा करता था।

हालांकि निका की पिता के दिल को दुखाने भर की दृष्टि से वह बात नहीं कही थी। पौन तीन साल का वह अभी इस काविल हुआ ही कहा था। अभी ता उमका ससार ऐमा ससार था जिमम ज जा इ इ या ए की सी डी की पटा को जोडकर आदमी के रहने लायन घर बनाया जा सकता था। उमकी मा ने उस यही तो बताया था कि आज जिन घर म तर गुड्डा-गुडिया रहा करत ह आनेवाले कल म वसे ही घरो म तुम रहा करागे। जमाद का अक्षरा की पहचान जो करानी थी। अलबत्ता डिडकी ने दिखती रेना का देखत देखते वह यह जान चुका था—खिनीने की रल भी पटरी पर चला करती है। यही तो बात थी कि हरित ने जब उसे रल पकडायी तब उमन वह डिवा भी मागा जिमम से उसे रल दी गयी थी। यदि वह इतना ही करता तो हरित यही सोचता, बच्चे एमा किया ही करत है। उमन ता किया यह कि पहल तो डिवा का मुह धरती की आर किया ताकि उमम बचा सामान नीचे गिर जाय पर जब नीचे कुछ नहीं गिरा तो डिवा क भीतर हाथ डालत हुए वह बोला, 'पापा रल पथरी पर चलती ह ना। इथकी पथरी ।

भला हरित इनका क्या जवाब दता। वह ममन भी गया था कि निका न एमा बया और किम कारण किया ह। धरती म रेल पटरी पर ही ता चला करती ह। वह तो पिता था जा निका की जिद पर सामन ल जाकर उम पटरी पर चलती रेल को दिखा तक चुका था। यह दूसरी बात थी जत पटरी पर चलती रेल को दिखा वह सहम उठा था कि मौका पाकर वही यह रेल देखन उधर अकेले न आ जाय। तभी ता तब निका का उमन मामन चौराहे पर बडे रहनवाने बाबा क वार म अजीबा-गरीब बातें यताया थी कि वह एमा बाबा है जा बच्चा का पकडकर भगा ले जाता है, जबकि तय्य इनक ठीक विपरीत था। वह तो एमा बाबा था जिस इलाक के लाग एक बहद भने आदमी के रूप म जानत थे। पटने उमन झुगिया क बीच एक मंदिर बना रखा था। जबमे मामन की झुगिया हटायी गयी

तब स अपनी मूर्तिया लिय वह इसी चौराहे पर पडा हुआ था । शुरू शुरू मे लगा न उमे बहुतरा समझाया—तुम भी, जहाँ युग्मीवाली को बसाया गया ह, वही बम लो । वह किमी की मानता ही नहीं था । पता नहीं, इस जगह पर रहकर वह अपनी जीवनसंगिनी का अखिरी यात्रा को याद करता था या उस अफ्रीका एवेयू के नाम से ही कोरे किरोप प्रेम था या इस एवेयू के अफ्रीका एवेयू नाम का साधक बनने के लिए यहाँ रहना वह जरूरी समझता था । वह यहाँ मे किमी कीमत पर हटता नहीं था । जैसे-जैसे इसी बैठे रहने से हरिन का यह लाभ हुआ कि निकी अब बिडकी-स, बलनी रेल भी तब दबता था जब चौराहे पर बाबा न हो ।

पर आज निकी की पटरीवाली बात का सुन हरित अदर ही-अदर हिल चुका था । इसलिए नहीं कि वह निकी के लिए पटरीवाली रेल गरीद नहीं मरता था बरन इसलिए कि निकी की पटरी न उम पिता की एक बात याद ताजा करा दी थी । एक बार उहान उससे कहा था 'बेटा जिसकी रेल पटरी पर चला करती ह उसका एमा ही हुआ करता है ।' कहा तो तब उसने निखिल का भी बजीफा मिलन की बात पिता को इसलिए सुनायी थी कि उम शाबाशी मिने । कहा उहाने उससे वह बात कह डाली जिममे खीजकर उसे कहना पडा था—जरा फस्ट आकर तो दिखाय । इसी पर उमके पिता न उससे कहा था 'हरी, तुम इस बात को नहीं समझ सकत कि तीमरी पाजीशा आत पर दो के बदले तीन बजीफे क्या और कमे दिय जान ह । इसीलिए ता कहता हू खूब मेहनत किया करो । बम फस्ट जाना अच्छी बात है पर जिदगी की शौड म फस्ट आना ही काफी नहीं हुआ करता है । उसके लिए दूसरी जरूरी बातें हाती ह । जिस दिन तुम उन बातों को ममयोगे, उमी दिन तुम्ह पता चलेगा निखिल और तुमम कितनी दूरा ह । उसकी रेल बेटा पहले ही पटरी पर '

तब मे नकर अब तब हरित इसी दूरी को पाठने म लगा हुआ था । उसकी तो निस्मत न उमका पूरा माथ नहीं दिया बरना तो उसने निखिल को एक ही झटक म चारा खान चित कर डाला था । इतने पर भी उसने जितना किया था, उतना भी अपने आप म कम नहीं था । दसवी तक

आते-आत यदि निखिल के लिए दो ट्यूशन लग चुके थे ता हरित के पास रो-पीटकर कोस की कितारें भरी थी। हा, बुद्धि हरित की अपनी था। सभावित खतरे की कल्पना भर से उसन अपना ऐसा साथी खोज निकाला जिसके लिए जिद्दवाजी म तीन ट्यूशन लगाय गय थे। हरित न उसी जिद्दवाजी का फायदा उठाया। सहपाठी नरी की बदौलत उसे अब तीन नोटस मिल आय थे। बदले म वह भी उसे मदद किया करता था। इतना ही उम्र म तथा ग्रामीण परिवेश क कारण वह इम बात को ताड गया था—उसक पिता और नरी के पिता म यदि नजदीकी है तो नरी के पिता का निखिल के परिवार भर से चिड है।

ऊपर से हरित के स्वभाव की एक और खासियत यह थी कि यदि वह नरी के डीलडौल शरीर का लाभ उठा निखिल को पग-पग पर दवाय रहता था, तो खेला म षगडा हा जाने पर वह निखिल और नरी म बीच-बचाव करके निखिल का भी प्रस न रखा करता था। इम बार म हरित क लिए सबसे लाभप्रद बात यह भी थी कि गाब के बच्चा के खेलन का तप्पड उसी क घर के पास था। इसलिये भी उमका सबसे रौब था। फिर पढन म वह बटुत होशियार था। यह उसकी इत्नी हाशियारी का नतीजा था कि मट्रिक का जब रिजल्ट आया ता वह अपन स्कूल म नही आमपास क कई स्कूला मे सबसे अधिक नबरा से पास हुआ था। हालाकि निखिल भी फस्ट डिवीजन म पास हुआ। जहा तक नरी की बात थी वह तो हरी की बदौलत ऐसे सेकिंड डिवीजन म पास हुआ जिसकी नरी और उसक पिता तक को उम्मीद न थी। हरित के द्वारा नरी को बताय गय गैम का जो अमर था। हरित भाप जा चुका था—नरी को की गयी आज की मदद आग काम आयगी। उसके तो पिता की ब्रह्मवृत्ति वाली जामदनी इतनी कम थी कि बी० ए० एम० ए० करना उसके लिए सपना था। ऊपर से उमक पिता पर उसकी विघवा चाधी और उसक दा बच्चा की जिम्मेदारी भी थी। वह तो उसकी मा ने जिद्द की बरना तो उमके पिता उस मट्रिक के बाद भी पढाना छुडा नौकरी करान की सोचन लग थ। इसीलिए माता-पिता की बाते सुन उसकी आँखें मातबर पर थी।

मातबर की भी अपनी मजबूरी थी। पता उमक पास था। पना क

बल पर उसकी ध्वाइश थी कि वह अपने नरी को एम० ए० कराये । नरी से हरित भी एम० ए० करने की बातें सुना करता था । उसकी बातें सुनकर वह ऊपर दिखन वाली दूर्गागिरि पहाड़ी को देखता-देखता रह जाता था । उसन मुना जो था वहा एक देवी है जो सबकी मनोकामना पूरी करती है । जबकि अब दिन-पर दिन घर की हालत बिगडती चली आयी । इमीलिए कोई और उपाय न देख हरित न मन-ही मन नरी को अपना आधार मान लिया था । उसका यह आधार उस समय काम आया जब इटर म निखिल को फिर पछाडन पर भी हरित के बी० ए० मे दाखिला के लाले पड गये । हालाकि ऐसे क्षणा उसकी चाची न अपन जेवरा की पोटली हरित के पिता के सामन रखकर सबको स्तब्ध कर दिया । पता नही यह उसका हरित के पति प्यार था या यह भी उमकी सूच थी कि जागे चलकर यही उमके अपने बच्चा के काम आयगी । उसके इसी व्यवहार का इतना असर पडा कि हरित व पिता उसे पढने अल्मोडा भेजन के उपाय खाजो लगे । वहा उसकी बुआ जो थी । इही उपायो के बीच उहोंने बात मातबर से भी की । वम उमस जिक्र करना था कि वह तो फूला नही समाया । वह उनस तुरत बोला "दाज्यू नरी के लिए मैं नैनीताल म कमरा ता लेना ही है । आपका हरी भी उसके साथ रह लगा । इतना मैं आपके बटे के लिए करूंगा । जरूरत पडने पर और देखूंगा । कौन जान आपके हरी की बदौलत मेरा नरी भी पढ ले ।"

मातबर का यही सुझाव हरित के लिए बरगान साबित हो आया । एक कमरे के कारण नरी की किताबें भी उसे मिल आयी । ऊपर से एक बात और कि हरित भी वहा पढने लगा जहा निखिल पढ रहा था । यह अलग बात थी कि हरित को इतन पर भी यह उम्मीद नही थी कि वह नरी के साथ अधिक रह सकेगा । उसकी कई आदतें उसे पसंद नही थी । पर ननीताल पहुचत ही स्थिनिया एसी बदली कि नरी बदल आया । दाखिला लेने के दिन दोना को ऐसा लगा, जैसे पूरे क्लास म के ही दो गवार है । निखिल की बजह से उनका साक्षात्कार निखिल की गीदी के लडके मुवेश से हुआ । उसके पिता बिडला स्कूल मे उच्च अधिकारी थे । इम नाने वह किसी को कुछ ममझता ही नही था । पढने म वह होशियार

ता था ही। अंग्रेजी एमी परनिदार बानता था कि नरी और हरित दाना उमका मुह तावत रह जान थ। वह बाक^र म नय जमान का एक ममय-दार बचा था। फिर इम प्रकरण म इम बात का भी कम महत्व नहीं था कि नरी का अपन पिता की दौलत का नाज था।

इमीलिए अब हरित और नरी की मुश से भी प्रतिस्पद्धा हा आया। हालाकि उनके दाखिन के टिना मुकश कमिस्ट्रा म एम० एम-मी० कर रहा था प्रीविएण म था। पर उनकी प्रतिस्पर्द्धा अंग्रेजी र कारण हा जायी। इमीलिए अब नरी और हरित घर पर टूटी पूटी अंग्रेजी बालन लग तथा आग-पीछे देखकर ननीताल की मडवा पर। बचारा को चतरा जा रहता था—यदि काइ जानकार उनकी नालायकी की अंग्रेजी मुनगा तो हसगा। ननीतावन ता नागत व उन शहरा म एक प्रमुख शहर था जहा क लाग अंग्रेजा क समय म जाज स ज्यादे अंग्रेज बन आय थे। इमीलिए बचारा का काम चलना कठिन हा आया। इसीलिए मजदूरी म वे अब धीरे धीरे अंग्रेजी की कितावे पढने लगे। इम वार म उनक अंग्रेजी क उम तेककरर का भी कम अस्पर नहीं था जो अंग्रेजी पढान-पढात असमर अस्तित्ववाद की ध्याह्या करन लगता था। उसकी पूरी याह्याए ता उनक पल्ल नहीं पडी उनकी बदौलत वे इतना अवश्य समझ गय कि वे अस्तित्ववादी युग मे जी रहे है। अस्तित्ववादी विचारधारा क अनुमार दूसरा को पीछे बकल-कर आग बढना पाप नहीं है। अपने अस्तित्व को बनाय रखन क लिए जितना हिम्मत नहीं हारना और मेहनत करना जरूरी ह उतना ही अंग्रेजी का जानना।

नतीजा यह कि बी० ए० तक पहुचत-पहुचत नरी और हरित न लाइब्रेरी से अंग्रेजी की डेरा किताब पढ डाली। इम अध्ययन का उनका लाभ भी हुआ। अब वे भी अंग्रेजा बालने म हिचकिचात नहीं थ। अत्रिक अध्ययन होने के कारण उनकी नजरा म अंग्रेजा की अंग्रेजी और अपन लागी की अंग्रेजी म फक साफ दिखन लगा। वह इनलिए कि मुकश अंग्रेजी बोलत समय ऐसे नाक भी मिकोडता था जस वह अपन गुलामा स बातें कर रहा हो। तभी तो हरित की यह धारणा बन आया थी कि अंग्रेजी ता खतरनाक नहा अलबत्ता अंग्रेजियत खतरनाक है। क्याकि अध्ययन करत-

करन अब वे यह अच्छी तरह जान चुके थे दुनिया में कोई भी भाषा मल्टी-बुरी नहीं होती। भला-बुरा होता है आदमी—जो अपनी भाषा के बोलने में दूसरा की भाषायी धरोहर का जलती अग्नि में ऐसे प्राकृतिक है कि स्पनिश लोग न दक्षिणी अमेरिकी भाषायी धरोहर का भाग का स्वीकार था। इसीलिए इस तरह के अध्ययन का उह यहा तक लेस हुआ कि हरित ता अलग, नरी तक बी० ए० म फस्ट डिवीजन में ऐसा पास हुआ कि नरी के पिता मातबर ने हरित का एम० ए० कराने की पूरी जिम्मदारी ल ली। यह जलगत बात थी कि एम० ए० ज्वाइन करने के पाचवे ही महीने जब अचानक निखिल ने पढना छोडा और दिल्ली आकर नौकरी करन लगा तो वे दोना भी नौकरी की सोचन लग।

उधर अब निखिल के साथ-साथ मुकेश की भी नौकरी ट्रावे म लग गयी थी। विश्वविद्यालय के उसने पिछने पचीस वर्षों के गिवाडों का भी ताडा था। इसमें भी बडी बात उसके पक्ष में यह थी कि बडे बाप का बेटा तो था ही साथ में एक सीनियर आई० ए० एम० का साता भी था। जबकि हरित और नरी दोना अभी नैनीताल में ही थे। इसीलिए अब उनके लिए वही नैनीताल सूना हो आया था जो कभी उहे लुभावना लगता था। अब तो उनके लिए केवल उम सडक का महत्व था जो दिल्ली का आती थी। तभी तो अब वे दिल्ली को आनेवाली बस को तरमती निगाहा में देखत थे। यह दूसरी बात थी कि दिल्ली को आनेवाली मडका न उनके लिए नयी समस्या पैदा कर दी। रही-मही बसर उहे मिली इस सूचना न पूरी कर दी कि निखिल की नौकरी टकिनकल असिस्टेंट की लगी है। उनके लिए अब यह प्रश्न था आखिर स जेवट तो उनके भी वही थे जो उन दाना के पास थे। तब उसने गेमी कौन-भी महारत हासिल की जो उनकी यह नौकरी लगी। बचारा को अभी इन जमलियत का पता कहा था कि वे उन समान जवसरा बाल युग में जी रहे ह जिसमें एक बी० ए० इंटरव्यू होता है एक इंटरव्यू देता है और तीसरा चपरासी की भी नौकरी की तरमता है। बचारा तो अभी उमी किताबी अध्ययन में थे जिनके अनुसार सदिया से दिन्सी पढचन के अब तब नय और नय ही रास्त बनत रहे हैं।

अब वे दाना भी एमा ही एक नया रास्ता याजने की मोचन ला। नरी का मुझाव था—साव सवा आयाग से अमिस्टेंट ग्रेड की परीक्षा पाम करके दिल्ली जाया जाय। हरित का मुझाव था—परीक्षा ता अमिस्टेंट ग्रेड की भी दी जाय, पर मुख्य जोर आई० ए० एम० परीक्षा पर दिया जाय। उमकी नजरा म सबसे अच्छी नौकरी यही थी वह चाहता था जाट० ए० एम० बनकर निखिल को यह जतला दें कि दुनिया म ममझदार वे नहीं हात हैं जो दूसरा की पीठ के महार से चली बरूक के बल पर खडे हा। समझदार वे होत हैं जो अपना रास्ता खुद बनायें। बचार को अभी तक इम बात का भी बहा पता था कि सिरतोड मेहनत करर परीक्षा तो पाम की जा सकती है पर आई० ए० एम० परिवार म नहीं होत के कारण इटरब्यू के उन निर्णायका की आखा म धूल नहीं झाकी जा सकती जिनकी दृष्टि म आज का सारा ब्रह्माड उनक और उनक रिश्तदारा पर ही टिका हुआ है। यही तो बात थी कि हरित और नरी दोना ही आई० ए० एम० की रिटन परीक्षा म पाम हात हुए भी आई० ए० एम० नहीं बन सके हा, दाना अवश्य ही असिस्टेंट ग्रेड म पास हो आय थे।

यह बात जलग थी कि नरी ने असिस्टेंटी ज्वाइन नहीं की। उनके पिता का सपना एम० ए० था। पिता और छोटे बेटे के अरमाना की दूरी की जा बात थी हरित क लिए असिस्टेंट की नौकरी भी कम नहीं थी। एक तो पारिवारिक स्थिति का सबाल दूसरा अब वह इतना ती समझ ही गया था कि ऐसे परिवेश म नौकरी मिचना मामूली नहीं जिसम नौकरी क लिए तो सकडा बी० ए० एम० ए० में, मैं कर रहे हा पर नौकरी नहीं हो ही। फिर इस बारे मे एक खाम बात यह भी रही कि कई जानकारा ने हरित का यह बताया कि असिस्टेंट की नौकरी के सामन टेक्निकल असिस्टेंट की नौकरी कुछ नहीं है।

इमीलिए वह मारे खुशी के दिल्ली चला आया। यहा आकर उसकी खुशी क्षण प्रतिक्षण बढ़ती ही चली गयी थी। निखिल को मिलता बेतनमान उसके बेतनमान से कम था। काम भी उन दिना का समान था। और तो और कुलीग की बदौलत किराये पर हरित को जो कमरा मिला उससे निखिल के कमरे की दूरी उनके गाव के घरा मे कम थी। हरित यदि शुल्-

शुट में सरोजिनी नगर में होशियार सिंह रोड में रहता था ता निखिल नेताजी नगर रहता था। निखिल के क्वार्टर के लिए चंपरासिया के छोटे क्वार्टरों से जाना पड़ता था। ऊपर से निखिल के घर के पास अनगिनत इतनी झुगिया थी कि निखिल को वहाँ रहना ऐसा लगता था जैसे वह अफ्रीका के किसी देश में रह रहा है। उसने हरित से ये बातें कई बार कही थी, फिर रही-सही कसर इसलिए पूरी हो आयी कि दिल्ली में पाव रखने के महीने भर के अंदर हरित को यह पता लगा, जिस तरह में परीक्षा देकर वह अमिस्टेट बना, उसी तरह वह परीक्षा देकर आफिसर भी बन सकता है।

इसीलिए वह दिल्ली आने के ही साथ पूरी तरह से आफिसर ग्रेड की परीक्षा की तैयारी में जुट गया। उसके लिए अब निखिल को दी पछाड़ को बनाये रखने का प्रश्न जो खड़ा हो आया। धीरे-धीरे वह यह भी जान गया था कि अमिस्टेटों से ज्यादा प्रमोशन टेक्निकल लाइन में हुआ करती है। नतीजा यह कि अब उसका सारा दफ्तर व अपने कमरे में भिमत आया था। होटल तो वह खाने की ही मजबूरी में जाता था। हर क्षण हर पल पड़ता रहता था। शायद उसके भाग्य में पड़ना ही था। इन वारे में भाग्य न भी उसका साथ दिया। पहल तो उसे कमरा ऐसा मिला जिसके मालिक ने उसे दूसरा कमरा ढूँढने को नहीं कहा। दूसरे एक बार एक आफिसर की बदौलत वह मिनिस्टर के साथ क्या लगा कि उसके मकान की समस्या हमेशा हमेशा के लिए निपट गयी। बल्कि उससे तो यहाँ तक पूछा गया— वह क्वार्टर कहाँ चाहता है। तभी तो उसे अपना क्वार्टर यहाँ मिला जहाँ से उसकी दिल्ली की जिंदगी शुरू हुई थी। अलबत्ता जब उसे क्वार्टर मिला तब में आसपास के माहौल में अंतर यह हो आया था कि झुगिया अब हट गयी थी। झुगियों के बदले अब उन जगह पर सरोजिनी नगर और चाणक्यपुरी को जोड़ने वाला अडर ग्राउंड पुल बन आया था। चाणक्यपुरी बड़े आफिसरों की जो नगरी थी। उस ओर देखकर वह भी आफिसर बनने व अपने लिया करता था।

चाणक्यपुरी को उसका यही देखना उसके लिए बरदान मानित हुआ। उसकी खुशी का उस क्षण पारावार नहीं था जब पिता को अपने आफिसर

बनने की सूचना देने का उम मुजबसर मिला। अफसर की सीट पर बठन वाल दिन वह फूला नहीं समाया था। इसी खुशी में तो उसने पिता का लिखा था, 'पूजनीय पिताजी आज मुझे अपन जग्गी के लेक्चरर की कई वाते याद जा रही ह। वे अक्सर कहा करत थ, यह ठीक है कि आज क सत्राम में जादमी हर क्षण हर पल यह महसूस करता है जैसे उसका दम अब घुटा तब घुटा। पर यदि वह हिम्मत न हारे तो वह क्या नहीं कर सकता है। मुझे खुशी है कि मैं आज उही लेक्चरर की बदौलत निखिल स पहल अफसर बन आया हू। आज मैं आपका और मातवर चाचा का जाशीर्वाद चाहता हू।

पर उसका यही पत्र उनक लिए प्रश्ना का जबार बन आया। उस क्या पता था उसके पत्र क उत्तर में उमके पिता एसी बात लिखग जिह पढकर वह हिल जायगा। उहान लिखा था

"तुम्हारा पत्र पढकर अत्यंत खुशी हुई है। मातवर भी खुश है। पर पिता के नाते मैं आज तुमसे एक-दो वाते कहना जरूरी समझता हू। मैं आज तुम्हें वह बात भी बताना चाहता हू जिसे मैं अब तक तुमसे छिपाया हुए था। मुझे खतरा जो हो आया है कि तुम निरथक के भ्रम पालकर जाग दुखी हो जाओगे। तुम अभी भी आदमी और जादमी के बीच की दूरी का दूरी समझे हुए हो, जबकि यह सत्य नहीं है। धरती में दो तरह की दूरियां हुआ करती ह। एक वह जो एक स्थान में दूसरे स्थान के बीच की दूरी की तरह दिखाया दे। दूसरी वह जो हो तो अवश्य पर दिखायी न दे। जादमी और आदमी के बीच यही न दिखन वाली दूरी हुआ करती है। आदमी यही पर भूल करता है। वह दिखनवाली दूरी के भ्रम में यह तक समझता नहीं है कि जिस दौरान वह आगे बढ़े हुए आदमी तक की दूरी को पाटन की कोशिश करना है उस दौरान आगे बढ़ा हुआ आदमी भी ता जागे बढ़ेगा। फिर विकास में ता गति और भी उल्टी हो जाती है। अब तुम्हीं सोचा बस मैं मफर करन वाले के लिए जा दूरी दिना की है वही रेल और हवाई जहाज के लिए घटा और मिनटा की दूरी है या नहीं ?

अगर तूने अपन अफसर बनन भर की बात लिखी होती तो बात और थी। तूने जा निखिल की बात लिखा है। वह मेरी समझ में नहीं आती।

उसके दोनों भाइ अच्छी नौकरिया पर ह । माता पिता की भी उस पर
 और उसके भाइया पर जिम्मेवारी नही ह, जबकि तरी ओर हम आठ मुह
 देखन वाल ह । फिर मैं यह भी समझ नही पा रहा हू कि तू हिम्मत किसे
 मानता है । अगर तर को तरी का साथ या उसकी कितारों और कमरा
 नही मिलता तो क्या तू ऐसा लिखन लायक बन पाता ? बेटा, हिम्मत की
 दौड़ वहा म शुरू होती है जहा जिंदा रहने लायक आदमी क पट म हो ।
 वहा नही, जहा आत भूख से सिकुड रही हा वहा नही, जहा बुद्धि
 तो हो, पर पढन को कितारें नही हो । बेटा, म आज तर स अपन दिल की
 बातें कह रहा हू । जिम तरह से आज निखिल की तू बातें कर रहा है इसी
 तरह मैं भी जमाने पहले निखिल के पिता से टक्कर बन की सोचना था ।
 यह मेरे इसी सोच का नतीजा था कि पिता और माता की मृत्यु क बाद
 काइ और उपाय न देख मैं भूखा प्यासा बनारस पहुंचा था । मैंने सुना था
 गरीब बनारस म पढ सकत है । मुझे पता नही था कि बनारस पढकर गरीब
 वेदपाठी ता बन सकत है, पर वह चानी नही जिमे आज की धरती ज्ञानी
 मानती है । आज का युग वह नही है, जिसम मछुआरिन का बेटा वेदव्यास
 बना था । आज तो हम उस यग स भी कोसा आग निकल आय है जिसम
 द्राणाचाय के पुत्र अश्वत्थामा को दूध के बदल आटे मिल पानी को दूध
 समझकर पीना पडा था । इतिहास कहता है कि महाभारत का काल
 भारतीय इतिहास का स्वणयुग था । बेटे, इतिहास म स्वणयुग ऐसे ही हुआ
 करत ह जब राजपुत्रा को युद्ध विद्या मिखाने वाला अपन बेट क लिए दूध
 तब खरीद नही सकता तो वह स्वणयुग कसा ? बेटे, एकलव्य का ता अगूठा
 महाभारत म ही कट गया था, मेर और तर सपना की बात ही और है ।
 हा, बनारस का मुझ पर यह असर जब्ब्य था कि मैं दूसरा का प्रहा का
 थूठा भय दिखाकर तरे लिए काफी कितारों बटार सकता था । पर मैं जब भी
 ऐसा करने की सोचता तब मेरी आखा के सामन मेरी मा का वह चहरा
 खिच आता था जो गोबर की डलिया लिय या ठोकर खाकर मरी थी । तब
 मेरा सोच था कि मेरी मा को उस पत्थर न मारा था जिसस ठोकर खाकर
 वह गिरी थी । आज मैं अहमास करता हू कि मेरी मा पत्थर स ठोकर
 खाकर नही मरी थी । मरी थी इसलिए कि उसन घर पर बचे आट की

आखिरी राटी तीमरी रान स्वयं न गानर मुझे दी थी । इसलिए बट, तर पत्र व कारण आज मैं गमय नहीं पा रहा हूँ कि हिम्मत तरी और मेरी है या उसकी, जिसन तीन राता की भूखी आता के बावजूद गोबर की डलिमा मेरे कारण उठायी थी । इसलिए बटा, दूमरा को ग्रहा का डर दिवान की मोचने के ही क्षण मेरे सामन प्रश्न खडा हो आता था कि यदि एसा डर काई पडित मेरी मा का दिखाता तो मेरी मा क्या करती ? बटा, धरती म ग्रह भी उसी के शात होन है जिसने पास दान करने को होता ह उसक नहीं जिसके पास देन को कुछ नहीं एसा की तो पूजा—पत्थर के आग आसू बहाना भर हुआ करती है । इसलिए बेटा, वस तो तेरी मर्जी, पर मेरी तेरे को सलाह है कि ऐसे ध्रमा का पालना छोड, अब तू आगे की बातें सोच । दुनिया अब हमसे कहन लगी है कि अपन और छोटा के पीछे तरी शादी नहीं कर रहा हूँ ”

सचमुच यही वह पत्र था जिस उसन एक बार नटी दजनो बार पढा । हर बार वह और भी उलझ जाता था । कई बार तो उमे ऐम लगता था जमे उसके भाई-बहन किताबा के लिए रो रहे ह । कई बार लगता था कि उसके भाई-बहन भूखे पट मो रहे हैं । कई बार लगता था, गाव के लोग आपस म बातें कर रह है—थोडे दिनो की बात है, शादी होत ही थाडे भेजेगा वह इनको एमे पैसे । इसलिए वह घर को अधिक-से-अधिक पैसा भेजता । सोचता रहता चाह उस कुवारा ही रहना पडे पर अपने भाई-बहना को अधिक-से-अधिक पढायेगा । उधर अब उमके पिता के कि सुझाये सारे रिश्ता को उसके द्वारा मना करने मे धबरा आये । उह तो उल्टा उस पर यह शक हो गया कि कही यह रिश्ता से बाहर तो शादी करने की नहीं साचे हुए है । इसीलिए अब वे परेशान हो उठे । यह भी उनकी इमी परेशानी का नतीजा था कि उसके खान का बहाना ले उसके पिता उसके पास उसकी चाची को छोड गये । अपनी मा से ज्यादा वह चाची की बातें जो माना करता था ।

चाची के इमी आने ने सचमुच ही कमाल का काम कर दिखाया । कहा तो हरित शादी को किसी कीमत पर तैयार नहीं होता था कहा वही चाची ने बोला ‘अच्छा, यदि तुम मेरी शादी करना ही चाहती हो तो

फला स करा । वह भी ऐसी लडकी से जहा स दहेज मिलने की काई उम्मीद ही न हो ।" जबकि उसकी काजलिदत दख कई ऐमे उसे अपनी लडकी दना चाहत थे जो उसे सोने से मढ दें । और तो और, मुखेश के जीजा जी न तब अपनी लडकी के लिए उसे मकेत दिया था । उन जसे सीनियर आर्द० ए० एस० का दामाद बनना भर उसके लिए काफी था । पर तब हा यह आया कि चाची वं आन पर कई रिश्तदार आने शुरू हो आय । एक इतवार उसकी चाची की चचेरी बहन भी उनके यहा आयी, उसके साथ उसकी बिटिया रेखा थी । तब एकाएक उसन रेखा को क्या दखा कि उसे तो लगा जैसे रेखा उसकी युग युगा से प्रतीक्षा कर रही है । ऊपर से बडी बात यह हो आयी कि उमन नोट किया कि चाची की बहन बीच-बीच म उम तरमती निगाहा से दख रही है । उसे दखत समय अमर उमकी पलके डबडबा आनी है, वल्कि इमी बीच एक धार तो यहा तक हो आया कि उसे दखत समय उनकी डब-डबायी पलका स उछलकर एक आसू उनके बायें गाल स लुडकता उनके परल म एमा गिरा कि उसन तो हरित का बचैन ही कर दिया ।

उमके जाने पर हरित न चाची स महा था 'चाची, तुम्हारी बहन बहन दुखी मालूम हानी है "

"दुखी हो कसे नहीं ? एक तो ना माल पहले इमक माये का सिदूर पुछ आया । दूमर, इमकी दो जवान बटिया और दो छोट लडके ह । वह ता पति की जगह इाफो नौररी मिल गयी, बरना ता जान "

'तब ता इनका दुखी हाना स्वाभाविक है ।' अब हरित न भी चाची को परगना गुरू किया था । मगर तभी उमकी चाची बीच म ही बाली, "धमे बह जिम मतलब म आयी थी मैं ममसती हू । पर ज-छा ही हुआ, बाली कुछ नहीं । एमी ही रह गयी क्या हमार हरी क लिए "

तभी तो हरित अबार्ना चाची को दखता-दखता रह गया था । उमके अनुगार एक विधवा की दूमरी विधवा से हमदर्दी होनी चाहिए थी, जबकि यहां मामला ही अजीब हो आया था । चाची का कास्य 'गिमी ही रह गयी है क्या हमारे हरी के लिए उम बह अउरा था । वन्नि चाची क इम बास्य ने ता उसे उन कई रिग्ना की याँ करा दो थी जिनम मुतेन के आर्द० ए० ए० जीजा की लडकी का रिग्ना तक शामिल था । दूमरी ओर चाची की

उन्हें की आँख में लुब्धा वह आँसू था जिसमें उमें एक तरह में हिना मा दिया था । तभी ता उम क्षण मह स्थिति हा आयी कि हरित का बार-बार चाची की उहन की आँख में लुब्धाता आँसू जहा दिग्ग्हा था, वही धीर धीर ता उम यहा तन लगन लगा जस म्वय रग्गा उमसे कहन लगी हो—

तुम वही हान जो अत्र तक अपन और निद्रिल के बीच की दूरी को खम करन की बाते किया करत थ । अब दिग्ग् रही है न तुम्ह आत्मी जोर आदमी क बीच की दूरी । मुकग क जीजा या उम जम लाग तुम्ह माता और चादी ही नहीं, एसी तरकिया दिला मकन है जिसम तुम कइया का निद्रिल जमी भौकरिया पर रख सकत हो । मरी मा तुम्ह आशोर्वा क जलावा क्या द मवती है ? मेरी मा क पास दन का ही कुछ हाता ता मैं बढमूरत हाते हुए भी खूबमूरत मानो जाती, जबकि मैं आज खूबमूरत हान हुए बन्मूरत हू । दुनिया म लडकी जोर लडका या आदमी और आदमा क बीच की दूरी भिकना के उछाल मर स नाभी जाती है बल्कि सिक्को का इही उछाला क बल पर ता आदमी युग-युग मे धरती म आय दिन खूबमूरतिया की इसानी और इसानियती दूरी को नापना-नापता आ रहा है । बोली, खूबमूरतिया धरती के हाटा म आय तिन बिकती नहीं है ? जहा तक धरती के दिल और दिला की बात है । धरती के दिला ने धरती क दूसरे दिला की घडकना को समझन की कभी कोशिश की ह, अगर धरती के दिल धरती के तूमे दिल को समझने की काशिश करत तो क्या मती का भरी मभा म अपमानित होकर यन्कुड म कूदना पडता ? शादी हा जान भर म क्या धरती की बिटियाआ के मन म माता पिता की याने मर जाती है । कसी अजीब है फेरे होने स पहले और फेरे लगन के बाद के बीच क फामन की यह दुनियावी दूरी ? सती का यही गुनाह था न कि वह फेरे लगन के बाद बिना बुलाय पिता के यज्ञ म शरीक हुई थी । उसका यही गुनाह था न कि उमन विभक्ति वान को वरण किया था । विभूति वाला कहकर दूसर का अपमानित करना सरल है पर उस जहर को पीना सरल नहीं जिसन समुद्र-मथन म निकले नाना रत्ना की खुशी का गमी म बदल डाला था । किसने पिया था समुद्र मथन म निकला वह जहर जा पूरी धरती का भस्मीभूत करने के लिए काफी था ? उसी न पीया था न, जिसे दुनिया न

विभूतिवाला कहकर अपमानित किया था। मिया अस्तित्व की रक्षा स्वयं अमृत पान या अपना-अपना भर का अमृत वाटन में नहीं हुआ करती है। अस्तित्व की रक्षा हुआ करती है दूसरा के लिए जहर पीने में। बोलो क्या मुझे अपनाकर पीओगे तुम जहर ? मैं पावती की तरह तपस्या तो नहीं कर सकती, इतना अवश्य विश्वास दिला सकती हूँ, यदि तुम मुझे अपनाओ तो और चाह मैं कुछ कर सकूँ या नहीं मैं यह कभी नहीं भूल पाऊँगी कि जिम तरह से मेरे भाई-बहन नग्न-अद्ध नग्न हैं उसी तरह तुम्हारे भाई-बहन भी

‘क्या रे, क्या रेखा पसंद है तुम्हें ?’ इस बार चाची ने हरित की मानमिक्ता को थकझोरा था। तभी तो पहले तो वह ठगा-ठगा-सा चाची को दडता देडता रह गया था। फिर एक अजीब भी मानमिक्ता के साथ बाला था, हा चाची ! अगर तुम मेरी शांति करना ही चाहती हो तो

आज निक्की की पटरीवाली बात ने हरित की इन्ही यादा को याद करा दिया था। उमकी तो इन यादा में वे यादे तक शामिल थी जब रेखा से फेर होत समय निखिल मुस्कराया था। स्पष्ट था कि निखिल उससे मक्ता ही मक्ता में कह गया था—आखिर अपनी ही जसी जगह हो रही है न शादी। मुकुल के जीजा की लडकी में शादी न करने का भी तो अपना प्रभाव था। यह भी इस प्रभाव का असर था कि हरित ने बड़े अधिकारिया ने शादी के बाद ही उसे परशान करना शुरू कर दिया था। वह तो हरित का रेखा ने अपने स्वभाव की रेखाओं में समाल लिया, वरना तो उमकी गहस्थी एक तरह से चौपट होने को हो आयी थी। एक तो दफ्तर की परशानी, दूसरा वह किसी को हाथ फैलाते देखता तो घटा मही मोचता रह जाता था—आखिर धरती का यह विधान क्या है, जिमके तहत आदि काल से यही सब होता चला आ रहा है ? क्याकि पिछले पाच छ वर्षों में निखिल ने सिर्फ आउट आफ टन क्वार्टर में चुका था, वरन् दो प्रमोशन लेकर उसे काफी पीछे छोड़ चुका था। हालांकि अडर सेक्रेटरी के पद पर उसका भी नाम था। निखिल के पीछे मुकुल के आई० ए० एस० जीजा जा थे। उनकी बदौलत मुकुल इन दिनों महान वैज्ञानिक बनकर अमेरिका में था। वहीं सता

उसन फॉरेन मेड पटरीवाली रेल निखिल के बट के लिए बयडे प्रजेंट भेजी थी। उसी को तो दख निकी न पटरीवाली रेल की बात हरित से कही थी। बच्चार को क्या पता था कि उसका पिता अडर सेन्ट्रेटरी बनने की एमी प्रतीक्षा कर रहा है, जैसे मिट्टी के तल या डालडा की लाइना म लागा को पडा होना पडता है। वह तो रेखा नौबरी करती थी वरना तो शायद उनके खाने तक के लान पड सकते थे। हरित क चार भाई इन दिना कॉनेज म पड रहे थ। ऊपर से हरित को साले और सालिया की भी ता मदद करनी पडती थी। हालाकि इस सबके बावजूद वह खुश रहा करता था। उसे विश्वास था कि निखिल को फिर जो पछाडेगा। पर निकी की बात ने आज उसे पूरी तरह हिला दिया था। आज तो जय उस चौराहेवाला वह बाबा तक राहत नही दिला पा रहा था जिसक अड्ड नमन रूप को दख वह अपने को अफ्रीकिया के बीच सा पा राहत की सास लिया करता था। शायद इसके पीछे सामन की उम रोड का असर था जो उसके क्वाटर के पाम से शुस्-मी हो एशिया पालि-टकिनक के एक सिर पर खत्म होती थी। निकी की बात ने आज उस उस पुरानी याद को भी ताजा करा दिया था जब उसने और उसके गाव क कई लोग ने निखिल के लिए लायी गयी खिलौना रेल को सबसे पहन दखा था। गाव की एक बुडिया न तो तब उसे ही मचमुच की रेल समझा था। उसन तब भी अवश्य यह सोचा था रेल तो एमी ही होगी पर इसकी पटरिया कंसी हागी? जबकि अब वह सारी घाना का देण और समझ चुका था। क्याकि कई दिना म दनिव खच बचाकर भी आज पटरीवाली रेल के लायक उसक पाम पैसे नही थ

चालमारी माड की चुगी चौकी । इस समय वहा किशोर, उमके पिता व उनके मामान लाने वाल दमदा के अलावा कोई और नहीं था । हाता भी कैसे ? इस समय कुमाऊ रेजीमट के सिपाही चालमारी पर फायरिंग का अभ्यास ता कर नहीं रहे थे, जो वहा आम बढन वाल हर यक्ति व वाहन को बलात वहा रकना पढता । और न इस समय ऐसा समय था कि आन वाला को लेने व जाने वाला का छोडनेवाले लोग जा लगभग हमेशा ही वहा होते थे, इस समय जमा रहत । इस समय तो चौकी पर चौरीसा घट की मस्त ड अपने को बचात पूरा विश्वास है टुक आ सकती कोई जादमी है आत्मा तो न मने ।

मन्ती दिसवरी ठड से

कि कही पिता शायद निर्वाह की इगम भी नर्मी पा ंग तार और नागर न हा जायें । पर ंग तार उहात ंगा कुछ नही किया, वजन इतना भर चहा, 'मधिया इमम ता काम नही तगा । जा ंगीमा निवानन क लिए छिन चीड की गपच्चिया पा म आ ।'

दमदा एकाएक ही झटन क माय उठे तज कदमा म गडन न बायें उम आर चन जिधर दायी आर की झाडिया की अपमा चीड ही चीड क पड थ । शायद तजुबेदार मलाह उह जची थी ।

"क्या अभी ता भौन जल्दी है न ?" दमदा अग आग में रहे थ । प्रश्न भरी जाया स किशोर क पिता को देख रहे थ । चान्द अब उहानि किशोर क टुक क ऊपर रख दी थी । दाता की किटकिटाहट अब उनका धम गयी थी ।

मगर किशोर के पिता थे कि उनकी बात का उत्तर देने के बदल तीखी निगाहा में केवल किशोर को देखत थे । शायद उह इम बात की चिंता थी कि यदि अभी रानीसेत से उनकी ही वम आ जाय ता कही निक्ली चादर यही छूट न जाय ? किशोर पिता के चहरे पर उभरत इन विचारा को ताड गया, फिर उनम तीखी नजरो स एक चार चादर को देखा, ता जगल ही क्षण देखा दमदा की जार । वह भी उस ही देख रहे थे । शायद उनक इन भावा को वह भी ताड गय थे । नमगिक भाव विभावा को ताडन के लिए विश्वविद्यालयीय टिग्रिया का होना तो आवश्यक नही । दमदा बोल, किशोर चादर टुक म रख ले, कही

किशोर न चादर सभाल ली । उसके पिता सतोप की साम लेत बीडी न रहे थे और देखत रहे दमदा की ओर ।

गुटे से अब दिन म बदलना शुरू हो जाया था । चौकी क टौल मुहरिर भी अब लप जला बिस्तर पर लेटे-लट रहा था ।

की बनी होती ता
। तखतो क

बीच की जगह से अदर मिगगट पीता वह साफ दिख रहा था। एक बार टोल मुहरिर ने भी देखा—बाहर जलती आग व उन तीना की ओर। फिर उनकी उपेक्षा-मा करता वह मिगगट की चुम्किया कुछ एसे भरने लगा, जैसे उसने अपने अनुभवों के बल पर अदाजा लगा लिया था कि आमपाम के गाव से कोई, दिन्नी व बग्ली जान वाली साढे छ बजे की बम पकडन के लालच मे जरा जल्दी पहुच गय हाग।

किशोर को दिल्ली वाली ही बस पकडनी थी। अगले दिन उसे दफतर पहुचना था। पहले की जमी बात होती तो रल मे जाकर दूसरे दिन बारह बजे तक वह दफतर जा सकता था मगर इम इमरजेंसी मे तो नहीं, क्योंकि एक महीन पहले पाच-मात मिनट की ही देर होने पर आधे दिन की वह छुट्टी पर रह चुका था जो कि अब सभव नहीं था क्योंकि इस बार उठ होन पर उस तीन दिन की छुट्टिया व कटने का खतरा जो था।

भला सोमवार के दिन छुट्टी हाने पर दूसर शनिवार व इतवार की सरकारी छुट्टी के भी कटन व कानून को वह रोक तो नहीं सकता था। इमीलिए तो वह इतनी जल्दी यहा पहुच गया था। फिर उसके पिता का वह स्वभाव भी तो था तो साढे दस बजे की रेल पकडने मात बजे ही दिल्ली रेलवे स्टेशन पर खडे होने पर भी बेहद देरी का एहसाम कर उस डाट रहे थे कि तुम दिल्ली वाला की लापरवाही का तो भगवान ही मालिक। मोज नाए तो बना डालो आने वाले पचामो साला की। मगर खबर यह नहीं कि दस मील स्टेशन पहुचन म हीं, बस के कारण तीन घट लगे या चार। इतने से पहले ता म पन्ल ही तभी तो वे पाच बजे ही मरोजिनी नगर से चल पडे थे, जब कि आज वे तीन बजे ही गाव से चले थे। शायद उनका स्टेरिस्टिकल अदाजा, गाव से चुगी चौकी व तीन मील ही होन के कारण अनुमानत एक ही था।

अब किशोर के पिता ने एक और बीडी मुलगा ली। इस बार उहोन दमदा की ओर बीडी नहीं बढ़ायी। शायद उह यह विश्वास था कि उहें अभी बीडी की जरूरत नहीं है। इतना ही नहीं, वे दमदा की उपेक्षा म करते टोल मुहरिर को बेवत टक्कवी बाधे देय रहें थे। किशोर ने भी देखा उधर की ही ओर। मगर इम पर चौकी के अदर जलत लप ने उमे

पिछली रात की उस लौ की याद करायी, जिम वह रात भर देखता रहा था। हालांकि पहाड़ी इम धरती पर, किमी भी ऊंची पहाड़ी पर स एगी अनक नमगिक लौआ को रात म देखा जा सकता था, पर उम लौ का विशेष ही महत्व था। एक तो दायित्वा की अपनी सिकुडन व पिता के दायित्वा के फलाय के बीच सब किशोर घुटन अनुभव कर रहा था। दूसरा वह तो सारी रात भर जलती रही थी। पता नहीं मगमीर के लगना के बीच उस घर म किसी की शादी थी या किमी के उठावनी की मातमी या चीथडो व चीथडिया के अभाव म इधर महज सुलभ प्राकृत लडकिया का वह प्रतिफल था। तब करीब एक बजे उमके मन म भी तो उठे थे य ही विचार—जिनके कारण उस यहा कुछ राहत-सी मिली थी। वही, उस याद हो आयी थी उस मौलि लौहार की काली कलूटी अधनग्न सूरत, जिसक वार मे उसने सुना था कि बिस्तर व कपडा के अभाव म सारी सदिया भर उसने धर सागी रात धूनी ही जली रहती है जिसकी याद के कारण इम वार उसन झटके के साथ आग मेंवते दमदा का देखना भी चाहा पर उसकी आखे पिता पर टिकी ही रह गयी। इस वार भी उसे ऐसा लगने लगा जस उसके दायित्वा की सिकुडन की भइ उसके पिता इस समय भी वसे पीटन को उतारू हा आय है जम कल रात

रात तब किशोर व उमक पिता मे हो आय वाद विवाद के कारण दमदा ही थे। दमदा उसका सामान चालमारी माड तक पहुचान की मजदूरी और पाच रुपय कज माग रहे थे। ताकि वह चिलिपानीन म ठाकुरदत्त की दुकान म आय कटाल के खहर को खरीद सके। पर उमके पिता ये कि उमे खहर दिला देने की पूरी जिम्मदारी लत हुए बार-बार काम करन क वाद ही देन पर अडे हुए थे। जब कि दमदा इमके बावजूद कहे जा रहे थे, काका मेरी बात होती ता काई बात नहीं थी। आप लागा के फट-पुराने कपडे ही पहन लता। पर जभागी वहन के बच्चा क लिए दा कपों से नय कपडे नहीं बना सका। पुगन कपडा स ही काम चलाया। पर जब जीतू बडा हो गया ह। पता नहीं किमन उमस क्या कह दिया कि पिछन तीन दिन से नय कपडा की जिद बया करन लगा कि पुशली न तो सुबह से

खाना तक कवा तुम्हारे भरोसे ही चल रहे हैं। पर कद्रोत क कण्ड का क्या पता कि, तुम्हारे गनीलेत से चोटन तक बस भी इमरा भरोसा नहीं कि मुबह दुकान खुलने तक वह रहे भी पाय या

मगर किशार क पिता थे कि आज पिघल नहीं रहे थे। हालाकि उनके बारे में यह प्रसिद्ध था कि मौके पर उहान गाव व डलाफ भर के हर आत्मी की मदद की। अपन पान न हान पर भी दूमरा स तकर, बिना एक पैसा व्याज लिये, उहान लोग का काम किया। पर इस बार दमदा का खर्च दिलाने का आश्वामन ता वे अवश्य दे रहे थ मगर पसा नहीं। जो न ता किशार का ही अच्छा लगा और न उसकी मा का ही। यही तो कारण था कि मा क कहन पर किशोर न दमदा की जोर जाऊ दाय क्या उदाये थ कि यम उसके पिता ता उस पर फूट से ही पडे, किशार तुमने मेर जीत जी मर से आग वढन की यह हिम्मत कसे की।

' पिता जी इस अधिक कुछ कहन की वह हिम्मत नहीं कर पाया। करता भी कसे? क्याकि एक तो वह उनके काध स परिचित था। उह पहन ना बडी-बडी बानो पर भी गुस्सा नहीं जाता है और यदि आ जाता है ता फिर वे अवे ही हो जात ह। और दूमरा वह जहा काध म नान-पील हो आय थ वही, बाल ही चने जा रहे थे 'किशार। जगर तुम्हारे इस दुस्माहम म भला वाला अश नहीं होता तो मैं तुम्ह इस समय भी मने ही पीट देता जैन। तुम अभी वच्चे हो। तुनियादारी का तुम्ह प्रश्न उग भी पता नहीं। और न इस मूल दमुआ को परिस्थिति ना पता है। इन्की पमे देने का लाभ भी क्या? लाभ इसलिए नहीं कि, उसम उग क उगज जमा कोई अवगुण है बल्कि इसलिए कि ठुगिया की उगज का उगज के कपडे की लाइन में इसका खडा हाना, गुमानिया उग, उगज उगज पाम वह पसे रहन देगा? एक ता इमन उगज उगज उगज, उगज उगज का उधार देना है। दूमरा यदि यह कद्रोत का उगज उगज, उगज उगज वरमा का पुराना व रही काना उगज उगज उगज उगज उगज ही तो बगल म ही है। किशार हिम्मत उगज उगज उगज उगज उगज उगज उगज उगज पहले एक दिन ठुगिया, उगज उगज उगज उगज उगज उगज उगज उगज जोर, गुमानिया न उगज उगज उगज उगज उगज उगज उगज उगज

हालाकि इस बात को सुन मुझे इतना मदमा पटुचा कि इसके वे ही सोलह रुपय गुमानिया मे नत हुए बाद म मैं उससे कहा था कि पचीस-तीस रुपय माहवार इस जा भी चीज चाहिए दे देना। पहल तो यही दे देगा और यदि न दे सके ता मुझसे ले लना। पर उसका मुझे जरा भी भरोसा

तब किशोर व उसकी मा की समझ म आया था कि वे उस पस क्या नहीं पकडा रहे थे। वे ता अलग स्वय दमदा तक समय चुके थ। दमदा को ता तब व क्षण याद हो आय थे—जब वे उस दिन बेहद उदास स अपन चाप म बठे यह सोच रहे थे कि जब वह बहन को मुह किस तरह दिखायगा। क्योंकि उन सोलह रुपया मे ग्यारह तो उसी क थे। तभी मामन एकाएक किशोर के पिता को आया देख व उनक हाथ म ठीक एक धोती व पाच गज खदर देख वे जहा भौचक्क रह गय थे वही वे उनक पावा म गिर पडे थे। भला गरीब दुनिया मे कभी जकतज रहा है।

मगर अब इस समझ का क्या लाभ? अब तो वे किशोर का डाटत-फटकारत ही घा आ रहे थे इसकी आर आठ रुपय बढ़ाने को ता बडे तयार हा। एन अपनी बहन के लिए मन पमद बनियान पद्रह दिन से नहीं खरीद सक। यह तो बहुत आगे की बात है तुझसे तो अपन ही बच्चा के लिए स्वेटर नहीं बन पात। पिछल वरम देहली जाया ता देखा—तीनो म स एक क भी पास न ता इधर उधर जान के लिए अच्छे कपडे थे और न स्वेटर ही। पूर साडे चार सौ खच कर बनवा आया था मैं। वस तुम सरकारी दफतर मे असिस्टेंट हुए। आग लग तुम्हारी अमिस्टटा का। जरा मरी आर देखो, तीन भाइया सहित पाच तुमका, जिसन जितना पढा, पढाया शादिया कर तुम लोगा का जादमी ही नहीं बनवाया बच दाना का जब भी पढा रहा है। और एक

तब मा क बीच-बचाव करन पर ही वह चुप हुए थे। पर चुप हात समय ता व किशोर व दाया-बा क सिनुडन की भद्र पीटन क बीच यहा तक कह गय तुमस तो दमुआ ही भला, कम-न-कम अपनी बगहारा बाल-विधवा बहन व उमक दा बच्चा को पाल ता रहा है। इसक अधपगतपन के वारण पहल इन्की शादी नहीं हुई। तब का भी इस सठकी देन का

तैयार नहीं था, पर अब उसे कई लडकी देने को तैयार ह। मगर वह कि अब तयार नहीं। कहता ह, "बहन व उनसे बच्चे। एक तुम हो तुम तो क्या तुम्हारे जमाने के सभी लोग जो पसो के कारण पिता का पिता, माता को माता तथा बहन का बहन भी मानन को तयार नहीं। अपना पट तो युत्ता भी "

तब तब उसका माथा झनझना ही नहीं उठा था, बल्कि उमे तो यहा तक लगन लगा था कि जैसे वह कैंशियर से तनखा लेता रहा है पर मकान के किराय, नून-तेल आदि के बिल की कल्पना कर सोचता-भोचता जला जा रहा है पिछले महीने ता बच्चा के कपड़े व स्वेटर नहीं बना पाया। इस बार देन वाला को दे या इतना माद आना था कि उसे यहा तक लगन लगा कि उसके पिता व दमदा तो अलग, उनक ही जस दुनिया भर के लोग उसकी स्थिति देख खिलखिलाकर एक जोर ता ह्रम रहे ह। दूसरी ओर वह स्वय साच की एक एसी स्थिति म पहुच गया है कि जैम किमी एव महामारी न उमक हाथ-पाव, नाक-बान मुह आदि सब ही का निष्प्रिय-भा कर दिया है। केवल उसका दिमाग और उसकी आँखें ही प्रियाशोन ह। दिल दिल भी एमा, जा अय अगा की निष्प्रियता म दुखी तो ह मगर रो तक नहीं पा रहा है। दिमाग क बीच माता पिता, भाई-बहन आदि सभी की एसी तडफ व छटपटाहट कि उम तडफ व छटपटाहट की बजह स अध विक्षिप्तता का एहमाग ता कर रहा है मगर विवर्तावश उस भी नवारन के कारण वह अपन स्वय व अस्तित्व व प्रति तय चितित है। और आँखें जो घन अधेर व बावजूद अदर वात कमर म नटी बहन अचना व चेहर पर व्यक्त हात चन जा रहे भाव व मना विचारा को साफ देख ता रहा है। मगर उमक नेहर पर चढन उत्तरत भावा का अध, अपनी बाल्यनिवना व बल पर गह रहा है कि वह लगानार यही कही चला जा रही है—भया, तुम मरे स्वेटर की चिन्ता नहीं करना। बकिता, पिभा व नीटू के लिए ड्रेस व स्वेटर जरूर बना जना। क्याकि ड्रेस व अभाव म सैन अपनी कई सुहृदिया का मित्रने देगा है।

भया

जब झुटपुटा दिन में बदल जाया था। और तो जोर सुदूर उत्तर की ओर की वर्षौली पहाड़िया तक साफ दिखन लगी थी। अब टोल मुहँरिने ने भी चौकी के दरवाजे आधे पाल दिये थे। मगर न ता अब भी, किशोर के पिता ही उसमें कुछ बोल रहे थे और न वह ही। शायद पिछली रात के वाकिय के कारण दाना कुछ देर और पश्चात्ताप करना चाहत थे। तभी एकाएक दमदा उठे। हडबडाय से बोल "कका, यह क्या? जल्दी करो यम

अब देखली वाली ही बस सामन खडी थी। दमदा उसमें उसका सामान चढा चुके थे और वे दोनों इस बार की विदाई की आखिरी रस्म अदा करन के बावजूद बेबल आखा-ही-आखा में बातें कर रहे थे कुछ-कुछ ऐसे जैसे

००० डेलीवेजर

उसन घबराते घबराते कमरे म पाव रखा ही था कि हरान रह गयी । सोलह-सत्रह आदमिया वाले सेक्शन म आज एक भी आदमी नहीं था ? उसे मदेह हुआ कि कही आज छुट्टी तो नहीं ? पर अपन कमरे के खुले हीन से उमन अनुमान लगाया—नहीं, ऐसा नहीं यदि ऐसा होता तो दरवाजे खुलत ही नहीं ? फिर एकाएक उस एक खयाल आया—कही कोई महान नता या कौइ ऐसा बडा आदमी स्वग को प्यारा तो नहीं हा आया, जिसके कारण दफ्तरी के बढ होन का ऐलान मजदूरन आकाशवाणी को करना पडा हो ? मगर कमरे की एक एक सीट को देखते ही उमे लगा कि यह बान भी गलत है । सेक्शन आफिसर दासगुप्ता का अटेंची-बेश करीन से रैक पर रखा था । जुनेजा, भवर्सिंह आदि कट्ट्या के बग हमेशा की तरह पडे थे । लगभग कइ मेजा पर खुली-अधखुली पाइलें प्रमाणित कर रही थी कि ऐसी बात जरा भी नहीं ! बल्कि य सब बातें तो मूक भापा म कुछ ऐमा जनला रही थी, जम कमरे के मागे-ब-सारे लाग कही इधर उधर गय हैं ? हा प्रश्न यह था कि ऐसी क्या बात हो आयी जा सेक्शन क लाग एक साथ कम, क्या चले गय ?

इही विचारा क बीच एक बार अस्मिता के मन म भी विचार जाया कि अपना पस नाट पर रख वह स्वय ब्राहर चली जाय । न्मे—मामला क्या है ? कितु तभी उसे खयाल आया—वह डेलीवेजर है । फिर आज का दिन ता यह काप उठी । घबराकर हाउ ही-होउ म बुदबुतना मीधे अपनी सीट की आर जात-जान उमन साचा—उा के सब सुविधाए कहा जा औरा को उपलब्ध ह ।

बड़े बबूतर एक बच्चे बबूतर को उड़ना सिखात, उसकी रक्षा करन म तत्पर थ। ऐसा उमन शायद इस बार नहीं, अनेक बार देखा था। मगर इस बार के देखने न उसक मन भस्तिष्क को ही झक्झार डाला।

अब उसके लिए मीठ पर बैठा रहना भी कठिन हो गया। सामन दो बड़े बबूतरा और बच्चे बबूतर न उम कमरे के अंदर बंद असहाय ब वेवस अपने रोहित और भरत की याद ताजा करा दी। वैसे यह बात भी कदापि नहीं थी कि वह अपने दोना बच्चा को आज ही कमरे में बंद करके आयी थी। ऐसा ता उस पिछले तीन साल से हर रोज करना पडता था। उसकी पलकें डबडबा आयी। एकाएक उसे ऐसे लगने लगा, जैसे उसकी जिंदगी परिदा में भी बदतर है। परिदे जत्र मर्जी दाना चुगन निकल मकत है जब मर्जी लौट आन ह, जबकि उम अपने आठ वर्षीय गहित और पाच वर्षीय भरत को भगवान की रहम पर कमर म ताला लगा छाडना पडता है। अडोसी-पडासी भी तो तभी काम आते ह, जबकि उह भरोसा हो कि अगला भी कभी उनके काम जा मकता ह। फिर उमका इतना वेतन भी नहीं था जा वह उह उन शिशु-कद्रा म छाड मके जहा आज ब जमान म नौकरी-पेशा दपति बच्चा का छोड जपनी-जपनी नौकरिया पर जाया करत ह। उसका माया झनझना उठा। पर तभी मामन रबी फाइल देख उस कुछ राहत-सी मिली। लगा, जैसे उमकी मेज पर टाइपिंग क लिए रखी फाइल नहीं, बल्कि प्रत्यक फाइल के दान ह, जिह चुग चुगकर उम जमा करना है। इतना साचना ही था कि उसन बड़े ही जतन से तीन चार फाइला को उठा लिया। फिर एक दो फाइला को ता उमन अपन माथ पर चिपका-सा दिया। वह भी कुछ ऐम जम कहनना चाहती हा—परमात्मा, तूने मुझम मेरे माथे का मुहाग भले ही छीन लिया, मगर ।

इसके बाद ता वह बिजली का-सी फूर्ति के साथ एक ब बाद एक पत्र टाइप करने लगी। इसी जतदबाजी म वह पाच पत्रा का टाइप कर गयी— मगर तब तक भी सक्शन क लोग नहीं लौटे। औरो की अनुपस्थिति की बात किसी और दिन की होती तो शायद उस थोडा बहुत अथस्ता। पर

आज उमन लिए यही बात मुख्य थी। आज राहिन के बुधारे के कारण उम दर हा गयी थी। उम डाक्टर के पास जाना जा पडा था ? लागी की अनुपस्थिति के कारण ही उमका आज पंद्रह-बीस मिनट वाक आना छि गया था। वरना ता किमी के भी दर म आन पर, एक-दूसरे पर फजिया वगैर म माहिर उमन माथी उम भी छेडन म जहा चूबन नहीं, वही हाजिरी लगान बूढे दासगुप्ता की भाडी छन्दानी नी उस गुननी पडती। लागी की अनुपस्थिति का फायदा उठा उमन आज पहली बार रजिस्टर म समय भी सवा दस ही भर दिया था। यही बात थी कि अत्र वह पूर मनोयोग से टिक टिक टाइप कुछ एम करन लगी, जस उसन अन्त ही अया की अनुपस्थिति को छिदान का निश्चय कर डाला हो। जल्नी-जल्नी म वह आठ लेटर और टाइप कर चुकी। अलवत्ता रोहित भरत की याद आन पर वह थोडी कसमसाई थी। फिर अपनी असलियत की याद आन पर वह अपन नय माहौल म पूरी तरह डूब-सी गयी थी। यह बात था कि वह एक एक कर दस पत्र टाइप कर गयी। हा ग्यारहवा टाइप कर रही थी कि एकाएक सक्शन के सार लाग आ धमने ? उमे टाइप करत देख सक्शन आफिमर दासगुप्ता झल्लाव, अर तुम जरा देखो तो बाहर ।'

—जाज ता भाई हद हो गयी ? सुबह ही-सुबह आई० सी० पी० की नयी बिल्डिंग से छलाग लगाकर एक डेलीवेजर न जातमहत्या कर ली ? जुनेजा का स्वर था।

—चेचारे का उम स्थिति म नौकरी म हटाया गया था, जबकि वह अभागा अपन पहले बच्चे के होने की खुशी भी मना नहीं पाया था। अजीब है यह दुनिया !—ग्रह स्वर रावत का था।

—अब कसे जीयेगी वह बचारी अतन तीन दिन के बच्चे को छाती से चिपकाये ?—मिस्टर मदान बोल।

—बचारा सात माल से डेलीवेजर था ।—जुनेजा का गला भर-सा जाया था।

वसे भी यह सारा समाचार इतना करण था कि स्त्रय करुणा तक का दहला द ? फिर अस्मिता के लिए ता इमन एक नया ही संकेत दे डाला। उसे तीन दिन पहले के वेक्षण याद हो जाये जब उमे एकाएक ही उम बडे

अधिकारी न बुलाया—जिमके बारे में मारे दफ्तर में यह बात प्रचलित थी कि वह महिला कमचारियों का अपनी बदनीयती के कारण बुलाया करता है। पढ़ने ता यह बातें केवल कुछ को ही मालूम थी। पर आभा वाली घटना ने ता दफ्तर के सभी लोग का उसकी हरकत से अवगत करा दिया था। उसने जहां उमके खिलाफ लिखकर शिकायत की थी, वही उसने यूनिशन का साथ ले पूरे दस पंद्रह दिन में गेट पर उसके खिलाफ नारे लगवा दिए थे। वह दूसरी बात थी कि बना बनाया कुछ नहीं। क्योंकि एक दूसरे की मददगार अपसरशाही अपने एक साथी का अपमान करते सह पानी। हा, आभा वाली घटना का एक मनावचानिक अमर यह जरूर पड़ा कि बड़े अधिकारी न महिला कमचारियों को बुलाना छोड़ दिया था। मगर वही बुलाना उसके लिए सिरदद बन आया। एक तो उसके 'क्लीग' आखा के इशारे में अपने आपमें कुछ ऐम इशारे करने लगे, जैसे कहना चाहते हैं कि अब तक यह बड़ी मच्चरिज बनी रहती थी देखें अब ! फिर दूसरे उन क्षणा की एक अजीब विडवना यह थी कि वह उन क्षणा में अपने माथे के सुहाग के पुछने की चौथी वपगाठ के कारण जी भरकर राना चाहती थी। ठीक ऐम ही क्षणा में उसे बड़े अधिकारी के पास अनिच्छा के दाबजूद खड़ा होना पड़ा था। मजबूरी का नाम ही नौकरी है शायद। तब अपसर ने उमकी सारी स्थिति स जानकारी हासिल की थी। उस स्यायी करने का आश्वामन दिया था। साथ ही मिलते रहने की सलाह दते समय उम भूखी अधभूखी नजरा न घूरा था। तब वह अदर ही अदर इतनी अधिक काप उठी थी कि इमरे बात में इतना दिन अपन जिगर के टुकड़े रोहित और भरते भार-म लगने लग थे। ठीक ऐमी मन स्थिति के बीच अपने साथी की आत्महत्या वाली बात न उस दहला दिया था। फिर इम समाचार न तो उम यह सबत-सा भी द डाला था कि यदि वह उस बड़े अधिकारी से मिलती नहीं रहती तो ।

—अजीब जमाना आ गया चपरासिया और बलकों की ता भरती बंद। डेलीवजरो की दफ्तरा में बात ?—भयाना के स्वी में एकद एमी की-मी छपटाहट थी—ऊपर की पोस्टों पर तो कोई पोस्टी नहीं। पाबंदी मिफ ।

—भाई, मरकारें ता बदलती आयी मगर इन वचारा का भाग्य नही बदला शायद ।—चुहलवाजी म माहिर् भवरसिंह वाला । पर इस बार उमके स्वर म अजीब-सी खीज थी—हूँ हूँ जाठ आठ, नौ-नौ साल स डेलीवजर न डेलीवजर ।

— डेलीवजर शब्द ना शाब्दिक अथ तो हाता है वे मजदूर जग राज की मजदूरी गज बसूल कर जात ह—यह स्वर उस भीमदानी का था, जिम लोग अनुवादक 'महोदय' कहकर चिदान थ । क्याकि वचारा बर्षों म पारिभाषिक शब्दावली रटत रटत अनुवादक नही बन पाया था ?

—भाषा विज्ञानी भीमदानी साहब मस्टड रोल का शाब्दिक अथ क्या हाता ह चडाक क स्वर म 'यूनियन'न था । फिर वह बोला—इसका अथ मरसा क तल निकालने के तरीके म ता नही ?

—भाई तुम्हार सायिशा के डर स ता निकालने वाल बेचार आज दफतर म भाग गय । मगर अब हाथ हाथ' क नारा से बह तो जिदा नहा हा सक्ता—भला भवरसिंह अपनी चुहलवाजी की आदत से बाज कहा आता ?

—क्या अस्मिता जी, आप भी तो बोलिए कुछ ?—सेक्शन ऑफिसर दामगुप्ता के स्वर म कुछ ऐसे भाव थे, जमे अस्मिता पर अपना प्रभाव जमाने का उचित अवसर इस समय वह गवाना नही चाहता हा—यह ता आपने लिए जातीय मामला है ?

मगर अस्मिता बोल तो बोले क्या ? वह तो इस बीच अपनी वास्तविक अस्मिता को पहचानने की उधेडबुन म पूरी तरह खो चुकी थी । वह ता अपनी अमलियत बहुत पहले से जानने क कारण उससे झूझने लगी थी । राजीव स काट मरेज करन के साथ ही दोना के ही माता पिता उनसे नाराज हो आय थे अपने दुर्भाग्य के कारण शादी के सात-आठ साल बाद ही अचानक उमक माथ का मुहाग पुछ आया था तब एक दो लोगा न ता उम पर उमी क्षण से डोरे डालन शुरू कर लिय थ, जब राजीव की अर्धी मज रही थी फिर वह धीरे धीरे यह भी अच्छी तरह अनुभव करने लगी थी कि अपनी अस्मिता को बचाने के लिए उसे पग-पग पर कितना झूझना पड रहा है बल्कि अब तो पग-पग पर आने वाली बठिनाइया से तग आ वह

स्वयं ऐसे माथी को खोज रही थी जो उमके शरीर के दो टुकड़ा को भी छानी से लगा ले जबकि परिवेश उसे ना निगल जाना चाहता था, मगर उमके बच्चो से हर हृद तक परहज चाहता था ।

य ही बाते थी कि उसे मजदूरन ही मही, नौकरी करनी पड रही थी । क्योकि इसके बल पर वह अपन बच्चा वं जीवन का सभालने का सपना जहा मजा पा रही थी, वही अपन नये साथी की खोज मध्य धरत पा रही थी । यह दूसरी बात थी कि जामनगर हाउस के पुरान हटमटा से सामन दिखन वाले आई० सी० पी० के नय मचन को देख वह कई बार कसमसा उठती थी । हमेशा केवल यही सोचती—क्या सामने की यह बिल्डिंग उन जसा के लिए ही है जा अच्छे खासे किस्म के फूल जमा के फल थोली म लिय पैदा होत ह या उन-जैसा के लिए भी—जिनके बच्चा को पढन की उम्र मे या ता कडकती धूप के दिना पेड की छाया मे ही अपनी मजदूरिन मा को देख सतोप करना पडता है या फिर दो जून पट भरन के लिए मा-बाप का हाथ जुटाना पडता है । पर आज तो उसे उधर देखन की कल्पना भर से धबराहट हो आ रही थी । सेक्शन के लोग उमे बलान बहम मे घसीटना चाहत थे । मगर वह चुप थी । हा, मन-ही-मन माच रही थी कि कह—चिंता न करो । बहुत जल्दी अब ऐसा समय आने वाला है, जब प्राइवेट फर्मों म ता हाग रेगुलर रोल पर आदमी सरकारी दफ्तरा म नीचे हाग सिफ डेलीवेजर । क्योकि दिन पर दिन हो रहे विकास के कारण ऊपर वालो के बच्चा की तादाद अब इतनी अधिक हो गयी ह कि उहे ही खपाना कठिन हो रहा है । इमीलिंगय नयी-नयी स्क्रीम या तरकीबें चालू की जा रही ह । पर वह फिर भी बोल कुछ भी नहीं पायी । केवल फटी फटी आखा से देखती रही सेक्शन को । एकाएक उमकी आखे टाइप-राइटर पर चडे डी० ओ० फाम पर सिमट आयी । डी० ओ० फाम पर अशोक चिह्न के नीचे छप 'सत्यमेव जयते' को देख उसन कुछ राहत की-सी सास ली । तभी एकाएक उस लगा, जसे उस चिह्न के नीचे लाखो-करोडा लोग थद्धानत खडे हैं । उनके अग प्रत्यग म कुछ एमा विश्वास है कि जैसे व मोच रहे हो—जब एव बार इस चिह्न को माथी कर हमने

—भाइ, मरकारें ता बदलती जायीं मगर इन बचारा का भाग्य नही बदला शापद ।—चुहलबाजी म माहिर भवरसिंह वाला । पर इस बार उसक स्वर म अजीब-सी गोज थी—हूँ हूँ आठ आठ नौ-नौ साल म डेनीवजर न डेलीवजर ।

—डेनीवजर शब्द का शाब्दिक अर्थ ता होता है व मजदूर जा राज की मजदूरी गज बगूल कर जीत है—यह स्वर उस भीमदानी का था, जिस लाग अनुवादक महोदय' बट्टकर चिढ़ान थ । क्याकि बचारा वर्षों म पारिभाषिक शब्दावती रटत रटत अनुवाचक नही बन पाया था ?

—भापा विनानी भीमदानी साह्य मस्टड रोल का शाब्दिक अर्थ क्या हाता ह, चडोक व स्वर म यूनियनपन' था । फिर वह बोला—इसका अर्थ मरसा व तल निकालन के तरीक म ता नही ?

—भाई तुम्हार सायिया के डर म ता निकालन वाल बेचारे आज त्पनर म भाग गय । मगर अब हाय हाय' व नारा स वह तो जिंदा नहा हो सकता—भला भवरसिंह अपनी चुहलबाजी की आदत से वाज बहा आता ?

—क्या अस्मिता जी, आप भी ता बोलिए कुछ ?—सबशन आफिसर दासगुप्ता के स्वर म कुछ ऐस भाव थे, जस अस्मिता पर अपना प्रभाव जमाने का उचित अवसर इस समय वह गवाना नही चाहता हो—यह ता आपके लिए जातीय मामला है ?

मगर अस्मिता बोले तो बोले क्या ? वह ता इस बीच अपनी वास्तविक अस्मिता को पहचानने की उधेडबुन म पूरी तरह छो चुकी थी । वह ता अपनी असलियत बट्टत पहचने से जानने के कारण उससे जूझन लगी थी । राजीव से कोट मरज करने के साथ ही दोना के ही माता पिता उनसे नाराज हा आये थे अपन दुर्भाग्य के कारण शादी के सात-आठ साल बाद ही अचानक उसक माथे का मुहाग पुछ आया था तब एक दो लोगान तो उस पर उसी क्षण से डोरे डालन शुरु कर दिय थ, जब राजीव की अर्थी सज रही थी फिर वह धीरे धीरे यह भी अच्छी तरह अनुभव करने लगी थी कि अपनी अस्मिता को बचाने के लिए उसे पग-पग पर कितना जूझना पड रहा है बल्कि अब ता पग-पग पर जान वाली कठिनाइया से तग आ वह

स्वयं ऐसे सायी का खोज रही थी जो उसके शरीर के दो टुकड़ा को भी छाननी से लगा ल। जबकि परिवेश उमे तो निगल जाना चाहता था, मगर उमके बच्चा से हर हद तक परहज चाहता था।

य ही बात थी कि उसे मजबूरत ही मही, नौकरी करनी पड रही थी। क्याकि इसके बल पर वह अपन बच्चा के जीवन को सभालने का सपना जहा सजा पा रही थी, वही अपन नय मायी की खाज म धय बरत पा ग्ही थी। यह दूमरी बात थी कि जामनगर हाउस के पुरान हटमटा से सामन दिखने वाल आई० सी० पी० के नय भवन को देख वह कई वार कसमसा उठती थी। हमेशा केवल यही साचती—क्या सामन की यह विटिडग उन जैसा के लिए ही है जो अच्छे-खासे किस्म के पूव-जमा के फल थोली म लिय पैदा होते है या उन-जसा के लिए भी—जिनके बच्चा को पढने की उन्न म था तो कडकती धूप के दिना पड की छाया मे ही अपनी मजदूरिन मा को देख सतोप करना पडता है या फिर दो जून पेट भरने के लिए मा-बाप का हाथ जुटाना पडता है। पर आज तो उसे उधर देखने की कल्पना भर से घबराहट हो आ रही थी। सेक्शन के लोग उमे बलान बहस म घसीटना चाहत थे। मगर वह चुप थी। हा, मन-ही-मन सोच रही थी कि कह—चिंता न करो। बहुत जल्दी अब ऐसा समय आन वाला है जब पाद्रवट फर्मों म तो हागे रेगुलर रोल पर आदमी मरवारी दफतरा म नीचे हाग सिफ डेलीवेजर। क्याकि दिन पर दिन हो रहे विकाम के कारण ऊपर वालो के बच्चा की तादाद अब इतनी अधिक हो गयी है कि उह ही खपाना कठिन हो रहा है। इसीलिए नयी-नयी स्कीम या तरकीबें चालू की जा रही ह। पर वह फिर भी बाल कुछ भी नहीं पायी। केवल फटी-फटी आखो से देखती रही सेक्शन को। एकाएक उसकी आखे टाइप-राइटर पर चडे डी० ओ० फाम पर सिमट आयी। डी० ओ० फाम पर अशाक चिह्न के नीचे छप 'सत्यमेव जयते' का देख उसने कुछ राहत की-सी सास ली। तभी एकाएक उसे लगा, जैसे उस चिह्न के नीचे लाखों-करोडा लोग श्रदानत खडे ह। उनके जग प्रत्यग म कुछ ऐसा विश्वास है कि जमे के सोच रहे हो—जब एक बार इस चिह्न को साक्षी कर हमने

यह प्रतीक्षा की है कि हम हम धरती पर गमना, प्राणहीन तथा ममान अवगण या गमाज की मरलना मात्रा करे ही हम लो ता फिर

—हद है छह दिन क बाद गावें दिन क पगाव क इन वाला फाटरी फस्ट ता यहा नागू नहीं हुआ ?—चन्क अत्र अपन पूर 'यूनि यनपन पर उतर आया था—हा, तीन महीन बाद ब्रेक वाला फाटरी तरकीब यहा भी चन पडी

—मजा यह है कि तश म छापी गारी बुराइया का दाप व्यापारिया क गन मड दिया जाना ह ।—धार्मिक विचारा वाल नायर का भी उचित अवगण गा मिल आया—ऊपर स बातें गरीबा की भलाइ की ।

पर अस्मिता अत्र भी मौन थी । अनुभाग की बाता न उमक राम-रोम का कपा दिया था । सवशन क लाग अब पूरी तरह से डेलीवजर और उनकी समस्याआ पर फस व्हस कर रह थ, जैसे पूरी ससद इसी कमरे म सिमट जायी हो । इतना ही नहीं, कई लाग तो आत्महत्या करने वाल की पत्नी और उमके तीन दिन के जभाग वच्च तक की बात करन लग थ । मगर अस्मिता कवल गुमसुम-सी बठी थी । अत्र ता उस यह भी याद हो जाया था कि आज का दिन ता वह दिन है जबकि थोडी दर बाद उस पिछन कई बारा की तरह प्रशासन विभाग म बुलाया जाना है । वहा खडे हाकर बिना किमी लिखित के उस लयी चौडी हिदायत भर सुननी है—कल से नियमानुमार दा-तीन दिन के लिए उमकी मविस को ब्रेक दिया जा रहा ह बिना किमी प्रतिवाद क उम सरकारी दफतर के अदर आ सकन के अधिकार वाला पाम लौटाना है इन हिदायतो की जवहलना का सीजा जथ होगा नौकरी से पूरी तरह निकाला जाना, आदि-आदि । तभी तो वह बाता म शरीफ वहा म हाती । सहमी-सठमी बीच-बीच म जहा दरवाजा की जार दखती थी । वही उम बडे अधिकारी के मिलत रहन की बात याद हो आती थी

●●● शिकायत

एफ़र स आकर दिग्विजय न अभी जूते भी नहीं उतारे थे कि उसका राहुल उसके पास आकर खड़ा हो आया। कभी वह टुकुर टुकुर पिता को देख रहा था ना कभी गमाद म खड़ी अपनी मा तथा दीदी को। स्पष्ट था वह आज किसी-न किसी की फिर शिकायत करने वाला है। बचारे को अभी इतनी समझ नहीं हा आयी है कि घर म पाव रखत ही शिकायत नहीं करत। सबसे छोटा जा है। पहले-पहल उसकी शिकायतें यह भर हाती थीं—आज बड़े न आज छोट न आज मा न उस नाहक मारा है। पर अब उसकी शिकायत बसी हो आयी है जिनके साथ जुड़ती शिकायतों के कारण घर म अक्सर लंबी चौड़ी बहाना-मुनी हा आती है। दिग्विजय ऐसी ही बहाना-मुनी स तो तग था। फिर आज तो वह ऐसी बहाना-मुनी स बिल्कुल बचना चाहता था। आज उसन फैमला जो कर रखा था—कल महगाई-भते की बिश्ना के जा पम मिले थ उनम वह बच्चा व एक साथ पैटें आदि घोरोदगा। ताकि कुछ ता घर म शांति रहे। इसीलिए उनन राहुन के सड़े हान को अनजो कर दो। पर रत्ना थी कि तभी एवाएव ही बाल उठी— गढ़ चल इधर आ। अब एक दिन इसकी टाग तोड़नी पड़ेगी। देखो

—इसकी क्या तोड़ेगी—ताड उसकी तिसन ।—बड़े को रत्ना स रिद थी।

बचारा राहुल बहाने अपनी बात कहता। घबराकर रसाई व पास पराम म गड़ा हो गया। मगर राहुल व छोटे होन तथा घर के बातालापो का नाराजा था कि दिग्विजय घबरा उठा। उस यह अदाजा लगान में जरा नो दर नहीं लगी कि आज जम्बर कुछ-न-कुछ मुमीबन का पहाड टूट आया

है। पिछले कई दिना म एमा ही ता हो रहा था। कई बार तो छोटी छाटा सी बात इतनी सगीन हो जाती है कि दिग्विजय का दम ही घुट जाता था। वह तो इन दिना अवमर यही सोचता था—क्या कभी उस इम माहोल स मुक्ति भी मिल पायगी ?कल भी ता एसा ही हुआ था। वह चाहता था पटन वच्चा का कपडे बनाय। वच्चे चाहत ये पहले वह अपनी पैट बनायें। इसीलिए चाहत हुए भी कल कुछ नहीं हा पाया था। हा, सुबह वच्चा क कपडा पर फँसला हुआ था। वह भी अब नया मोड बन लगा था। इमीलिए पहले तो वह टालन का मा अभिनय कर सोफे पर बैठा रहा। फिर एनाएक उठ घर की चीजा तथा परिवार के लागा को दखन लगा।

और तो उस घर म सभी कुछ सामाय लगा। असामाय लगा तो केवल रत्नेश। वह घवराया घवराया-मा दाती के पास तखतपोश पर बठा था। शायद वह दादी के उस माने की प्रतिभूति बन आया था जा इन दिना वह अक्सर गुनगुनाया करती थी। दिग्विजय का मा के इम गान म शिड थी। घासकर तब जब बतन मलत वे कहा करती थीं—करम गति बलवाना, जिना भोगा नहीं जाता वैसे रत्नेश के हाथ म इस समय किताय थी। पर वह कभी टुकुर टुकुर मा को देख रहा था कभी उस दीती को जिनन टाण ताडनी पडेगी कहा था। उसका चेहरा उतरा हुआ था। जस कि वह अपन को पड सवने वाली सभावित मार भर म अदर ही-अदर काप रहा हो। इसीलिए दिग्विजय एक भूने शेर की तरह उमी पर गरजा—क्या तूपान मचाया है रे तूने मेरे खयाल मे तून ही

—उमन क्या मचाया है। वह ता आपन खुद मचा रखा है।—यह उमकी यशोधरा थी—तुम्ही जो वच्चा को दखत हात ता मेरे वच्चे एम थोड ही विगटन। एम नवर थोडे ही उनके आन। इतनी लापरवाही थोडे ही होती जो कल खरीती किताय आज ही

—अच्छा अज ममझा कि हजरत किताय खो आय ह।—कहत कहत दिग्विजय का खून खील आया था। क्रोध बकाबू हा आया। इन दिना उम ऐसा ही गुस्सा आता है। गुस्मे म वह इतना अधा हा आता है कि यदि दूसरा उम रोके नहीं ता जान वह क्या कर डान। फिर आज तो उमन अपनी पट खरीतन का विचार छाड उमकी किताय खरीती थी। इमीलिए

उसने अब देखा न ताव दखा एक हाथ में रत्नश क बाल खींचे । दूसरे से उम्रे जोर से दो थप्पड़ जड़ दिये । इस पर वह जोर से चीखा क्या कि उसने चाना को और भी कमकर उसे हवा में उठा एक परित्रमा करा डाली । शायद अब वह पिता नहीं रहा था । पूरी तरह कसाई बन आया था ।

—मार डाला मार डालो । कापी कित्तवें बच्चा का दे नहीं सकत ।
—अब यशोधरा अपने को रोक नहीं पायी—मारो मारा एक इस क्या हम सबका मार दो । खाने को तो दे नहीं सकत । मारने को

बस, अब क्या था कि पत्नी की बात सुन उसकी आंखा क आग अघेरा छा आया । घबराकर उसने रत्नश को छोड़ दिया । अलबत्ता वह पागला की तरह पानी को देखता-दखता भर रहा । वह भी कुछ एम्रे जैसे उम्रे स्वयं पर तक मदेह हा आया हा—वह सचमुच ही कमाई तो नहीं ? पिता तो बच्चा का पालन करता है । वह जबकि इस बीच उसकी गिरफ्त में छूटत ही रत्नश दांती स जा लिपटा । नतीजा यह कि उसने रत्नश को पुन तो घूरा, पर मा का देखत ही उमके लिए अब मा और रत्नश का दखन रहना ही कठिन हो आया । झटके के माथ कमर में आ सोफे में विफर गया । पर तभी उम्रे लगा जैसे उसके सारे बच्चे उससे शिकायत करने लग ८ । बड़ा कहता है—जा बच्चे फस्ट आत है उह दो-दो, तीन-तीन ट्यूशन पढाये जाते हैं । एक हम हैं जो रत्ना कहती है—या तो हमारे लिए टेलीविजन लाओ या हमें दूसरा के घर जाने दो राहुल कहता है—पापा मैं कमेटी के स्कूल में नहीं जाऊंगा । बस वाले में जाऊंगा । इतना तो क्या एकाएक ही उसकी यशोधरा कहने लगी—इनमें कुछ मत कहा । इनकी जैसी तनखा वाला के घर क्या है, क्या नहीं है ? इनसे कहने का लाभ क्या ? कहा उममें जाना है जो दूसरो की मुने कहा उससे जाता है जिसके पास तिल हो उससे नहीं, जो पत्थर हो । ये तुम्हारी एक नहीं मुनेंगे । ये मुनेंग आज भी उनकी परिषाद जिनकी जिदगी भर सेवा करवाकर इहाने मेरा शरीर मेरे बच्चा के लिए तक, मेरा रहने नहीं दिया । य तो शुरू में ही गौतम हुए आज के थोडे ही । उमने तो यशोधरा और राहुल की एक क गुन्याम लिया था य घर पर रहने हुए स यामी है) उसने तो सम्यक पृथा को गोजा था य सम्यक नजरो में हमारा उपकार कर रहे ह इतनी न

हमार आसू दिवत है न इनको हमारा राना मुनायो दता है

—हूँ, मैं अधा हूँ—मैं बहुरा हूँ—दिविजय आवेशवम बडबडा उठता है। पर तभी अपन आस-नाम किमी को न दण वह सहम जाता है। उमक जी मे आता है—भागकर एसी जगह चला जाय, जहा दा टाण चन की साम से सबे। मगर वह उठता नहीं है। बँठा-बा-चटा ही रहता है। शायद वह जान चुका था कि उसका नाम दिग्विजय रखत समय उसक पिता ने उसक दिशा जीत हान की जो कल्पना की थी वह झूठी और धार्थी थी। क्वाकि दिशाए सिफ भाव घोष भर ह। उनके स्थूल होन पर तो उनके पर की बात होनी चाहिए। जबकि दिशाआ के परे है कुछ नहीं। ससार या ब्रह्मांड जो कुछ भी है वह सिफ दिशाआ क अदर है। अगर यह बात नहीं होती ता वह बारह बष की उम म पिता की अर्षी का सजती दण चाह यह नहा कह पाता—अर, बाल इनक बदल तुम मुझे ले जाओ पिता क जीत जा जब चाचा, ताऊआ ने उ ह भरे घर स उस गोठ पहुचा डाला जहा गौशाला बनन से पहल गाय बधा करती थी, ता ये चाचा ताऊ पिता की मौत के बाद हम यहा रहन दग मगर इतने लवे अनुभवों के बाद वह भार्या क मामन खामाश नहीं रहता। यह अवश्य ही कहना—मैं तुम्हें पढात लिखात समय न दिन दखा न रात मैंने तुमका न उत्तर समझा न दक्षिण और न पूरव न पश्चिम। तुम यह क्या कर रह हो। कम-से-कम तुम मा के जीते जी तो पूरव-पश्चिम मत बनो। तुम्ह अलग देख ताई चाचा खुश नहीं हाग क्या

—दीदी सौरमडल म कितन गह होत है।—राहुल दीदा से पूछता है। शायद उसकी कल परीक्षा थी।

—मुझे नहीं याद—रत्ना के स्वर म मादगी थी—मा मे पूछ। घोडा ही तो दर पहर रताया था उमन सौरमडल मे कितने

—दिवा नहीं क्या भर सौरमडल म कितने ग्रह ह।—यशोधरा खीज उठी थी—यह मेरा ही तो सौरमडल है जो पहल तो स्कूल की पाच दिना की मार के बाद किताब आयी। फिर जब आयी तो

हालाकि पत्नी की बात मुन उमक जी म आया कह—यशोधरा यह तुम्हारा नहीं मेरा सौरमडल है। क्वाकि यदि यह तुम्हारा सौरमडल होत

तो मैं तुमसे कहता। जबकि तुम मुझसे। मगर वह कुछ कह नहीं पाया। उल्टा अतीत की यादों के एसी यान्त्रिक या विचारों में उलझ गया जिसमें उसकी आँखों के सामने वे क्षण उभर आये जब पिता की मौत के थोड़े ही दिनों बाद चाची और ताई ने माँ का पीटा था। माँ को भिटन दख उमने प्रतिज्ञा की थी—वह चाह कुर्बान हो जाय। मगर एक-न-एक दिन चाची और ताई को यह बतला कर रहेगा—धरती में जिंदा रहने का हक उसकी माँ का भी है। बल्कि उस संपत्ति पर भी उसका हक है जिसे हड़पने के लिए तुम यह सब कर रहे हो। तब उसकी समझ इतनी ही भर थी कि माँ को माँ कहकर उसे दिलासा द। जबकि आज लंबे अनुभवों के बल वह जान चुका है—यह धरती बोरी भावनाओं की धरती नहीं है। यह धरती हानि और लाभ के तराजू की धरती है। यहाँ आदमी के अपने भी तब तक होते हैं जब उसके पान कुछ हो। कुछ न हान पर तो आदमी के अपने बच्चे ताँ कया, वह पत्नी तक उसकी अपनी नहीं होती—जाँ उसके दुखा की सहभागिनी होती है। बल्कि आज तो आदमी की दुनिया भाई-बहन में हटकर उसका अपना परिवार भर है। चाहे इस टूटने के परिणाम आगे चलकर कुछ-कुछ क्या न हो आये। अगर ऐसा नहीं होता तो जिन भाइयों को पढ़ा लिखाकर उसने चाचा और ताऊआ के बच्चों के बराबर ला खड़ा किया वे उसमें अलग होते। बल्कि यह इसी तरह के सोरी का नतीजा था कि एक जोर उसे यशोधरा का वह रूप दिखने लगा जिसमें उसने अपने देवर और ननदों को अपने जिस्म के लोथड़ा से अधिक समझा था। दूसरी ओर उसी यशोधरा का वह रूप जो अकबर बच्चा से कहती थी—अब तो तुम्हारी माँ को भगवान तुम्हारे आसुआ को देखने भर को भी रहने दे तो काफी है। कम-से-कम तुम्हें काफी कितने मागते देख मैं अपने को यह तसल्ली देनी रह—मेरे बच्चों की कसरी कितना को मेरे देवर पहले ही पढ़ चुके हैं। उह दुबारा-तिबारा कैसे लायी जाय। धरती में एक बार पढ़ी कितना को कभी किसी ने दुबारा पढ़ा? अगर ऐसा नहीं होता तो क्या मेरे देवर यह भूलत अपना पेट काटकर उह बड़ा करने वाली भाभी आज प्लुसी की मरीज है। प्लुसी के मरीज का दवाओं से ज्यादा खराक चाहिए होती है। कैसे खिला रहे हैं मुझे खुराक। और तो और अपने पतियों के सामने उनकी

बहुए कहा करती ह—वैसे तो जगह जगह कहती फिरती ह मेरी ता बनी ही बह हुई क्या नहीं रहती अपनी बडी के पाम

य ही सार सोर या बातें थी कि अब उसके लिए सोफे म भी बठा रहना कठिन हो आया। बल्कि धीरे धीरे विचारा के कारण उसकी यह स्थिति हो आयी कि वह इसी क्षण ऐसी जगह चला जाय जहा स फिर लौट ही नहीं। वह ता मा की याद आत ही वह उठ नहीं पाया, बठा का बठा रहा। वरना जान वह क्या कर डालता। क्योंकि भले ही उससे सबका शिकायतें थी पर मा की उसस कोई शिकायत नहीं थी। होती भी कस, भाइया को पढान तथा शादिया क कज वह आज तक चुका रहा था। फिर मा के पास रत्नश क होन का ध्यान आत ही उसे लगा जैसे मा उसस इशारा ही इशारा मे कह रही है—दूसरी किताब ता ला दे जब। वस अब क्या था कि वह अपन को सभाल नहीं पाया। वह झटक क साय उठा। टुक स बीस का नोट निकाला। मार्केट की आर चल पडा। पर दो चार ही सीढिया उतर पाया कि उस मुनायी दिया—बटा शायद घर म सजी छाकन का भी तल डालडा नहीं। पाव भर

—उफ।—वह हाठा ही-हाठा म बुदबुदाया। लौटकर अदर आया। रसाई स डालडा का डिवा उठाया। सिर नीचे कर सीढिया उतरन लगा। उसके लिए पत्नी तथा बच्चा को देखना कठिन हो आया। उन तो डिवा उठात उठाने यहा तक लगा था जम वे सब उसमे कह रह हा। हम माफ कर दना। हम तुमको तग करना नहीं चाहत थ। पर क्या कर हमारा मोर-मडल पाव भर डालडा या तल बन गया है। वम हम यह भी जानत हैं कि पहली तक के लिए तुम जिन चीजा को लाय थे व चार-याच दिन पहल ही खतम है। पर क्या करें हम मजबूर है। यही वजह थी कि अब उसका गला भर आया। वह अब जितना जितना आग बपना उतना उतना उसका वचागिता उस वागती—जाविर उम बच्च का एग ता नहीं मारना चाहिए था जाविर जिस तरह म उगन रत्नश का कस मारा था मारन का ता यह स्वय था या उसकी यह बबसी थी—जा दसयी क बाद ही तनगा थी बतायी म प्रतीभा किया करनी थी जाविर उमका वह हठ पिंग काम का कि ताऊ-चाचा क नटका का तरह कपडा काट कर

नयी सिलवाय ? जबकि जितन म ऐसी एक पैंट सिलती ह उतन म इतवारी बाजार से पाच पैंट आ जाती है । वह भी उस माहौल म जबकि आज वे ताग तक इह पहनने लग ह जो कभी पहले कहा करत थे—वैस पहनते हागे लोग दूसरा के पहन कपडा को

कल दिग्विजय की पत्नी ने भी तो दिया था ऐसा मुझाव । वह तब अवाक-मा पत्नी को देखता रह गया था । उस पहली बार लगा था यशोधरा के कारण अत्र तक वह जिस गहस्थी की चूल को अडिग समझता था वह हिलनी शुरू हो आयी है । जबकि आज वह विचारा के ताने-बाना के कारण यशोधरा-सा ही सोचन लगा था । यह दूसरी बात थी कि ऐसे सोचा के बीच उमे यहा तक ध्यान नहीं था वह जिम तरह से बाजार मे जा रहा था, उसम वह भले ही बाजार भीड म किसी जादमी से न टकराये । सडक पर चलती कारा स्कूटरा तथा साइकिला से टकरा सकता है । उल्टा वैचारिकता क बीच ता उसे यहा तक लगने लगा था जसे सामन की भीड म से एक जजीब-नी आकृति उभरकर उससे लगातार कह जा रही है—मिया क्या तुम वही आदमी नहीं जिसन कल महगाइ भत्ते की किशतें लेन म आपस म झगडत अपन कुलीगो का देख सोचा था कि उनसे कहे—कितना अच्छा हाता यदि आपस म झगडने के बदले तुम यह सोचत—यह कौन-सी महगाइ है जिसमे एक की किशत बारह और सोलह दूमरे की पाच-पाच छ छ सौ क्या पाच पाच, छ छ सौ पान वाला के सूचकाका के त्रिए कट्टाली मिट्टी वा तल, चीनी, गहू, चावल के बदत कुछ और चीजे होनी है क्या तुम वही नहीं हो जिसन ऐसा सोचन क बावजूद किशतें लेन के बाद इस बात पर गब का एहसास किया था कि कईया की तरह तुम्हारे ऐरियर को छीनन साहूकार आस पाम नहीं है ।

इतना तो अलग रत्नेश की किताब लेत समय तक तो उसकी मान-सिकता इम सीमा तक पटूच आयी कि उसे लगन लगा जैस कोई उससे कह रहा है—शिनायत करना मरल है, शिकायत का ममानन कटिया मिर जब शिकायत का निरा अपार भरा हो तब तो अपरे भी असोभक किया तुमने कभी सोचा कि महगाई की जिम किशता के लटके रहने स तुम्हें शिकायत थी । वह इसलिए लटकी न रहतो थी कि सरकार तुम्ह देना ।

नहीं चाहती थी। बल्कि इसलिए सटवती है कि सरकार जान चकी है एत
तो बाबू कोई काम कर नहीं पाते हैं। इस तरह जमा ऐरियर स कुछ कर
डाले। क्याकि जितना जितना वह अपन अगल-चगल खरीददारी करने
लोगा को दखता उतनी उतनी उमके मन म एक टीस-मी उठन लगता
थी। कपडे की दुकाना की ओर देखने पर तो उमका माथा फटने-भा लगता
था। ऊपर मे गहूल की मात्र का दुख अलग। हा, इसके बाद उसकी
वैचारिकता एकाएक उम समय टूटी, जस पाव भर तल तुलाकर उसन तो
पाच का नोट गलन पर बैठे सावनदाम की ओर बढ़ाया। उसे उम्मीद थी
दूकानदार उम आठ आना लौटायगा। सावनदाम था कि उट्टा उमी म एक
रुपया मागन लगा। तभी ता उसकी वैचारिकता आक्रोश म बदल आयी
थी। वह बाला था—बल परसा तो ओले नहीं गिरे थे। जेठ म तो सरसा
नहीं हाती जो दो-तीन ही दिन म तल अट्ठारह से चौबीस हो आया।

—बाबू लना है तो ले, नहीं तो लौटा दे।—भला सावनदाम
दिग्विजय को वहा मे पहचानता। वह तो उसे उसी दिन स भूल गया था
जब उसने उम फीस माफ कराने की गरीबी का प्रमाण-पत्र दन म मना
किया था। वह तो सावन की आखा को देख उसन उमे एक रुपया पकडा
दिया करना वह जाने क्या-क्या कहता। क्याकि उमके लौटत-लौटत भी वह
झलनाया था—करो न शिकायत दरबार मे

भला इस पर दिग्विजय सावन स क्या उलझता। क्याकि अपन लव
अनुभवो के बल वह भने ही गौतम नहीं बन सका था। पर इतना तो जान
ही चुका था—ररती का सत्य जहागीर की घटिया नहीं। बल्कि धरती
का सत्य यह है कि पहल तो शिकायतें केवल हवाई फिर यन्त्रि कोई बहुत
साहस बटोर उहे कागजी रूप दे भी तो चाहे शिकायतें सर्वोच्च स क्या न
की जायें पर आज उसका भाग्य विघाता वह जिमक ही खिलाफ शिकायत
हो। इसीलिए उसन मुडकर सावन की ओर देखा तक नहीं। हा घर आकर
उसने रत्नेश को किताब कुछ ऐमे पकडायी जस अपने अभिनय भर मे वह
उसस कह गया हो—बेटा, तुम तो मेरा मुह दख शात हो आत हो। मगर
मे किनका मुह दखू

●●● पागल

उमन मार्कीट व उम हिस्स म अच्छा घामा तमाशा गढा करा रखा था जिधर हमारे राशन की दुकान थी। उधर डी ब्लाक की मडक को छाड़ कर मार्कीट की ओर देखन भर म आभाग हो आता था, निश्चय ही इधर कुछ मारपीट जमी वारदात हो आयी है। सबसे बिनारे की दुकान चक्की थी। उमक पाम काफी लाग जमा थे। बाकी मारी मार्कीट मुनमान थी। उम मुनमानी के कारण तो कोई यह यकीन नहीं कर सकता था यह क्या सराजिनी नगर की मार्कीट है जिस दक्षिण दिल्ली की बग़ाट प्लेस तक इन दिना बहने लग थे। यहा हर समय भीड़ रहा करती थी। पर आज छ हिस्सा म बटो मरोजिनी मार्कीट के इग हिस्स म मुनसानी थी। मडक और दुकाना पर इने गिने ग्राहक थे। उनक भी चेहरा को प्ख यह जदाजा लग जाना था कि मामला कुछ भगीन है। फिर भीड़ की आँखें मार्कीट और डी ब्लाक की सडक की ओर टिकी नहीं थी। टिकी थी सामन वाले उम पाक की ओर जिधर बिजली के प्रकाश म अकमर बच्चे खेला करत थे। चक्की पर खड़े लोग उसके बार म अजीब-अजीब बातें कर रहे थे। आज वह उधर अकेला था।

पाक म आज उमका एकछत्र राज्य था। किमी और माइल की बात होती तो मार्कीट के बच्चे उधर टनिस आदि खेलते दिखते। मगर उधर आज वह अकेला था। उसकी आकृति बेहद भयावनी थी। इससे पहल वह सब्जी मार्कीट के सामने वाले नुककड पर हमेशा गुमसुम बठा रहता था। वसे वह चालीस-सैतालीस की ही उम्र मे सत्तर पचत्तर का बूढा सा हो आया था। वह किसी से मागता भी कभी कुछ नहीं था। उस पर तरस

या कोई उस कुछ द दता ता बात अलग थी । आज चीयडे-चीयडे हुआ उमका कुर्ता व पायजामा कवल अपन पूवरूप को याने दिला रहे थ । कभी वह एक टाग का उपर उठाता, कभी दूसरी टाग क बल छलागें लगाना मार्कीट के समानातर चलता रहता कभी दाना हाया को मिर स ऊपर उठा अजीवोगरीत्र तरीके म हिलाता कभी हाया से दोना काना का बंद कर हाइट हाट हूर-हूर कर चिल्लाता कभी हाय व पावा क बल जानवरा की तरह चलन लगता यानि कि वह आज अपन बिल्कुल ही नय रूप म था ।

वम वह अभी एसा कुछ नहीं कर रहा था जिसस लोग आतकित हा या वहा से भाग खडे हात या दूकानदार अपनी दुकाने बंद करत । उमन इतना अवश्य कर डाला था कि मार्कीट क डम हिस्स की आर कवल व लाग आग बढत भे जिनक लिए इधर आना मजबूरी थी । यह दूसरी बात थी कि इस हिस्स म आन वाल हर व्यक्ति का सिफ यही प्रयास होता कि जितनी जल्दी हो सके अपन को निवटा वह मार्कीट क अय हिस्सा की ओर चले जायें । बाकी मजबूरी वान लोगा के जलावा अय उसकी हरकतें दग्य मार्कीट का लबा चक्कर सा काट लौट पडत थ । वम एच जाकार म हान के कारण दूसर हिस्सा म आसानी स जापा जा सकता था । कयाकि मार्कीट के बीचाबीच स भी इधर उधर जान के रास्त यहा थे ।

पर मेरे लिए इसी हिस्स की आर जाना मजबूरी थी । एक तो राशन लेना था । दूसरा मैं इस हिस्स के उम दुकान को जानना चाहता था जिमक साथ इस पागल का सबध लोग बता रहे थे । वैसे मैं सरोजिनी नगर क उन पुराने वासिदा म स था जिहाने इस मार्कीट को बसत देखा है । पर लाख प्रयास करी पर भी मुझे यह याद नहीं आ रहा था जब इस आदमी को कभी मैंन इधर की किसी दुकान पर मालिक या नौकर की हेसियत स देखा था । जबकि मैं इस मार्कीट के हर दूकानदार को सूरत शकल स तक जानता हू । बल्कि यहा तक जानना हू कि इनम स कितना की दुकानें आम पास क अय नगरा म भी है । लागी की बाता पर एकदम जविश्वास भी नहीं किया जा सकता था । लाग इधर आने वाल हर नय व्यक्ति को यह बता रहे कि इसके बारे म य बातें इधरके एक सग्दार ने बताया है । इसकी

मा के मरत ही इसकी सौतली मा तथा इसके सौतले भाइया न इस दुकान छीन लीं इसे मार मार कर घर म निकाल डाला तब यह तरह वप का था। मा के मरत ही यह एक बार फिर रिफ्यूजी आ बना पहल-पहल रिफ्यूजी बनन म इस सरकार न तथा नगरपालिका आदि न मदद की थी पर इस बार इस कौन मदद करता मगर यह हिम्मत हारन वाला जादमी नही था। धीर धीर इसन खिलौन बनाना सीखा दो चार माल बाद तो यह रावण बनान का ठेका लेन लगा दयत-देखन इसन अपनी बहन की शादी कर दी और फिर यह इसी मार्केट म आकर रहन लगा। इसी तरह खिलौन आदि बना यह अपना दरगुजर किया करता था ।

अब उसन और भी भयानक रख जख्तियार कर लिया था। बार बार वह पाक के काटा वाल फेंस की लाघन का प्रयत्न करता। अपनी पूरी ताकत स काटदार तारा का दवाता। यह अलग बात थी फेंस पार कर सकन म वह सफल नही हुआ। अपनी असफलता दख अत्र वह उस गेट से कुछ बाहर आता जा कि उस पाक म जाने का एकमात्र रास्ता था। फिर जट्टर पाक म चला जाता। अब उसके हाथ म पत्थर था। धीर-धीर ऐसा करन के बाद वह पुन हू हा करत पाक म ही चक्कर काटन लगता। इस कारण अब मार्केट के इस हिस्से म इक्क-दुक्के लोगो का आना भी लगभग बंद हो गया था। और ता और अत्र इस ओर के दूकानदार तथा ग्राहक भी घबरा आय थे। ऐसा स्वाभाविक भी था। दूकानदार और ग्राहक घबराय से दुकाना क अंदर सिमट जाये थे। अलवत्ता इस मौके का फायदा उठाता एक बछडा ऐसा था जिस पर उसका जरा भी अमर नहा था। वह इधर की एक मात्र चक्की क सामन उस जगह अपनी धुन म था जहा कभी गहू साफ करन वाली बठा करती थी। शायद उधर वह कूडे म गहू के दान बीन रहा था। वह भी कुछ एम जसे कि उस जीवन म पहली बार मुहमागी वस्तु मिल आयी हा।

किसी और समय की बात होती तो कोई न-कोद बछडे को मार मार कर भगा देता। बडे नही ता बच्चे कम-से-कम उसे छोडते नही। पर इस बार उसकी बजह से उसकी ओर किसी का ध्यान नही था। अब मेरा

ध्यान पूरी तरह उसपर केंद्रित हो आया था। मुझे उमका उह खाना भला लग रहा था। वल्कि उसने निर्भीकपन न ता मुझमें तक साहम भर दिया। उमी की वजह म अत्र मैं अपनी गणन की दुकान की आर बढ रहा था। अभी पाच-मात ही दुकाने पार कर आग बढा था कि मैंने पाया—सभी दूकानदार भूखी भूखी नजरा से मुझे देख रहे हैं। वह भी कुछ ऐस जैसे मैं अकेला ग्राहक ही सही, पर एमा ग्राहक हू जा उनकी आघे दुकान के सामान को खरीदन निकला हू। यह बात दूसरी थी कि जस ही मैं एक दुकान स आग बढता उस दुकान के दूकानदार ने चेहरे पर मातमी वाली स्याह लकीरें पड आती। वह फिर धूर धूर कर पागल की ओर देखन लगता। उनके चेहरो पर ऐसे भाव उभर आते जस उनका यदि बस चलता ता वे पागल की बोटी-बोटी उडा दत। इतना तो क्या, उनको आघा स एमा लगता था जम वे आखा-ही आखा स कहना चाहत हा—ठीक मौके पर यह कवज्ज कहा स आ फा। इसन तो दशहरे के त्यौहारी दिना क पहले इतवार का उनकी रोजी रोटी तक छीन डाली है। इस दिन का ता क महीना म इतजार कर रहे थे। आज के दिन तो हम बहुत बडी विक्री की उम्मीद कर रहे थे। मुश्किल से एक तुम हिम्मत कर आये और तुम भी आग खिसक गय। कुछ तो हमारा खमाल करो—

बस इधर के दूकानदारो का ऐसा सोचना जायज था। आसपास नयी बस्तिया के फलाव के बावजूद दूसरी मार्कीटा म अभी सारा सामान नहीं मिलता था। फिर इस मार्कीट को नयी दिल्ली की व्यवस्था न चमका भी रदा था। यहा सभी जरूरी सामान मिल जाता था। इसीलिए यहा दूर दूर स लोग खरीददारी करने आते थे। इस मार्कीट को देखकर तो ऐमा लगता था कि इस मार्कीट को बनाने वाले ने आने वाले हिन्दोस्तान की तरक्की का पूरा अदाजा लगा लिया था। पहली के बाद के इतवार के दिन तो इधर का लुत्फ ही कुछ और हाता था। ग्राहक माल के बार म पूछत-पूछत तग जा जाता था। दूकानदार की यह स्थिति हाती थी कि एक हो तो उत्तर दे, मन्को एक साथ कसे उत्तर दें? भला एमी विक्री वाले दिन दूकानदार खोजत नहीं तो और क्या करत? मगर मजबूरी थी कि किया कुछ नहीं जा सकता था।

उधर वह अब पाक के अदर ता अलग, इस हिस्स की सडक पर बीच-बीच म आ उछल-कूद करने लगा था। इतना तो अलग उमन एक बार सडक के किनारे पडी चारपाइया तथा बूड-बबाड का कुछ एस धक्का दिया जमे वह वहा कुछ दास चीज खोज रहा हो। पता नही वह बदला लेन को कुछ खोज रहा था या उधर उसकी काई खाम चीज थी। इधर अब दूकानदार थे कि उसे एसा करत दख अपनी अपनी दुकाना के आग बरामद मे चडे हा आये थे। वह भी लगभग एसे जैस उन सवन यह निश्चय कर लिया हो—यदि उसने इमसे आगे खुराफात की तो वे एक साथ उम पर पिल पडेंगे।

मैं भी अब अपनी राशन की दुकान के बरामद म खडा था। उसकी हरकते देख घबरा आया था। जी चाहता था बिना राशन लिय लौट पडू। मगर मेरी मजबूरी थी। एक तो मेरी पर्ची बट रही थी। दूसरा अदर गल्ल पर बठे लगभग पचासी साल के बूडे दूकानदार को दख मुये उसक बारे म जानन का लालच हो आया था। पर मैं अभी उस तक पहुच भी नही पाया था कि लगा बूढा बडबडा रहा है। दूरी के कारण उसकी बात मैं सुन नही पाया। इमीलिए और भी चौकना हो बूडे के पास खडा हो गया। वह फिर भी धीरे से गुनगुनाया। बहुत जोर देन पर ही इस बार मैं केवल सुन पाया—माया महा ठगिनी। बस, इसके बाद पता नही वह भी मेरे मनोभावो को ताड गया या क्या बात थी। मुझे अपनी और बातें दख मुझे सबोधित करत हाथ जाडत बोता—बेटा, जैसी इसकी हालत हो आयी है वसी भगवान किमी की न कर। कहा दस पद्रह लाख का आदमी। कहा लागो की चपत ता बेचारा सह गया। मगर औरत जोर बिटिया की मौत

—बाबा क्या यह इधर की किसी दुकान का मालिक था? अनायास ही मेर मुह सं निकला था। हालाकि उमकी बात सुन मेरा माया झनझना आया था।

—हा बटा कहत-कहत बजाने एक गहरी उसास भरी थी। एक बार छत की ओर देखा। फिर भरिय भरिय स्वर म बोला—यह दाये हाथ की ओर उसी दुकान का मालिक था जिस पर मोटे माटे अमरा म

जाज लिखा है—ईमान की कमाई में ही ताकत होती है।

मैं जब अवाक सा बाज़ा को देखता भर रह गया था। उसके सक्ते की दुकान को पहचानने की कोशिश कर ही रहा था कि पीछे भिड़ भिड़ की आवाज़ सुन चौंक पड़ा। झटके के साथ बरामदे के बाहर ही पहुँचा था कि दबड़ा—पहले तो बगल की दुकान पर खड़े स्कूटर को उसे गिराते देख एक आदमी ने उसकी पीठ में भद्द से एक लट्ठ दे मारा। फिर वह अभी सभलता या न सभलता तीन चार आदमियाँ ने उसे धर-दवाचकर जमीन में गिरा दिया। जबकि अब वह एक आरजोर जोर से "मार दिया मार दिया" चिल्ला रहा था। दूसरी ओर बछियाँ थीं कि अपनी दुम पीछे की दो टागा में दबाय पागल की ओर बढ़ती भीड़ का चीरते आदमियाँ के घेर में बाहर निकल रही थीं। इसी के साथ कुछ लोग थे कि उस मारते लागा में कह रहे थे—ज्यादे मत मारो वही यह मर न जाय। पर अधिकांश लाग ये कि उसकी पीठ और टागा पर खड़े लागा का महानुभूति से एसे देख रहे थे जैसे कि उसे मारने वालों ने रावण से भी अधिक खतरनाक आदमी को परास्त कर कोई बड़ा काम कर डाला हो।

●●● मैं, मेरी दरौज और चूहे

मैं जब पहली बार दफ्तर में अपनी सीट के नीचे चूहा दखा ता मेरे आश्चय का ठिकाना ही नहीं रहा। आश्चय इसलिए नहीं हुआ कि चूहा दफ्तर की विरिडिंग के हर दरवाजे पर खडे होमगाडों की नजर बचा, अदर वसे घुस आया। क्याकि वेचारा होमगाड तो वेवल सरकारी कम-चारिया के पासा को चेक कर सकता है दूसरो की आखा म धूल थोकने की विद्या म निपुण चोर उचक्का का तो बट नहीं पकड सकता। फिर इन उचक्के चूहो पर उमका क्या बम जो दीवारा जीर घरती को अदर ही-अदर कुरेद कहा से कहा पहुंच जाते है। मेर तो आश्चय का विषय था— ये कबखन दफ्तरा म खाते क्या होग ? क्योकि मैं तो दफ्तरा म घरो की तरह इनके खाने के लिए अनाज आदि कुछ देखना ही नहीं था। दख भी क्या पाता ? फाइला व कागजा के अलावा कुछ हो तभी ता।

मगर चूहे मिया तो चूह ही थे। मेरे आश्चय को और भी अधिक करन के लिए वह आख मिचौनी से खेलन लग। कभी खरगोश की तरह घुनाचे भरता खुमुर-खुमुर करता फाइला को मूधन लगता, तो कभी बडे रीव से रैक पर चढ जाता, तो कभी मेरे मामने वाली सीट पर रखी टाइप-राइटर पर चढ जाता। जैसे उसे विश्वास ही न हो पा रहा हो कि जहा वह है, वहा ऐमा हा ही नहीं सकता है कि खान के लिए अनाज आदि न हो। मुझे उस नाममज्ञ की बुद्धि पर तरस आया। जी म आया, इसे समझाऊ—भई, इस दफ्तर का नाम खाद्य मन्त्रालय अवश्य है पर यहा तो मात्र खाद्य की स्थिति बग्याद्य की समस्या का लेखा जोखा रहता है। वह भी वेवल कागजा और फाइला पर। जानत हो, यह देवताआ के भी देवता महाराजा

का कार्यालय है। अगर मिया, तुम्हें भूख लगी है तो तुम किसी लाला जी की दुकान में जाओ, किसी किसान के घर या खेत में जाओ जहाँ अनाज होता है। किंतु मैं उसे समझाता क्या? आदमी हो तो उसे समझाऊँ भी। इस जानवर को क्या समझाऊँ, जो न मेरी भाषा समझता है और न मैं ही इसकी भाषा बोल पाता हूँ। हाँ, केवल समझाने के लिए विवश-माँ उसकी ओर देखने लगा। मेरा देखना ही था कि वह चौकना-सा मुझे ही देखने लगा। मुझे उसकी बुद्धि पर अब और भी तरस आया। मैं कुछ हस-सा पड़ा। मेरा हसना था कि वह ऐसे भागा जैसे उसे सदह हो गया हो कि कहीं उसे पकड़कर जेल में बंद न कर दिया जाय।

इसके बाद जान इसकी भूख मिट चुकी थी या वह भय के मार इधर-उधर निकलना उचित न समझ रहा हो, वह मुझे काफी दूर तक दिखायी नहीं दिया। मुझे भी उसके बारे में अधिक गौर करने का मौका नहीं मिला। क्योंकि तभी हमारे अडर सेन्टरी साहब कमरे में ही आकर बह गये— सार मेक्शन के तोग काम पर जारा से जुट जाओ। 'पार्लियामेंट क्वेश्चन है। हर प्रात की फाइला को अच्छी तरह देखा कि किम प्रात में भुखमरी के कारण कितने आदमी मरें। इस बात का ध्यान रखना कि स्टेटमेंट निल नहीं होनी चाहिए। वना पार्लियामेंट के मवर वीबला उठग। बाल की खाल उधेडना शुरू कर देग।

अडर सेन्टरी साहब कमरे में जा चुके थे। उनका जाना ही था कि हम सभी फाइला को खोलने लगे। फाइला के खुलने से कमरे में एक अजीब प्रकार की आवाजें होने लगी जो मुझे चूह मिया की फाइला को सूंघने की खुसुर खुसुर सी लगी। मगर किसी भी प्रात की रिपोर्ट में भुखमरी के कारण मरा एक भी कम न मिल पा रहा था। जा मेक्शन आफिसर सहित हम सभी के लिए सिरदद का कारण बन गया था। तभी चपरासी हजारीमल को एक तरकीब सूझी। उसने सुझाया कि अगर पिछले साल के सार अखबार इकट्ठे किये जायें तो शायद कुछ काम बन जायें। क्योंकि कभी-कभी ऐसी मौता का हवाला अखबारों में तो छपता ही है। उसका सुझाव यद्यपि कुछ हद तक सफल हो सकता था पर समस्या यह थी कि पिछले साल के सारे अखबार कैसे इकट्ठे किये जायें और उन्हें दत्ता कैसे जायें? क्योंकि अखबारों

मे भी ऐसी मौतो का हवाला इतने मोटे अक्षरो मे तो छपता नही था जो अखबार उठाते ही पढा जा सके । अखबार वाले भी क्या कम चालाक है । तभी टेलीफोन की घटी बज उठी । सेक्शन ऑफिसर साहब न टेलीफोन उठाया—हेलो—हेलो—हा जी, हा जी—स्टेटमट बन रही है—जाप फिकर न करें—नही, नही, 'निल' रिपोर्ट नही होगी । क्या कहा ? है जी—रिपोर्ट बनावटी बिल्कुल नही लगगी—तो फिर स्टेटमट के चार कालम बनाय—हा जी, पहला कालम—सीरियल नंबर, दूसरा कालम राज्य का नाम—हा जी,—तीसरा कालम प्लेस आफ डेथ—हा जी,—चौथा कालम, टाटल डेथ नंबर—हा जी, सब आ गया समझ मे ।

सेक्शन आफिसर साहब चोगा रख चुके थे । झुककर अपनी नोट बुक पर कुछ लिख रह थे । शायद स्टेटमट क बताय कालमा को लिख रहे थे । पर उनका चेहरा पहले से काफी विचारमग्न हो आया था । सहसा सिर के वाला पर हाथ फेरत हुए वे पुन हम सभी को देखने लगे । फिर एक गहरी उसास भरत हुए वगल मे बैठे स्टेटिस्टिकल असिस्टेंट सरदार जी की ओर देखते हुए बोले, सरदार जी, आप तो स्टेटिस्टिक्स मे माहिर है, कोई तरीका सोचिए तो ।”

“जी साब, मै तो पहले से ही सोच रहा हू ।” सरदार जी अपनी दाढी का सहलाते हुए बोने । फिर अपन चेहरे को जोर भी गभीर बनाते हुए टेबुलेटिंग मशीन की ओर देखने लग । मै भी गौर से अपन बगलवाली सीट पर रखे टाइपराइटर को देखने लगा । मुझे कुछ भी उपाय नही सूझा । पर तभी सरदार जी बोले, 'साहब मुझे तो कोई और उपाय नही सूझ रहा ह । केवल एक उपाय सूझ रहा है—हर प्रात के बडे-बडे शहरा का नाम अलग-अलग नोट किया जाय । फिर यह अदाजा लगाया जाय कि हर पाच शहरा के पीछे औसतन एक आदमी मर सकता है । इस तरह स्टेटमट तैयार कर लिया जाय ।”

सरदार जी का सुचाव सबको माय हो आया । सेक्शन आफिसर न सबको आदश दिया कि एक बागज पर पतिल से बडे-बडे शहरा का नाम नोट करा । मैने पेंसिल निकालन का दर्राज घोली ही थी कि मुझे लगा जैसे किसी चीटी या किमी बिच्छू १ भरा हाथ काट दिया है । मैने दर्राज की

ओर देखा ही था कि एक चूहा उछलकर मेरी छाती पर चढ़ जाया। मैं इस अप्रत्याशित चूहे के आक्रमण की कल्पना भी नहीं कर सकता था मैं उछल पड़ा। फाइलें इधर उधर बिखर पड़ी। स्याही की दवात भी गिर पड़ी। तभी बगलगीर बोला 'बाह, तुम तो बड़े डरपोक हो। एक छोटस चूह से डर गया। मैं घेय मा उठा। कपडा का झाडता, फाइला का ममटता पुन पूववत काम पर जुट गया।

स्टैमट भेज दिया गया। कुछ लोग लव पर चल गये थे। मैं कमर में ही बैठा था। क्योंकि आज श्रीमती जी के सुझाव के अनुसार पसा की तगी से तग आकर पहती बार रोटिया लाया था। पर चूह मिया के कारण अटक के साथ दर्राज खोलने का साहस न बटोर पा रहा था। मैं धीरे में दर्राज खोली ता चूहे मिया फिर दर्राज में ही निकले। मगर इस बार वे मुझ पर उछले नहीं। धीरे से दर्राज से बाहर निकल भाग। मैंने गौर से राटिया का देखा ता प्राध क मारे आग बबूला हो गया। मेरी नयी रुमाल का चूहा तीन जगह से काट चुका था। कबल इस चूहे को भी मैं ही मिला। म हाठा म बुदबुदाया। यद्यपि चूह की जूठी राटिया घान की इच्छा नहीं हो रही थी, पर विवशता भी काइ चीज होती है। जूठी जगह म राटिया नोच-नाचकर मैं खान लगा। तनी मैंने कहा कि चूह मिया कुछ दूरी पर स शिकायत भरी नजरा में मेरी आर ही दख रहे ह। मुझे गुस्ता तो उस पर आ ही रहा था। धीरे स बोला "भाग जा चोर माला वही का।"

मगर चूहे मिया भाग नहीं बल्कि छाती तानकर मिर उठाकर भरी आर कुछ इस तरह देउन लगा जैसे कहना चाहता हो—बाह माहव बाह, एक ता घाना न देकर हम इस तरह घाने का मजबर करत हो, उस पर भी अपनी ही मिखायी विद्या के कारण हम चोर कहत हो। तुम तो बड़े डागी आश्रवाणी हो। वहा है आपका वह आश्र जिसका तुम जगह-जगह डिंडोरा पीटन हा—सब मनुष्य बराबर हैं, सब समान हैं। मनुष्या के लिए तो तुम्हारा यह आदेश 'हम बेचार असहाय पशु-पक्षिया के लिए आश्र अलग। अब मैं उमका दखना अधिक बरदास्त न कर सका। पाव उमकी ओर बढ़ाया ही था कि वह पाच छह कम्म पीछे भागकर पुन मुडकर मुझे देखने लगा,

जैसे अभी ऐसा ही कुछ और कहना चाहता हो। पर फिर मैंने उसकी ओर दृष्टि नहीं। रोटिया खाकर हाथ धोने बाहर चला गया।

बस उस दिन के बाद तो मेरा भी एक तरह से राटिया लाने का रूटीन बन गया। साथ ही मिया चूह का भी दर्राज में रखी रोटिया का चुपके से खा जान का। राटिया खाते समय चूहे मिया को कभी-कभी गालिया भी देता। मुझे खुशलात देख मेरे एक दो कुलीग जो मेरी इस झुपलाहट को जान चुके थे, मुझे मलाह गेत—भई, चार-पाच रुपय का टिफिन कैरियर ल आया। बस, तुम्हारी झुपलाहट दर।

मैं उनका धन्यवाद अदा करता। मन ही-मन याजना बनाना कि अबकी पहली को जरूर टिफिन-कैरियर खरीदूंगा। पर पहली को बनिया, दूध मकान का किराया व कोयले का बिल पूरा करने की समस्या खड़ी हो जाती। टिफिन-कैरियर का विचार धरा-वा धरा रह जाता। अलबत्ता राटिया का दर्राज से निकालत समय पीज अवश्य उठता। इस तरह चार-पाच महीने गुजर गये। इही दिना महाराज इद्र की बड़ी कृपा हुई। सभी बन्कों को आठ आठ रुपये तनख्वाह वदान का ऐलान किया गया। मेरी प्रसन्नता का ठिकाना ही नहीं रहा कि तनख्वाह के अलावा तीन महीने के चौबीस रुपय जो एरियर मिलेंगे उनसे दिन-पर दिन बढ़ती महगाई से लड़ सकूँ या नहीं, पर इस कबल चूह में अवश्य लड़ाई लड़ूंगा। टिफिन-कैरियर अवश्य ले लूंगा। पर उन दिना जब भी चूह को देखता तो लगता जैसे चूह मिया शिकायत कर रह है—यह अनेके-अनेके खान की दिन-पर-दिन बढ़ती प्रवृत्ति क्या अब तुम भी शुरू कर दाग। अगर ऐसा करोगे तो हमारा क्या होगा? हम तो भूखे मर जायेंगे। आखिर हम भी तो प्राणी हैं। उसकी इस शिकायत से मैंने एक तरकीब सोची। उसकी शिकायत भी ठीक ही थी। रोटी खान समय दा चार टुकड़े इसब लिए सीट के नीचे फेंक दूंगा। मगर टिफिन-कैरियर लाऊंगा जरूर। जूठी रोटी तो नहीं खाने पड़ेगी।

जिस दिन एरियर के रुपय मिलने वान थे, उस दिन एक अजीब घटना घटी। मेरी तबीयत खराब थी। मैं वहीं भीट पर नेट गया। तभी क्या देखता हूँ कि दर्राज में एक चूह की ही शक्त की अजीब आदृति मुझमें कह

रही है—मर दोस्त, तुम्हें हम एक राज की बात बताना है। पक्कीगन कचेयरमन गाह्य का नाम ता तुमन गुना ही होगा। उनका वार म वान धोल-धर सुन ला। एक दिन जब व दूसरी वार हमारा भागी मरकम गणेश जाते पाग आय ता बडे ही घबरा-ह थ, गणेश जी ने पहन उह टाटा था। थाडी दर बाद थाटा मुस्तावर व गणेश जी म जान “मुझे तुम्हारा उन सबका स बडी सहानुभूति है। जा पढ लिखकर दफतरा व अर रहन लग ह। उनका ही कारण मैं एक स्त्रीम निवाली है कि दफतरा म काम करने वाल नव्य प्रतिशत चपरामिया व क्लर्कों की इतनी तनफ्ताह कर दी जाय कि वे शेष दम प्रतिशत अफसरों की तरह कंटीन स नाश्ता कर सकन या घरों म नौकर व चपरामिया म भोजन मगवाने का हवाव भी न दख सकें। ताकि मज-बूरन वे रोटिया लाना शुरु करें जिमम उनके बच्चे-छुचे दी दो, चार चार रोटी वे टुकडों से अथवा हिंदुत्व व पचप्रास के कारण आपके भवका का भी पट भर जाय। उनकी यह बात सुन गणेश जी भी खुश हो गये उहोने पटापट दराज स उनके प्रमाणनवाला कम निकाल हस्ताक्षर कर दिय और विष्णु भगवान जी क पास रिक्मड कर दिया। उनका जाने के बाद जब हमने गणेश जी को समझाया कि आपन तो हमारे ही साथ अयाय कर दिया। भला, जरा मोचिए तो भुक्कड, क्या दाव करेगा। इम तरह तो हम भूखे मर जायेंगे। अब गणेश जी सिरपीटते रह गये। बोले “बडा चालाक है। मेरी तो मति ध्रष्ट हो गयी।” फिर कुछ गभीर होकर बाल ‘कोई बात नही, है तो हिंदू ही हिंदू लोग जब भी कोई काम करते हैं तब मेरी पहन पूजा करते है। अगली वार पकडूंगा उस।’ पर अब पता चला कि वे तो ईसाई हो गये। अब ता गणेश जी क्या किमी हिंदू देवता के वस से बाहर की बात हो गयी। इमलिए भई सुन ला, अब अगर तुम भी अफसरों की तरह टिफिन-करियर लाने लगोग ता तुम लोगो की और भी मुसीबत निकल जायगी। सोच लो।

मैं जवाक-मा उस आकृति को देखता ही रह गया। क्लक जो ठहरा। क्लक भी बीस बरस स। उसकी वाता के सत्य-असत्य को क्या मोच पाता। फिर वह क्लक ही क्या जा अपनी अकल से काम कर सक। मेरी चुप्पी से चिढ़कर अचानक ही वह आकृति मुझ पर झपट पडी। म चीख उठा। नीद

खुली तो देखा लोग लच पर जा चुके थे। कमरे में ही था अकेला। सिर के बाला पर हाथ फेरता हुआ दराज खोली तो दग रह गया। दराज में पहली बार चार-पाच चूहे थे। अब वह चूहा मुझे बड़ा ही डिप्लोमेट लगा। मैं उसकी डिप्लोमैसी के बारे में सोचता रह गया—अब तो यह कबळत बड़े-बड़े अफमरा की तरह अपन सारे रिश्तदारा को दफ्तरा में बुलाने लग गया ह। इस तरह तो थोड़े ही दिना में मेरे लिए कुछ भी नहीं बच पायगा। कल निश्चय ही टिफिन-करियर ले जाऊंगा।

अगले दिन सचमुच ही मैं टिफिन करियर ले जाया। उस दिन चहें मिया मुझे बहुत उदास दिखायी दिय। उसकी उदासी को देख मैंने दो चार टुकड़ा के बदले मात-आठ टुकड़े मीट के नीचे फेंकने शुरू कर दिये। यह काम चलता रहा। मगर इसी बीच चूहे मिया ने बहुत ही उपद्रव खडा कर दिया। अब उसने फाइली व कागजों का कुतरना शुरू कर लिया। जो टिफिन-करियर के अभाव में अकेले मेरे लिए मिर्दद नहीं बना, अब वह मार दफ्तर के लिए ही सिरदद बन गया। सबसे अग्रिम सिरदद उस दिन बना जब चूह मिया ने सबसे बड़े अफमर की दराज से एक काफीडेशियल फाइल को कुतर डाला। अब क्या था, मारा दफ्तर चूहा के उपात से बचने के लिए ऐसे खडा सा हो गया, जने चूहा द्वारा खडी की गयी समस्या सबसे बडी समस्या ही। सभी कमरा में चूह मिया द्वारा किय गय छेदों को चपरासिया द्वारा बन्द कर दिया गया और बड़ई को बुलाकर सभी टेबुला की दराजा को ठीक करवा दिया गया। मगर चूहे मिया कहा मानने वाले थे ?

कुछ दिन बाद एक दिन सवा पाच बजे हम लाग घरा को चलने की तैयारी में ही थे कि अचानक हमारे सेक्शन जाफिमर ने कमरे में आत ही बड़े अपसर का हुकम सुनाया कि सारा सेक्शन रुक जाये। एक अर्जेंट लेटर इश्यू करना है। सभी प्रसन्नता भरी नजरों से उनका मुह देखते रह गये। यद्यपि मुझे उम दिन काम था पर ओवरस्टाइम के पैसा का लाजब हो गया। मगर कुछ देर बाद जब नेटर देखा ता चकित रह गया। चूह मारन-खाती खा के लिए इडेंट माने जा रहे थे जिन्हें सारे हिंदुस्तान के व्यापारिया

का जाना था। उस अर्जेंट लेटर को रात पौन तम बजे तक हमन यन बन प्रचारण इश्यू किया।

पर अगन दिन दफतर पटुचा ता मैं भौचक्का रह गया। दगी विन्शी फर्मों के रिप्रेजेंटेटिव हाथा म बडे-बडे चमडे के बैग थामे इडेंट बॉक्स क सामन कतार म खडे दिखायी दिये। मैं हैरान हा गया। इस चूह मारन वाली दवा के इडेंट का समाचार ता आकाशवाणी द्वारा प्रसारित भी नही किया गया। फिर इन लोगो को रातारात कस पता चल गया? पर तभी खयाल आया कि शायद माडे नौ बजे वाली टाक म लेटर मिल गया होगा। सेक्शन मे घुसा तो सेक्शन आफिसर साहब किसी म कहत सुनायी दिये— अब तो कुछ दिना म काफी काम बढ जायगा। मुसीबत छडी कर दी इन चूहा न।

दीवाल पर टगी घडी बारह बजा रही थी। अभी लच होन म आघा घटा शेष था। मगर सेक्शन आफिसर साहब की मुबह कही बात क कारण सभी काम पर जुट थे। कमरे म छापी खामोशी का कभी-कभी टिक टिक टाइपराइटर की आवाज जबश्य भंग कर रही थी। तभी दो बडे ही हूट-पुट मूटेड-बूटेड व्यक्ति सेक्शन आफिसर साहब की सीट के पाम खडे हो गये। उनमे से एक ने उह नमस्त कर एक चिट उह मीपी। चिट पडत-पडत उनका चेहरा काफी गभीर हो आया। वे दोना उनके पाम वाली कुर्मिया पर बैठ उनम बात करन का प्रयाम कर ही रह थ तभी एकाएक गवमन-आफिसर जोर जोर से चिल्लात हुए उछल पडे। उनका उछलना था कि फाइला आदि स भरा टबल का ऊपरी तख्ता आगतुका पर उछल पडा। मगर वे फिर भी चिल्लात चिल्लान अयन दोना हाथा स दायें पाव को कभी किसी जगह, कभी किसी जगह पकडत फिर छाडत क फिर पकडत रह। हम सभी घबराकर उनकी ओर भाग। उनके पाम पहुचे ता दया उनके दायें पाव क मौजे से स्पटता एक चूहा उछलकर भागता दिखायी दिया।

दम अब लाग अय कमरा न भाग भाग हमारे सेक्शन म आ चुक थे। मगर व दो मूटेड-बूटेड आगतुक कमर म गायब थे। जान क्या? शायद

उह खतरा हो आया हो कि कही सारा दोष उन पर न भड दिया जाय । सेक्शन आफिसर साहब अब यद्यपि कुछ सतोष की सास ले रहे थे, किंतु बोल फिर भी नहीं पा रहे थे । हम लोग हैरान स उह देख रहे थे । सारे कमरे स खामोशी थी । मगर दरवाजे के पास खडे अय सेक्शना के लोग आपस मे बातें कर रहे थे कि बाहर से एक आवाज सुनायी दी, “अब तो भाई अहिंसावादी चूहे भी हिंसावादी हा गय ।” तभी बाहर ही से एक आवाज और आयी “शायद यह फ्रायड का शिष्य हो ।”

●●● हसा की ईजा

हालाकि हमारा अभी गाव में दिव्यन वाली उम पहाड़ी पर दिखा था जहाँ से गाव पहुँचने में लगभग आधा घंटा लगता था। पहाड़ी धरती तथा रास्ते की अपनी बात जो थी। पर गाव से साफ दिव्यत हमारे पावा की तज़ी से स्पष्ट था—वह इस दूरी को पंद्रह-बीस मिनट में तय करेगा और गाव पहुँचकर परमा द्वारा उस दी गयी चुनौती की धज्जिया ही उड़ाकर दम लेगा। यही वजह थी कि जितनी तज़ी से हमारा आ रहा था उसमें भी कई गुना गाव में सरगमिया शुरू हो आयी थी। बच्चा के लिए तो हसा का आना एक तरह से एक खेल-सा हो आया था। सयान थे कि वह इस तावड़ तोड़ कोशिश में जुट जाय थे—हसा के गाव पहुँचने के बचे समय का फायदा उठाकर किमी तरह परमा को मनायें ताकि अप्रिय घटना से गाव बच सके। जबकि जवान थे कि हसा की ईजा के घर पर ऐसे मिमटने लग जस परमा के साथ खड़ा होकर वे सब हसा का सबक ही निखाकर दम लेंगे। उसने पूरे गाव का काफी समय सँभुली जा कर रखा था। औरतें थी कि इशारा ही इशारा में आपस में बातें कर रही थी—देरों अब क्या होता है ?

इसलिए एक तरह से हसा के इस वार के आने की वजह से पूरा गाव हिल उठा था। क्योंकि परमा द्वारा हसा का दी गयी चुनौती के कारण हो सकने वाले झगड़े में दोना में से कोई मर-मुरा गया तो पूरे गाव के बंधने की एक स्थिति आ सकती थी। इसी के साथ खतरा यह भी कम नहीं था—ताकतवर हसा के हाथ परमा के पिटन की स्थिति की देख, गाव वाले ही हसा पर एक साथ पिल पड़े तो भलाई-बुराई का रूप धारण न कर ले। नतीजा यह था कि कुछ लोग इस हक में थे कि हसा का बीच में ही रोकने

का प्रयास किया जाय ताकि मामला कुछ गलत रूप न ल। पर हसा के आतंक से सब डरते थे। किसी म यह साहस नहीं था। भला यदि ऐसा ही साहस उनमें होता तो चुनौती की बात मुन तरबूबू यह थोड़े ही कहती—चलो गाव के एक बेटे ने उम ललकारा तो सही—तरदा भी परमा को साहस जुटाने के बदले यह थोड़े ही कहते—बेटा, हसा की तो मति को पत्थर पड गया है। यह क्या बवाल अपने सिर ले बैठा। वैसा बेटा तू बात मही कह रहा है पर समझाया या रोका उस जाता है जिसे समझ हो। यदि उसे समझ ही होती तो क्या हसा ऐसा करता। बेटा, यह तो दुनिया का नियम है जो जैसी रोटी तोड़ता है उसकी बुद्धि वैसी ही हो जाती है। हा, दीवादा अवश्य यह कह रहे थे—बेटा फिकर मत करना। पूरा गाव तेरे साथ है। अलवत्ता हम यह जरूर चाहत है हमारा विरोध बाद में शुरू हो, पहले उसकी ईजा विरोध कर।

जबकि इही क्षणा की विचिन्ता यह थी कि हसा की ईजा गाव के लोग के जमा हो जाने तथा हमा क आन की स्थिति से बखबर थी। क्याकि पिछली साझ—तेरा लडका मर गया है सुन शब्दों के कारण व इस समय एसी मानसिकता म जो रही थी जिसमें वे पत्थर की प्रतिमा की तरह जदर बाल दरवाजे के पास बैठी थी। अथवा तो वे इस समय घर कहा होती। उनका तो रोज का नियम था। दिशा खुलत ही दैनिक काम से निबट वे अपनी लाठी पकड़े जागन म खड़ी होती थी। सोचती—एसा घर कौन हो सकता है जहा पहुंचत ही उह चाय मिले। उनकी नजरो म ऐसा घर वह होता था जिसका बेटा पिछली साझ नौकरी स लौटा हाता था। ऐसा घर न सूझ पाने पर वे यह सोचती थी—अब ऐसा कौन घर हो सकता है जो उहे खाली न लौटाये। पर आज अपने इसी नियम को तोड़ वे जपन घर ही भिमटी हुई थी। उट्टा आज तो रात उहाने फगता जो किया था—चाह व भूखी मर जाये पर अब

वसे ऐसा फंगला वे एक बार नहीं, कई बार कर चुकी थी। पर हर बार उह अपना फंगला मजबूरीवश बदलना पडता था। भला पट का गडडा ही वह गडडा क्या जो आदमी को न झुकाय। फिर घर म कुछ भी न होने के कारण उनका तो मही कुछ गाव था। अलवत्ता इस बार उनके मन को

हालाकि मजबूरिया उनके लिए यहां तक खड़ी हा जायी कि जमीन न होन के कारण उनके लिए दूमरो के घर काम उस हालत म करना पडा जबकि हसा दो माह का भी नही हुआ था। क्याकि घर मे थोडा-बहुत जो कुछ था भी उसमे उसे पति की गति निया करनी पडी। छोटे ससुर तथा उनके बच्चे उनके पास अभाव के इन क्षणा झाकन तक नही आय। आन पर खच करने की जो नौबत थी। हा, थाडा-बहुत उनक लिए राहत की बात यह थी कि परमा की ईजा न अपनी आर से उह पूरी मदद की। यानी कि मजबूरी के क्षणा मे वे हमा को दूध और पानी आदि पिलाकर उसकी देखभाल ही नही किया करती थी बल्कि उहोने उह काफी जमीन भी दी थी। वर्ना यदि वे उनकी यह मदद नही करती तो उनके तो भूखो मरन की नौबत आ जाती। शायद दुख ही दुखा को बाटा करता है। क्याकि दोना के दुख लगभग समान थे। अतर यह था यदि परमा की ईजा के पास जमीन थी तो हमा की ईजा क पाम परमा की बीमार ईजा स बेहतर शरीर था। सोच भी दोना का एक-मा था। दोना गाव क पढत बच्चो को देख यही सोचती रहती—वाश वे अपन बच्चा को ऐसे पडा पाती। उहे क्या पता था कि कारी भावना स यह मभव नही है। वह भी उस जमान मे जबकि सविधान म सभी बच्चा का अपना विकास करने की पूरी स्वतंत्रता की बात कहकर यह समझ लिया जाता है कि बस काम पूरा हो गया है। शायद सविधानी आयता की तरह हसा की ईजा की नसीब भी थी। हसा को पढत दख तो फूली नही ममाती थी। वे अनपढ अवश्य थी पर नासमथ नही। इसीलिए व हमा को अपन तरीक स पढाया करती थी—बेटी घरती म सबम बडा गुरु हुआ करता है। गुरु तो साक्षात भगवान हुआ करत ह। बेटा शुनाचाय ऐसे गुरु थे जिहाने अपन शिष्य राजा बलि को बचाने म अपनी आन्ध तो गवा दी पर ऊफ तक नही की। बल्कि कई बार तो वे हसा को राजा बलि क बली बनन वाली पूरी कहानी सुनाती थी। उहे क्या पता था कि बदल परिवेश मे बलि क जमान स चले आ रह गुरुकुला का आधुनिक भारत क नय महपि मकाले न जहा सफाया कर दिया है। वही इन दिनो गुरुकुला का स्थान स्कूला न लिया है। इसी का नतीजा यह कि गुरु क बदले अब शिभका को मास्टर

जरा ज्यान् टंग लगी थी। हमा ड्राग रमड्यूवू का दिय धमर का भी ता अपना अमर था। रात उह कर् बाग यही लगा था जम उनका हमा लरडिया का गट्टर बाध रहा है—गाव की औरतें तथा सयान अवाक-म उम गये हे कर् उह उवगा रर है—हमा क जान के बाद ता तू गूव कहा करती है अर रोर गे। पर व गामाश आगन म बठी है। अपने भाग्य को बाग रही हैं। तमी ता तव आन्मिया की चुप्पी का दय एवाएक कमड्यूवू न हमा का रोरा था। उनका रावना था कि हमा ने उह एम धक्का दिया कि व घडाम न गिर पही। इमी पर तरदा तथा गाव उत्तेजित हुआ था। वह ता तव विशन वडवाज्यू न उन लागी को रोष लिया था। वना जान तव भी क्या होता।

तव उस दिन हमा के जान के बाग गाव उन पर छीजा था। क्याकि हमा न पूर गाव को घरी-छोटी सुनायी थी। उम पर तो किमी का वम था नहीं। मुस्मा उन पर उतरा था। पर व मीन रही थी। इसके अलावा व कर भी क्या मवती थी। हा तव उनकी आखा के सामन अपना वह सारा अतीत खिचा था जिमम हसा क पैदा होन क तीसर दिन उनन हाया की चूडिया उन क्षणा टूटी थी तव व यह साच रही थी—अपन लडके का व नाम क्या रखेगी। इसी वार म तो उनक मन मस्तिष्क का गाव की एक औरत न झनसौरा था। उमन एक दिन उस पानी मिन दूध मे दूध और पानी को अलग-अलग करने वाले हम की बात सुनायी थी। इस बात का उन पर इतना असर था कि उहान अपन लाल का नाम हमा रचन का पूरा फमला कर लिया था। क्योंकि उसकी छोटी साम और ससुर न उनका जायज हक तक छीन लिया था। उनका साच था वह अपन हसा को एसा हस बनायगी जो धरती से याय और अयाय को अलग-अलग करगा। हद भी यह कि मोच के उही क्षणा क बाद ही उह सुनना पडा था—बना कोई बात नहीं, भगवान न तुम्ह सहारा दिया है। दुख के दिन बीत जाते ह। थोडे दिना मे तुम्हारा लाल तुमसे मा कहेगा और या यह सुनना पडा था—बना पिता टोका ही सही। पर तुम्हारे दुडी क्षणा का सहारा पर इतने पर भी वे हिम्मत हारन वाली महिला नहीं थी। उहान न सिफ उसका का नाम हसा रखा। वरन अपन हमा को हस बनाने के प्रयास शुरू कर दिय।

हालाकि मजबूरीया उनके लिए यहा तक खडी हा आयी कि जमीन न हान के कारण उनके लिए दूसरा के घर काम उस हालत म करना पडा जबकि हमारा दो माह का भी नही हुआ था। क्योकि घर मे थोडा-बहुत जो कुछ था भी उसम उमपति की गति श्रिया करनी पडी। छोट मसुर तथा उनके बच्चे उनके पास अभाव के इन क्षणा झावन तक नही आय। भान पर खच करन की जा नौरत थी। हा थोडा-बहुत उनक लिए राहत की बात यह थी कि परमा की ईजा न अपनी आर से उह पूरी मदद की। यानी कि मजबूरी के क्षणा म के हमारा वो दूध और पानी आदि पिलाकर उनकी देखभाल ही नही किया करती थी बल्कि उहने उह काफी जमीन भी दी थी। वरना यदि वे उनकी यह मदद नही करती ता उनके ता भूखा मरन की नौरत आ जाती। शायद दुख ही दुखा को बाटा करता है। क्योकि दोनों के दुख लगभग समान थे। अतर यह था यदि परमा की ईजा के पास जमीन थी तो हमारा की ईजा के पास परमा की बीमार ईजा से बहतर शरीर था। मोच भी दाना का एक-मा था। दोना गाव के पढत बच्चा को देख यही साचती रहती—बाश के अपने बच्चों को ऐसे पढा पाती। उह क्या पता था कि कौरी भावना म यह मन्व नही है। वह भी उस जमाने म जबकि सविधान म सभी बच्चा का अपना विकास करन की पूरी स्वतंत्रता की बात कहकर यह समझ लिया जाता है कि बस काम पूरा हा गया है। शायद सविधानी आयता की तरह हसा की ईजा की नसीब भी थी। हमारा को पढत देख ता फूली नही समाती थी। वे अनपढ जबरन थी पर नासमझ नही। इसीलिए वे हमारा को अपन तरीके से पढाया करती थी—बेटी, धरती म सबसे बडा गुरु हुआ करता है। गुरु तो साक्षात भगवान हुआ करते ह। बेटा शुक्राचार्य एमे गुरु थे जिहान अपने शिष्य राजा बलि को बचाने म अपनी आख तो गवा दी पर ऊफ तक नही की। बल्कि कई बार तो वे हसा का राजा बलि के बली बनन वाली पूरी कहानी सुनाती थी। उह क्या पता था कि बदल परिवेश म बलि के जमान से चले आ रहे गुरुकुला का आधुनिक भारत के नय महपि मकाले न जहा सफाया कर दिया है। वही इन दिनों गुरुकुला का स्थान स्कूला ने लिया है। इसी का नतीजा यह कि गुरु के बदले अब शिक्षकों को मास्टर

जगत्तामसमग्राधी । इति उक्तं चामरुच्युत्तं । त्रिंशत्तमं च भीमा
 अनामिकाया । तत्र उक्तं चारुचरी मया भाजय उक्तं इति
 तत्रापि वा मन्त्रे वापि इति ।—मया की श्रौतं तथा मया अनाम-
 उक्तं इति । इति उक्तं उक्तं च । इति—इति च जातं च वा तां गुरु
 कथा चर्मा इति अथ शोकं च । परं च ग्रामात् आगतं मर्त्यं इति । अपन भाग्य
 वा वाग्यं इति । तभी मातव आत्मिया की पुण्या वा म्य एवाएव
 चामरुच्युत्तं इति वा गताया । उक्तं शोकता याति इति च उक्तं एव
 धरता दिया कि च धरता म गिर्यती । इति परं तत्रा तथा गाय उक्तं
 इति वा । यह ता तव विना यद्यदायुः उक्तं माया वा शोकं लिया वा ।
 वना जात तव भी क्या जाता ।

तव उक्तं त्रिंशत्तमं च जान च वाद गाय उक्तं परं गीता या । क्याति
 इति ते पूर गाय वा उक्ती-श्रौती मुनाया या । उक्तं परं ता विनी वा वग या
 नहीं । मुग्गा उक्तं परं उक्तं वा । परं च मौनं ही थी । इति अनाया च पर
 भी क्या गवती थी । हा तव उक्तं आग्रा च ग्रामा अपना वह मारा
 अनाम विचा था जिगम इति च पैदा होन च तीमर दिन उक्तं हाया की
 चूटिया उक्तं क्षणा टूटी थी तव च यह गात रही थी—अपन सडक का बनाम
 क्या रोगी । इति चारु म ता उक्तं मन मस्तिष्क वा गाय की एक औरत
 न झक्कारा था । उक्तं एक त्रिंशत्तमं पानी मित्र दूध म दूध और पानी का
 अलग-अलग करन वाले ह्म की बात मुनायी थी । इति वात वा उक्तं पर
 इतना अमर था कि उक्तं अपन लान वा नाम हसा रग्यन वा पूरा फमला
 कर लिया था । क्याकि उक्तं छोटो साम जीर मसुर न उक्तं जायज ह्व
 तक छीन लिया था । उक्तं साच था वह अपन हसा को एसा हन बनायगी
 जो धरती स न्याय और जयाय को अलग-अलग करेगा । हृद भी यह कि
 सोच ते उही क्षणा च वाद ही उक्तं सुनना पडा था—वणा कोई बात
 नहीं, भगवान न तुम्ह सहारा लिया है । दुःख के दिन बीत जात ह । थोडे
 दिना म तुम्हारा लाल तुमसे मा चहेगा और या यह सुनना पडा था—
 चला पिता टाका ही सही । पर तुम्हारे दुःखी क्षणा वा सहारा पर इतन
 पर भी वे हिम्मत हारने वाली महिला नहीं थी । उक्तं न सिर्फ उक्तं
 का नाम हसा रखा । वरन अपने हसा को हस बनान के प्रयास शुरु कर दिया ।

हालाकि मजदूरिया उनके लिए यहाँ तक खड़ी हो जाये कि जमीन न होन व कारण उनके लिए दूसरा व घर काम उस हालत में करना पडा जबकि हसा दा माह का भी नहीं हुआ था। क्याकि घर में थाडा-बहुत जो कुछ था भी उसमें उस पति की गति क्रिया करनी पडी। छोट मसुर तथा उनके बच्चे उनके पास अभाव के इन क्षणा झाकन तक नहीं आय। आन पर खच करन की जो नौरत थी। हा थाडा-बहुत उनके लिए राहत की बात यह थी कि परमा की ईजा न अपनी आर स उह पूरी मदद की। यानी कि मजदूरी व क्षणा में व हसा का दूध और पानी आदि पिलाकर उसकी दम्रभाल ही नहीं किया करती थी, बल्कि उहाने उह काफी जमीन भी दी थी। वरना यदि व उनकी यह मदद नहीं करती तो उनके ता भूखा मरन की नौरत आ जाती। शायद दुःख ही दुःख को खाटा करता है। क्याकि दोना के दुःख लगभग समान थे। अतर यह था यदि परमा की ईजा के पाम जमीन थी तो हसा की ईजा व पाम परमा की बीमार ईजा में बहतर शरीर था। मोच भी दोना का एक-सा था। दोना गाव के पढत बच्चा का देख यही सोचती रहती—वाश के अपने बच्चा को एस पढा पाती। उह क्या पता था कि कोरी भावना स यह सम्भव नहीं है। वह भी उस जमान में जइकि सविधान में सभी बच्चा का अपना विकास करन की पूरी स्वतंत्रता की बात कहकर यह समझ लिया जाता है कि वस काम पूरा हो गया है। शायद सविधानी आयता की तरह हसा की ईजा की नसौर भी थी। हसा का पढत देख ता फूली नहीं ममाती थी। वे जनपढ अवश्य थी पर नाममझ नहीं। इसीलिए व हसा का अपने तरीके स पढावा करती थी—बटी, धरती में मवस बडा गुरु हुआ करता है। गुरु तो साक्षात भगवान हुआ करत ह। बेटा शुक्राचार्य ऐसे गुरु थे जिहान अपने शिष्य राजा बलि का बचान में अपनी आख तो गवा दी पर ऊफ तक नहीं की। बल्कि बर्द वार तो व हसा को राजा बलि के बली बनन वाली पूरी कहानी सुनाती थी। उह क्या पता था कि बदल परिवेश में बलि व जमान स चले आ रह गुम्फुला का आधुनिक भारत व नय महपि मँकाले न जहा सफाया कर दिया है। वही इन दिनों गुम्फुला का स्थान स्कूला न लिया है। इसी का नतीजा यह कि गुरु के बदले अब शिक्षको को मास्टर

जी कहा जाता है। इस भेद का उह पता तब चला जब नवीन की ईजा न उनमे कहा—धणा तर हमा न तो ह् कर दी। तलादी गाव व आवारा वहन स मेर नवीन का तो पीटा ही। साथ ही पूछने पर बोला—भला यह भी कोई बात हुई कि मेरे गुरुजी पीटने को कह और मैं नवीन को न पीटू।

तब उह पता चला था उनकी सीख का हमा पर क्या असर पडा है। तब उहान नवीन की ईजा स माफी मागी थी। छानवीन वरन पर उहे पता नगा उनका हमा न सिफ नदन को गुरु ममझ बठा है, वरन दम-चारह ही साल की उम्र मे चरस और गाजा पीने लगा है। साथ ही वह हफ्तो हफ्ता स्कूल जान व बदले दूर के जगला मे जाकर आन जान वाली अकेली दुवेली औरता का छेडन लगा है। भला नये जमान के पिक्चरी प्रभाव का तो अपना अलग असर हुआ करता है। इन दिनो तो कई बडे आत्मी वे हो आय ये जिनके बच्चे दिन भर तो नदन की तरह आवारागर्दी करें और शाम को घर रने टयूशना की बैसाखियो के सहारे खडे रहे। यही वजह थी कि इन बातो को सुन वे स्त र रह गयी थी। इसस भी अधिक दुख की बात उनक लिए यह हो आयी कि हमा के कारनामो का पता लगने पर उनकी वह छोटी साम उनके पास सहानुभूति के झूठे आसु वहान आयो जा उनके दुखो का कारण थी। साम के इस जान का उनपर यह प्रभाव पडा कि उनके लिए अपन का सभाल पाना भी कठिन हो आया था। व तो उस दिन उमसे भी अधिक रोयी थी जब उनके हाथा की चूडिया टूटी थी। तब कोई और उपाय न दख घर के दवालय मे उहोन भी मनोतिया की थी— प्रभो ! मेरे हमा को जब भी सभाल दो क्या गुनाह किया है मैंन रात रात भूखी रहकर मैं हमा की कापी किताब जुटाती रही कापी कितावा व फीम के कारण मैंन न दिन देखा न रात पर पर यह क्या प्रभो अब भी वचा दो हमा को उमे क्या पता था कि वे जिन दवी दवताओ की मनोतिया कर रही हैं वे मनुष्य नहीं जो पिघल जायें। वे तो कम फला व एस देवना ह जिनकी नजरा म अहल्या के अहल्या बनन के पीछे अहल्या के ही अपने रम थे। वना इद्र की निगाह थाडे ही बदलती। शायद य भी हसा के ही कम ध जो उमके वा, वह ऐसा विगडता गया कि एक दिन आवारागर्दी करने के बावजूद वह नदन की विधवा वहन को अपने घर

ले आया। पता नहीं उसके पीछे कारण उसके गुरु द्वारा मागी गयी गुरु दक्षिणा थी या दोनों के दिल ही मिल आये थे। यह अलग बात है कि हसा की ईजा में उसकी जहा कभी बनी नहीं वही वह एक दिन पिता के मरते ही नदन का सहारा पा पुन मायके चली गयी। शायद अपने दो हसा को हस बनाने के लिए उसके पास इसके अलावा और चारा नहीं था। यहा ता पेट पालने तक की परेशानी थी।

अब पूरा गाव हसा की ईजा के आगन में जमा हो आया था। आरते तथा बच्चे अवश्य दूर दूर खडे थे। लगता था जमे हसा की ज्यादातिया से खीज-कर उहान परमा को मनाने के बदले हसा को सबक मिखाने की ठान ली है। क्योंकि इस बार वह भरे उजाले आ रहा था। अन्यथा ता वह तब आता था जब चारा ओर अधेरा होता था। वह तो जात समय हरकत कर अपने आन की एसी सूचना गाव को देता था कि गाव आया है। वना तो लोगो का शायद ही पता चलता। जहा तक हसा द्वारा आज ले जा सकन वाली चीज की बात थी वहा हसा की ईजा के पास अब ऐसी कोई चीज बची नहीं थी जिसे लेकर वह इठलाता। अब तो घर में एक फूटी तोली एक टूट गिलास एक अघफूटी थाली तथा सक्डो छेदो वाले तवे के अलावा कुछ था ही नहीं। विस्तर ऐसा जिसे हसा की ईजा के अलावा गरीब-से-गरीब भी शायद ही बिछाय। रही बात जेवर की, पहले तो हसा की ईजा के पास था ही क्या। फिर जा था भी वह हसा की फीस जादि में स्वाहा हो चुके थे। रही मही कसर उस दिन पूरी हो गयी थी जय उह पता चला था परमा का दसवी के बोड का फाम रक गया है। मला वे इम बात को कम सह पाती। वह तो हसा द्वारा निराश कर दिय जाने की कमी को परमा को हस देखकर पूरा करना चाहती थी। तभी ता उस दिन उहान अपन सुहाग की आखिरी निशानी गले की हसनी धक्कर परमा की ईजा को पस पकडाये थे।

जहा तक हसा क ईजा की स्थिति थी वह ता अब भी गाव के बाहर जमा हा आय तथा हसा के गाव आने से बेखबर थी। वह तो अभी तक तेरा नडया मर गया है शब्दो की मार से उभर नहीं पायी थी। इमी का तो

कारण था जहा व सागे रात भुजगी रही थी। वही अब उनकी एमी स्थिति थी कि जहा वे हमा को पुत्राचार्य और वनि यात्री कहानी सुनान वाले पहले दिन का याद कर रही थी। वही एम प्रयागा के बीच ता बई मार उह एमा तत्र नगन लगता जम व इम समय काम स लौट रही है और उनर दरवाजा खानत ही उनना हगा दरवाजे न पास औंठा माया पडा ह या घुटना के चल पिसवत उनका हमा दरवाजे तक पहुच गया है और व उम वचान दमा काम छोड उम पवड रही ह। ठूमरी मार इही क्षणा की हकीकत यह हा आयी थी कि गाव व लागा की भोड का लगभग चीरता-सा हसा उनम बोला था—ईजा

—कौन कौन परमा हसा की ईजा को जत्र भी विश्वास नहीं था।

—परमा नहीं हमा—अत्र ता हमा झलना उठा था। भला वह परमा का नाम कहा मह पाता? वह आज के जमान का हम जा था।

बम, अब क्या था हसा की ईजा की तद्रा पूरी तरह टूट आयी। भला अब अपनी हकीकत समझने म उह क्या दर लगती। इमीलिए वह काप उठा। पर तभी जान उनम इतनी स्फूर्ति कहा स जायी कि विजली की-मी फुर्ती म बाहर आ परमा के पावो मे लिपट एसे सिसकिया भरने लगी जस अपने इस अभिनय भर स अपने अतर का उडेलत कह रही हो—बेटा मैं हसा को हस न बना सकी। तुझे मै अपने मन का हस समझती थी। क्या एक मा के लिए हमा को बनाने मे क्या यह कम है कि उसके हसा क हस बनने की आस अभी मरी नहीं। जबकि पहले वे हमेशा मूक रहा करती थी।

फिर वही अधेरा, वही, बिल्कुल वही जिसमें उसे सम्म नफरत है। उस वह क्षण भर के लिए भी नहीं देखना चाहता है। मगर देखता चला आ रहा है। कई बार ता वह इस अधेर से तग आकर यहा तक सोचता हूँ—दूर वही ऐसी जगह चला जाय, जहा अधेरा त्तिन म ता अलग रात भी न हो। कितु एमा स्थान है कहा ? ऐसी जगह है कहा ? जहा अधेरा हो ही नहीं ? इस धरती पर तो अलग, शायद सारी सष्टि म भी न हा।

वह जिस कमरे म रहता है, उमम एक तरह से काफी अधेरा है। कमरा सकरी गली के बीच है। वह भी निचली मजिल का, जिसमे लाख प्रयत्न करन पर भी कभी धूप नहीं झाक पाती है। हा, गर्मियो म गली की उठती धूल बसिअक कमरे म घुम आती है। कम आख दखन वाला तो दिन म भी छोटी छोटी चीजें इअर नहीं दख पाता है। बदलियो के बिर आन पर तो अच्छा खासा देखन वाला भी यहा नहीं दख पाता है। कमर की शकल भी अजीब तरह की है। यदि पथ्वी की तरह इस कमरे को अडाकार कहा जाय तो भी गलत नहीं। रोशनदान की जगह इमम चार छेद दीवारा पर है। जिह देख एसा लगता है—जब मकान बना होगा तब शायद मकान मालिक को रोशनदान का खयाल ही न रहा हो। बाद म किरायदार के कई बार कहने पर ये मोटे से चार छेद गली की ओर वाली दीवार म किये गय हा। य छेद भी एक तरह से अभी खुले ही ह। आदमी ता अवश्य ही उन छेदा से अदर घुस नहीं सकता था। साथ-कीडे अदर न घुम पाय, एसा सोच उनम पक्की जाली लगायी गयी है। साथ ही पार्टीसन कराकर कमर की दो हिस्सा म बाटा गया है। ताकि मकाना की तगी के कारण कोई-न-कोई

किरायदार यहाँ आकर रहने लग। पार्टीशन करने पर कमरे काफी छोटे हो गये हैं। वैसे अगला कमरा पिछले कमरे का दुगुना है। पर उसमें मुश्किल से तीन छोटी चारपाइयाँ ही जा सकती हैं। बड़ी तो शायद दो भी न आ सकें। पिछले कमरे को उसने किचन बना रखा है। अगले को वह बैठक सोने पढ़ने आदि के लिए आवश्यकतानुसार सभी कामों में लाता है।

और दफ्तर दफ्तर की स्थिति उनके घर से गयी गुजरी है। घर में वह पत्नी पर रौंदा तो हाँक सकता है पर दफ्तर में ? अलबत्ता उसके दफ्तर की नयी बिल्डिंग है किंतु जिन कमरों में वह बैठता है उसमें अधेरा है। उधर भी निचली मजिल का कमरा होने के कारण व कमरे के बिल्कुल कोने में बठने के कारण जहाँ वह बठता है वहाँ काफी अधेरा है। पाँच साल पहले जब उसका तबादला उस कमरे में हुआ तब उसने सिरतोड़ प्रयत्न किया था कि वह खिड़की की पास वाली सीटों में से किसी में बैठे। पर उन सीटों पर जाफ़ीमर व दो असिस्टेंटों ने पहले से ही अपना कब्जा किया हुआ था। खिड़की के पास वाली नजदीकी सीटों पर चार सीनियर क्लर्क अपना नतिक अधिकार समझते थे। भला वे भी पीछे कैसे रहते। इसलिए बाकी बचे कमरे के तीन क्लर्क व एक दफ्तरी। उनकी पूछ बस हो सकती थी। उन्हें तो बतायी सीटों पर ही बठना पड़ता था। इसी कारण हकीकत का पता चलते ही उसने अधिक प्रयत्न नहीं किया। चुपचाप कोने वाली सीट को ही स्वीकार कर लिया था।

इसी बातों का जसर उन पर यह पड़ा कि वह सुबह-साँझ घर पर नहीं रहता है। अधिकांश बाहर रहता है। चाहे काम हो या नहीं। हाँ, यदि वह कहीं में जा नहीं सकता है तो अपनी दफ्तर वाली सीट से। घर में बाहर निकल पहेले-पहेले वह खुले कमरे की तलाश में धूमता रहता था। उसी तलाश में कई बार वह अच्छे कमरे देख भी चुका। पर अपनी जेब के कारण उन कमरों में रहने का इच्छा का छोड़ खीजकर पाक में आकर बठ जाता। सोचता अधेरा ता है पर चालीस रुपये में कमरा है कहा ? दो-सवा दा सो में जा कमरे मिलते हैं ठीक हाँत हुए भी हम जमा के लिए बस ठीक हो सकते हैं ? इतना किराया देकर व खायेंगे क्या ? यही वजह थी कि अब उसने कमरे की तलाश बंद कर दी थी। हाँ वह घर पर फिर भी नहीं रहता

था। विवश ही अत म उमे घर लौटना ही पडता था। ठीक एस ही जैस जहाज का पछी घरती की खोज करने म अमफल हो पुन जहाज पर ही नौट आना है। घर न लौटने के अलावा वह जा भी कहा सकता है? मगर दहलोज के पाम पहुचते ही अधेरा दख उसका दम घुटने लगता था पुन भाग जाने को उमवा जी करता है।

आज छुट्टी का दिन है। इतवार है। टबल पर रखी घन्टी ग्यारह बजा रही है। वह आज सुबह म घर पर ही है। अब तक वह कितारें पढ रहा था। इसलिए नहीं कि वह घर पर रहना चाहता था बल्कि इसलिए कि वह पत्नी की शिवायत दूर करना चाहता है। अपन-आप तो बाहर चले जात हैं। हम यही छोड दते ह इम काल-बोठरी म घुटन क लिए। आज की छुट्टी क दिन वह सारे दिन घर ही रहगा उसन पिछने इतवार को ही मोच लिया था। इम एक हफ्ते की परिधि म गानो ता पिछली बारदाता को भूल गयी। मगर वह नहीं भूला था। इसी कारण उसकी पत्नी उसक निणय म अनभिन्न-सी सुबह मे अब तक कई बार उसम आग्रह कर चुकी थी—वैसे ता तुम कभी घर पर रहत ही नहीं। हम कही ले नहीं जाते। आज तो आप घर पर ही है, आज तो कही चलो। इम अधेर कमर स, इम ताल-बोठरी से कुछ समय के लिए मुक्ति तो मिल जायगी। नन्ही-सी पाच वर्षीया बिटिया नीता भी कई बार मा की बाता का ममथन कर चुकी थी—'चतो ना।'

लेकिन वह सुनी की अनसुनी किय जा रहा है। नीता कई बार रआसी मूग्न बनाती उठी थी। पर वह उसकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं दता था। जब नीता जिद पर उतर आयी थी तो उसन उसे एक जोर का थप्पड जड़ दिया था। वह बिलबिला उठी थी। इसी पर रानो को काफी गुस्सा आया था। पर वह बोलती कुछ नहीं थी। पाना बनाना छोडकर उस चुप कराने जा लगी थी। जब वह चुप ही नहीं हुई तो वह पीज उठी थी—बेटी, पत्थर की मूर्ति क सामने रोने से कभी लाभ नहीं होता है। हा लाभ की आशा अवश्य बधती है। पर इनके सामने रोने से तो बट भी नहीं। जाने ये किस धातु के बन है।

वह घाटा-मा मिर वितान पर मे उठाकर रानो की ओर दृष्टता है। उसकी भाहा म निराशा का तनाव बढ़ आता है। उमके जी म आता है कि पत्नी को बुरी तरह डाट द कि इस तरह की बकवास मत किया कर। पर कमर म छाय अधेर का देखकर गहरी निश्वास भरकर रह गया था। माचता रह गया था—रानो सचमुच ठीक कह रही ह। वह किसी एमी धातु का बना है जा न पिघलता है और न जिम पर जय धातुओ का प्रभाव ही पडता है। हो मकता है, पहले वह एसा न हो, पर जीवन क अधेर न अवश्य हा उम किमी एसी ही धातु के रूप म बदल दिया ह। जयथा जबकि नीता निराश-सी कुछ देर बाद खेलन बाहर चली जाती है। जात समय वह पलक उठाकर भी उसकी जार नही देखती है। कुछ एम जस उम भय हा—उमका देखना इम बार पुन उसे मार न दिला दे। पर नीता की नजरें देख उमका त्मिग बोझिल हो आता है। वह पाम ही से पकट उठा, मिगरेट मुलगाता ह। एण-ट्टे उठाकर पाम ही रख लेता है ताकि उस राख झाडन म परशानी न हो। अच्छे बनाता धुआ छत स टकराकर कमर म फलन लगता है। अधेर के कारण वह धुआ उस नही दिखायी दता है जिसस अकमर वह अपन जीवन की तुलना किया करता था—और उमका अत भी वह धुए के रूप म ही ममझता था और फिर वह उसी धुए की जल्द-से-जल्द आकाशा किया करता था।

—अब कब तक एस बँठे-बँठे मिगरेट फूकत रहाग ? खाना बन गया है—रानो कोयने बुपान लगती है—अब पानी भी ता बंद हान वाता है।

वह मिगरेट का जार का कश खीचता है। फिर मिगरेट एण-ट्टे म डाल, तौलिया उठा नहान चला जाता है। लकिन उसक विचार का तनाव फिर भी कम नही जाता। उमकी आवा के सामन के क्षण ग्रिच आते है जय राना म उमकी भागी हुई थी। जब वह राना क साथ एक सुखी जिदगी वितान क म जराग मजोना था, जय लाग प्रयत्न करन पर भी उसे शहर म कमरा न मिल पाया था। तय इच्छा न होत हुए भी उमे इमी कमर म तिन घतर करन का माचना पडा था जब कमरे म पाव रगते समय ही राना न कहा था—नया यनी कमरा लिया है तुमन ? मुयग ना इमम नहा रहा

जायेगा। वही दूसरे कमरे की तलाश करो।”

नब और अब मह भी किन्ना अतर। तब वे दो थे। जब उनके साथ नीता और अनिल ह। उन दोनों क ही दा नवे रूम। तब राना किमी-न-फिसी तरह रोज ही कमरा बदलन को कहती थी। पर अब वह कभी भी नहीं कहती ह। बल्कि अब तग आकर जब कभी वह कही दूसरा कमरा किराये पर लेन की बात करता ह तो वह हमेशा मना करती है। बातों का रूख ही पनट देती है। इन बातों म जरा भी दिलचस्पी नहीं दिखाती है। शायद वह अब अच्छी तरह समझ चुकी हों—उसके पति-जसे कम वेतन पाने वाल के लिए ता यह कमरा भी एक महल के समान है। एक अच्छे कमरे के सपन सजान तो जलज इसी म अपनी स्थिति सभाले रहना बड़ी बात है और या फिर उसन अपन-आपको इस अडाकार कमरे म कुछ इस तरह खपा लिया ह कि अब उसे कही और जहा भला लगता ही न ह, वही अयत्र सुखी रहन की वह कल्पना भी नहीं कर सकती हो। क्योंकि अयत्र यदि चने भी जाये तो और बातें तो नहीं बदल सकती हैं।

पर अब रानो का यही मौन उसे अग्रन लगा है। बन्धि कई बार तो अब वह यहा तक माचता है—क्या हो गया ह राना का? अत्र ता वह विल्कुल ही बदल गयी है। किसी बात के लिए जिद नहीं करती है न ध्यान के लिए न पहनन के लिए। जो कुछ लाकर रख दिया, पका उनी ह, जा कुछ ला दिया, पहन लेती है। बस, और कुछ नहीं। क्या हा गया आदा राना को? इही विचारा म कई बार वह रानो क वनमान रूठ-इक अपनी यलकी मे मुलना करता है कि जिस तरह अपमगों की श्राद्ध-आरा मुनने का धीरे धीरे वह जादी हा चुका है, हा मवता ह, निरुत्तरा इन्की पनी ने भी अपन को इसी कमरे म खपा लिया ह। इन्की इन्की ध्यान धान ही उमका माया फिर क्षनधना उटना है। उम रूठ उम रूठ, इन मान-आ-वर्षों म उसकी आखें काफी कमजोर हा गयी है। इन इन्की आंखें से कमजोर हो जायगी कई बार ता इन्की इन्की कथाव उनकी इन्की के सामने मारी गली का इन्की इन्की है। उम नगता ह उन्की मजदूरो-नाइया आदि निम्न इन्की इन्की इन्की का मरिह इन्की

बाहू विचल सता—चाह उगे कुछ भी करता वने पर वह दर्ता ग हटकर ही
 दम लेगा। कम ग कम जाती आया वा ता बगानग ।

मगर उमर विचार आता, ग वमजोर देता व बन परवर ग्या पुा
 अडापार बाटरी म ही लौट आता। इती कारण अब उम जहा अधर म
 मगग उपगत हा आधी है यही उतावा पर पर जा ता, मगगा और वह
 पर म बाहर हता है जिमका राता कुछ और ही भय लगती है। फिर
 अडाग-अडाग की ओ-गा की विचारपर ठहर जाती मगिम म रहोवाती
 गवमना माहय की पानी की। उमकी एक म एक अच्छी गारटियां दय ता
 उमके म म एक अजीब तरह की टाग उठती। रह रहकर उसकी आग्रा व
 गामा माया ता व गिग गिग जात है जब वह भी गमगा की पानी की
 तरह रहा करती थी। कई बार एक क्षणा म उमका मन बुरी तरह उचट
 आता। गायती पति के समया गिग पर गिन दयती इच्छा की व्यक्त करती।
 चाह के कुछ भी करे वह अब यहा नहीं रहती। यदि तुम इंतजाम नहीं कर
 मकते तो मुझे माया पट्टा दो मेर मां बाप अभी भी मुझे बरणास्त कर
 लेगे पर पति ता दुबन-सतन विचारमग चतर को दय कुछ वह नहीं
 पाती। यह बात दूसरी थी कि पति के हर मग व हर व्यवहार म यह अब
 अपना उपदा अनुभव करती। कई बार तम आकर सोचती—वह जिम
 वमर म रहती है उसम व जेल की कोठरी म क्या अतर है? यद्यपि जेल की
 तरह यहा पहरा नहीं, यह जिना पहने के ही इधर-उधर जा मकती है। पर
 यहा भी जिंदा रहा मर के लिए व दियो का तरह रखा-गूखा भोजन मिलता
 है और तो कुछ नहीं ।

वह अभी नहा रहा था। राना विचारमग-सी रसोई म बठी थी। उसक
 पास ही अनिल बठा था। अभी-अभी उठा है सोकर। तभी तीन-चार
 छोटी छोटी गौरय दहलीज व पास आ चहचहाने लगती है। व कभी कुछ
 जदर तव बढ आती है। फिर लौटकर दहलीज के पास रचे दो छोट छोट
 अधटूट वनस्तरा म उगाये तुलसी व पौधो पर बठ जाती है। राना को उन
 पौधो के साथ जुड़ी बातें याद हो आती है, जब उसन पति के विरोध करने
 पर भी इम वमरे म आन के दस पद्दह दिन बाद य पौधे लगाय थ। तब

एक साथ लगाने पर लाख प्रयत्न करने पर भी, एक पौधा दिन-पर-दिन काफी अच्छा हो आया था और दूसरा दिन-पर-दिन न तो सूख ही पाता था, न अच्छा ही होता था। उसी पौधे की याद के कारण वह पान ही स लोटा उठाती है, तुलसी के पौधा में पानी भरने आगे बढ़ती है। गौरैया उड़कर ऊपर सक्सेना साहब के बरामदे की दीवार पर रखे गमला पर बठ जाती है।

“चल, हमारे घर चल। मैं तुझे अपने गमले दिखाऊंगी।” सक्सेना साहब की लडकी के स्वर में एक अफसरी रीब था।

“ले आय, तो क्या हुआ। मेरे पापा भी मेरे लिए एक साथ बीन नमने ना देंगे।” नीता चिढ़कर कहती है। मगर सक्सेना साहब की लडकी उसका हाथ पकड़कर उसे अपने घर की ओर खींचती है। नीता उमसे उम्र में छोटी तो नहीं पर दिखायी काफी छाटी देती है। इसलिए वह अपने को छुड़ाने का मिरतोड़ प्रयत्न करते हुए भी धिचकी चली जाती है।

रानो यह सब देख रही थी। तुलसी के पौधा में पानी देना भी भूल जाती है। उसके हाथ से लोटा नीचे गिर जाता है। वह झटके के साथ लोटा उठाने की है कि चर चर की आवाज हाती है। दपती है, धोती घुटना के पान काफी फट आयी है। चीज उठनी है नीता क्या मगडा कर रही है?”

नीता को सक्सेना साहब की लडकी छोड़ देती है। वह दौड़कर कमरे में आ जाती है। वह नेहा चुका है। मिर के बाला पर बधी करता है। माता पिता जाना को पास देख वह पूनी नहीं ममाती है। धीरे-धीरे आकर उमने पाव को पकड़ लेती है। कुछ ऐमे, जब कुछ समय पहले पडो मार को बिन्दु ही भूल गयी हो। अब भरी अटो से दाना का देखती है। शायद अब पहली मार की याद हा आयी थी। पर देख-देख स्वर में कहती है पापा, मेरे लिए भी ला दो न कुछ गमले। नीता के पिता, उमके लिए एक साथ दग के आय।”

यह न 'ना' करता है न हा' ही। अदर वाले कमरे में ना चून्ट के पान एस बठ जाता है जब वह नीता की बान का उत्तर दन की जापसबना ही नहीं समझता हा। अदर राना धिना परा नन जाती है। मगर नीता फिर

भी गमले सान का आग्रह करती रहती है। किंतु वह इस पर भी कुछ नहीं बोलता है। घाना गान लगता है। नीता गमल सान की स्वीकृति मिन बिना घाना गान का मना कर देता है। वह अदर-ही-अदर झुझला उठता है। माचता है—नीता का एक बप्पड़ मात्र। वह—फिजूस म जिद कर ग्ही है। अगर व दस गमन ल आय ता क्या हुआ? उह जामदना भी तो मुग्धम बइ गुना ज्यादा ह।—पर राना क झुर्रोगार चहर का दग कुछ भी नहीं कह पाता। एकाएक उम जैसे कुछ सूझ आता है बात टालन क लिए कहता है 'गमन ता में सा दू। पर रगेगी कहा?'

कमर म रखूगी और कहा रखूगी! ' वह रुजामी मूरत बनात हुए कहती है।

उसके हाथ का कौर हाथ म ही रह जाता है मुह का मुह म ही। वह प्रश्न नरी आघा स कभी नीता कभी परनी व कभी अनिल की ओर दखता ही रह जाता है। कभी दखता रह जाता है अपन दचादूच भर कमर का, जिसम वह सामान रखन क विभि न तरीके अदितयार करन पर भी कितारें रखन क लिए रक की जगह न बना पाया था। उम यात्र जाता है—एक बार रानो न भी कही थी य बातें। तव उस कितना गुस्मा आया था! तव उसे लगा था जैसे यह जानते हुए कमर म तिल रखन के लिए भी जगह नहीं है। गमले लाकर रखन की बात कवल उम चिदान क लिए कही जा रही ह और कमरा बदलन की माग का न मानन के कारण ही कही जा रही है। तव उसन झिडककर कहा था—राना गमल व पीछे ही चाहती ता वस घर म जम लेती ताकि वंसी ही जगह तरी शादी नी हाती।

इन बातों का रानो चुपचाप सह गयी थी। इसका अलावा जय काई चारा भी नहीं था। यद्यपि औरतो के स्वभाव के प्रतिकूल मायक पर आक्षेप मुन उसकी सारी दह म क्रोध के कारण कपकपी छूट आयी थी। उम क्षण उसकी पलकें गीली हो आयी थी और उसकी जाखा क सामन घना जध-कार छा आया था। जिस अघेरे म एक के बाद एक मायक की घटनाए व क्षण धुधल धुधल होत चले जा रहे दिखायी दिय थ और दिखायी दिया था पिता का जीण चेहरा जिस चेहर म उसन एक बार भी चमक नहीं

देखी थी। यदि देखी थी तो एक खोज और असफलता। धुधलपन की गति इतनी तीव्र थी कि लगता था कि कुछ ही देर में उसके पिता का छोटा-सा घर, पाच भाई-बहना में मिला परिवार, गाव का सारा माहौल व हमेशा ही बीमार रहने वाली माँ सभी-वै-सभी अदृश्य हो जायेंगे। फिर उसके सामने अडाकार कमरा व पति के अलावा शेष कुछ भी नहीं होगा। मानो वह यही सब कुछ दखन के लिए पदा हुई है। इसने अलावा अच्छा दखना तो अलग, माचना तब उसके लिए गुनाह हो। तब उमन सतपण नत्रा से पति को कुछ इस तरह देखा था जैसे वह अपन इम मूक अभिनय द्वारा बहना चाहती हो—‘आप ठीक कह रहे हैं।’ तभी उमन निश्चय किया था—‘जब नविष्य में वह पति से किसी भी तरह का आग्रह नहीं करेगी। बाई भी बात नहीं कहेगी। उनकी ही तीव्र पर चतनी। अपना सत्र कुछ भूत जायगी, सब कुछ।’

पापा ला दा ना। मैं वहीं न-वही रख लूंगी। नीता पुन जोर देती है।

जिद करती है, पौधा व लिए खुली जगह खुली हवा चाहिए।’ वह कड़ककर कहता है।

“फिजूल में जिद न कर, खाना खा। राना भी कटक उठती है। गौर से पति की आर देखती है। उसे लगता है जम उसने पति को ये बातें मनी नहीं लग रही है।

‘ममी, तू भी अजीब बात करती है।’ नीता बीच में ही तुनक उठती है। उसे बल ही पढात समय पिता की कही बातें याद हो आती है। पिता की ओर दखत हुए कहती है ‘पापा, समझाओ न ममी को। तुम्हीं न ता कहा था—‘आदमी हवा के बिना एक मिनट भी जिंदा नहीं रह सकता। जम इस कमरे में हम रहते हैं वस गमन भी रहेंगे। अगर इस कमरे में हवा नहीं तो हम कस जिंदा रहत है?’

उमका भाया झनझना उठता है। आखा में आसू भर जात है। उसकी आखों के सामने इन सात-आठ वर्षों का सारा अतीत खिच आता है। साचता है नीता ठीक ही कह रही है। जाने कबे जीवित है हम इस अडाकार कमरे में—जिसमें न हवा है और न प्रकाश ही। फिर राना की आर दखता

है पर अधेरे के कारण उसे कुछ भी दिखायी नहीं देता। लेकिन उस एहसास हाना है जैसे वह रो रही है और सिसकिया भर रही है। एकाएक उम लगता है जैसे उमके कमरे की मारी हवा महमा निकल गयी है। अब उसके कमरे में जरा भी हवा नहीं है। हवा के अभाव के कारण उन सबका तम घुट रहा है। वे सभी छटपटा रहे हैं। घबड़ाकर वह खाना छात्रक बाहर चला जाता है।

रानी नीता के गाला पर जोर के दो चपत जड़ देती है। वह फिर जोर से रान लगती है। उसके गाला पर दसा पतल-पतले निशान विलुल नीले हो जाते हैं। पर वह नीता की सनिक भी परवाह किये बिना गीनी पलका से पति का देखती भर रह जाती है।

७३७ एक और कालिदास

शायद अब उहे किसी न कालिदास शब्द का नया जथ बता दिया था जो वे अपने का ऐमा कहत सुन मुस्करात थे या गव का एहमास किया करत थे । वरना तो पहले उनसे किसी न ऐमा कहा नही कि वे उसे मारन ऐसे उतर पडत थे जसे कि वे शाखा पर बैठकर शाखा का काटन वाले कालिदास स भी खतरनाक हा । उनकी ता मारापीटी की कई वारदाते थी । पर रमिका, सावना तथा काली जेडज्या वाली तो एमी थी जिन्हान पूर गाव का हिला दिया था । यह दूसरी बात थी कि गाव की बातें हान व कारण समय के साथ ये बातें आयी-गयी की बन आयी थी । रमिका और सोवना के मामल म ता गाव ने उल्टा उह ही जो फटकारा था—जब तुम्हे मालूम है कि एसा कहन पर वे ऐसा किया करत ह तब तुमने एसा कहा ही क्या ? जबकि काली जेडज्या वाली बात एमी थी जिसने पूरे गाव को उत्तेजित कर डाला था ।

एक ता एक मद द्वारा एक औरत पर हाथ उठाने का मामला था । दूसरा उनका अपना कसूर भी कुछ नही था । वे ता उल्टा उह डाट रही थी जो उसे छेड रहे थे । वे तो कह रही थी—शरम नही आती है र तुम लागे का जा उसे छेड रहे हा । वह अगर किसी को मार देगा ता सब कहय उसने मार दिया । इस समय कोई नही दख रहा है कि य उसे कालिदास

बस, उनकी यही तो फटकार उनके अपने लिए मिरदद बन आयी थी । वेजल न जान क्या समझा कि उसने उनक ऐमा कहते-कहत तब न सिफ दो-तीन धप्पड उह जड दिये, वरन् एसा धक्का द डाला कि बेचारी बहाण हा धडाम से नीचे गिर गयी । वह ता गाया की भिड भिड तथा मार गिया, मार दिया सुन गाव व कई लागे न उह छुना दिया, वरना तो उन्हनि

काली जेडग्या का मार ही टालना था। पर जिता भी अब तक उहनि बर डाला था वही कम नहीं था। जेडग्या का होश नहीं लौट रहा था। जेडग्या व तीना बट उह बरीनाग अस्पताल ल जान का उतर आय थे। बवल की ईजा व राने-पीटन तथा पाव पण तक का उन पर असर नहीं पडा था। वह ता काली जेडग्या का ही पानी व छीटा से हाश लौट आया तथा अपनी चचरी बहन व बेट को बचान उहान यह बहन स इकार बर दिया कि उह बवल न मारा है। बरना ता उनक बट फिर भी उह अस्पताल ले जान पर जामादा थ। तमी ता गाव व लाग न ऐमा की एक लिस्ट तैयार की थी जा उह छेडा करत थे। बशवा दामू रतन का तभी नता आगाह किया था—आइदा व एसा न किया करें

मुझे आज भी याद है वह दिन जे उहान काली जेडग्या का मारा था। तब गाव के लाग बीच-बचाव करान की बातें कर रहे थे। मैं था कि गाव व उन लाग व बार म माच रहा था जा अब तक उह परशान किया करत थे। मुझे केवल म और उह परशान करन वालो म जरा भी जतर नहीं दिखा था। जतर बस यह भर था कि यदि व स्कूल नहीं पढ पाय थ ता

ता दूसर स्कूल जान पर भी स्कूल ठीक से नहीं पढत थे। कुछ एस थ जा ठीक केवल की तरह बुडिया गय थ। तभी ता इन मार माचा व बीच मुझे लगा था इनकी यह स्थिति हा जान के पीछे इनकी मा जिम्मदार है। उनकी मा का ता माच था—बेट का पढा लिखाकर क्या करना। सेती उनक पास गाव मे सबसे ज्यादा है। उनके बेट के लायक जमीन से पदा हा ही जायगा। नमक तल के लायक जदमानी न निकल ही आयगा। पतान पर ता छतरा यह तक ह कि गाव के दूसर बेटा की तरह वह उनसे दूर चला जाय। उनका यही ता साच था जिसके कारण उहान उस तब तक स्कूल नहीं भेजा, जबकि एक दिन मर पिता न उनसे यह नहीं कहा—देख अभी तू लाड-प्यार म उसे विगाड रही ह। आग चलकर जब दूसरा व बट पढ लिखकर बडे बनग और तरा बटा दमरा का बाप उठान लायक रहेगा तब आयगा तेर का होश। देख लना ऐसे मे बटा
 कानिदास नहीं बना ता मेरा नाम बदल,

पिता जी की यही बात मैं भी सुनी थी। उनकी बात न मेर सामने
 अनक प्रश्न खड़े कर दिये थे—उट्ट उट्ट और कालिदास क्या हुआ ? काफी
 दर तक मैं यही साचता रहा था। मौका मिलन पर मैं पिता जी स पूछी
 थी उट्ट उट्ट वाली बात। इस पर उहान बतायी थी वह बात जिसक अनु-
 सार शाखा पर बैठकर शाखा काटन वाले कालिदास की शादी विद्यात्तामा
 मे कमे हुई थी। तब मुझे मालूम नही था कि उट्ट उट्ट करन वाल न ही बाद
 म 'अभिज्ञान शाकुतल' और 'रघुवश की रचना की थी। अयथा ता मैं
 उनसे उमी समय वसी ही जिरह कर डालता जसी मैं पिता जी से गगदत्त
 मढक और प्रियदर्शी साप की कहानी सुनान पर की थी। मन ता उस
 कहानी का सुनत-सुनते पिता जी मे कहा था—आप मुझे ता यह सुना रह ह
 कि गगदत्त मढक अपने दुष्मन मढकवा को मरवान जिस प्रियदर्शन साप को
 ब्रुए पर ज आया उसन बाट म गादत्त क ही परिवार का खाना शुरू कर
 दिया। तब आप जमीन के छाटे मे टुकडे क थगडे क पीछे चाचा का पिटवान
 ननमिह म बाते क्या कर रह हैं

जयकि अर मुझे केवल की बढ़ती उम्र की बाता और अभिज्ञान
 शाकुतल वाले कालिदास के बाग म साचत-सोचते लगता ह—क्या वह
 कालिदास भी एसी ही बात ता करन वाला नही था जसाकि कवल ? क्याकि
 शापी केवल की तय हा पाये या नही, पर होन वाल मसुर से नहेज की उनकी
 माग थी—एक हारमोनियम एक तबला दो दरिया तथा एक बाजे वाला
 चिमटा। वह इमलिर् नही कि इनकी उनफा जरूरत थी, वरन इमलिए
 कि गाव मे किमी के घर कामकाज हान पर य चीजे गाव के लागा का दूसरे
 गावा से मागनी पडती थी। व नही चाहत थ कि उनक गाव क लागा को
 मागन दूम गाव जाना पडे। हालाकि इसानी दष्टि स उनकी य बाते भी
 यी ही थी जसी बातें वे मर मे अक्सर किया करत थ। व ता मूट मे कई
 बाग यहा तक कहा करत थ—दुनिया म जा भी बुर काम आदमी करता है
 वह आदमी स्वय करता है। भला काम ता यदि आदमी भूले भटक करता
 भा है ता वह उससे सिफ जनायी ताकत करवाती है

पर गाव के लडका क लिए उनकी इन बाता की क्या कीमत थी !
 उनके लिए तो उनके दहज की बात और घटा-घटो नदादवी जोर पच-

चूली आदि वर्षों ने पहाड़ा को उनका देखना महत्वपूर्ण था। रही-सही कमर गाव के उम परटा न पूगी कर दी जो अपन जमाने म लगभग केवल से ही थे। वरिक्त कवन म दो कदम आग थे। कवल तो छेडन पर ही दमरा का मारन दौडता था। व तो वेमतलव नी दूमरा को मार दिया करन थे। पर आज व जग्नी हकीकत का भूल गय थे। बुडारे का फायदा उठा उहान झूठमूठ म केवल की शादी की बाते चलायी थी। साथ ही केवल का फाटा मागने वाला पत्र केवल को दिखाया था। इसी स ता उहान कवल क व पोज नदन के कमरा म खिचवाय थे जिसम वे अच्छी खामी दह के बावजूद काटू न बनाय गय थे। उनम उनकी एक मूछ कोयले की कालिख से बनायी गयी थी। दूसरी जार की मूछ के थोडे-बहुत उगे बालो को उस्तरे से पूरी तरह साफ किया गया था। साहब बनाने के चक्कर म उह एक टोप और एक काट पहनाया गया था।

मुझे ता उनक य पोज विशेष जय म दित्राय गये थे। मैं उह ममबदार जा मानता था। उनके पोजा का देख मेरी आखा के सामन के क्षण उभर आय जब काफी बडो उम्र म ज आ, क य सीखत केवल को छोट छोटे बच्चे छेडा करन थे। ऊपर से रही सही कसर उसके उस टीचर न पूरी कर दी जिसन पहले तो इह एक तिन बहद पीटा। फिर इह भरे क्लास कालिदाम एमा घोषित किया कि दा तीन दिन केही जदर सारे स्कूल के बच्चे इह कालिदाम कहन लगे थे। नतीजा यह कि इन्हान फिर स्कूल ही जाना छोड दिया। तभी तो उनक पोजा को देख मुझे लगा था जैसे सामन बरीनाग तक फन जगल म काई आदमी इस समय भी शाखा पर बठकर शाखा को काट रहा है। क्याकि दसवी तक पहुचत-पहुचत पिता जी की बदौलत कालिदास के वार म मुचे काफी कुछ पता चल चुका था। इसलिए मैं तब केवल के बारे म कई दिना तक साचता-मोचता रह गया था। मैं यह भी समझ गया था कि कालिदाम मुनन ही य सिफ यह अथ लगाते हैं—इय कवल जय तर का काई लडकी नहीं दगा। इसी क साथ उनर वार म साचत-साचन मुचे यह भी लगन लगा था कि कालिदाम का तो विद्योत्तमा दिवान वाल पंडित मिल आय थे। इम व भी नहीं मिलेंगे। इम नय कालिदाम का ता एत पंडित मिन आय है जिन्हाने इमनी शादी की उम्मीद का ही लगभग-नाभग यम कर

दिया है। इन पोजी का जो भी देखेगा या इनकी बातें जा भी पुनेगा वह इनके बार में क्या सोचेगा ?

मेरी यह जाशका वास्तव में बटन समय के बीच सही हा आयी। इनके माय के अय दा-दो तीन तीन बच्चों के पिता हो आय। इनकी शादी नहीं हा पायी। इनका भी उन पर अमर यह कि वे जिस किसी से अगल दम-मद्रह दिनों में अपनी शादी होने की बात बिया करत थे। यह शादी की बातें चल भी न रही हो। उनकी इस हालत के पीछे भी उनकी ही मा जिम्मेदार थी। डनौली के पत होने के कारण तथा अपनी जमीन व बल प के जपन सबघा के पत, पाडे तथा जोशी की अच्छी लडकी चाहती थी। अच्छी लडकी का अच्छा पिता उह कौन अपनी लडकी दता। वह तो कोई मजबूर ही ऐसा कर सकता था। फिर जब डनौली के पतपन का उनका सपना टूटा तब तक समय आग निकल गया था। अब तो थोड़े कम सबघो में भी बातें शुरू हाती तो अगला यही सोचता—पढे लिखे गौबरी घाले की तनी उम्र तक शादी न हाने की बात समझ में आती है गाय वाले घर के मामले में अवश्य कुछ-न-कुछ मामला है। नतीजा यह कि उनकी बात जितनी जुगाड से शुरू होती उमसे वही तजी में खत्म हो जाती।

अलबत्ता इस बार में विचित्र बात यह थी कि उनकी रजा तो उनकी शादी की आस छोड चुकी थी जिस किराी के सामान अब या ता रोने लगती थी या बटे की इम दशा के पीछे जिम्मेदारी अपने पर थोपते हुए अपने को कोसने लगती थी। पर वाली जेडड्या थी कि हिम्मत हारी हुई नहीं थी। अकमर कहा करती थी—अरे यहा तो बेबल में गय—भीतो की अब तक शादिया होती रही है क्या बेशवा की शादी नहीं हुई जा खुद निरक्षर ता है ही, साय ही गरीब भी ? क्या रता की शादी नहीं हुई जा बदर-मा है, वह कितना पढा लिखा था ? यह तो जरा जमाना ही ऐसा आ गया जा लडकी लडकिया को दखने का रिवाज हो आया, घरना हमार जमान में अपनी होने वाली को किसने देखा किरा अपने हागे घात का देखा ? यह तो इसकी भी शादी हो जाती अगर इनकी मा मेरी बात मानती। अपनी जमीन और अपने पतपने का इस नाज था। पौ ऐसा

बाप हाता है जा जमीन का लडकी द ? गमा का ता गरीब ही दता है अपनी लडकी । गरीब भी बसी गरीबी म जिसम लडकी का हाथ पीला करना भा दूभर हा । क्या हाता अगर थोडे कम मबधा म इमनी शानी हा जानी । वहू-बट और पान-पातिया वाली ता होती

शायद यही कारण था कि हर दान्तीन महीना बाद कार्ड न-का रिश्ता ल, वे फिर-फिर केवल की शादी की उम्मीद बधा दती थी । उनने इन रिश्ता का अब अमर यह था कि केवल अब उनक उठ कहन पर उठन थ बठ कहन पर बैठन थे । पता नही ऐसा करक व अपने द्वारा काली जेडग्या की मारने का पछनावा किया करत थे या वे यह समझ चुके थे कि गाव म एकमात्र व ही ऐसी है जा उनक लिए विद्यात्मा का षोज सकती हैं ।

मन्मथ यह भी आश्चय की बात थी कि उनकी विद्योत्तमा को उहनि ही खोजा । इम वान का पता मुझे तब चला जने एक माझ गाव का गन मृषे बुलाने जन्मान आया । व वही रान था जिमने उनका काटू न बनाकर फाटा त्रिचान म सबसे बडी भूमिका निभायी थी । उसी न मुझे बताया कि केवल की शादी काली जेडग्या न पक्की कर डाली है । परमा उनकी शादी म शरीक हान तुपे बुलाया है

मैं ता इम समाचार का सुन मार खुशी क उछन पडा था । जानकर इमलिए कि जिमन मुझे चिढान हतु उनक वाट न-याज दिखाय थ वही आज मेरे सामन इम समाचार के साथ गडा था । ऊपर से वह मेर घर की चीजा का एम दय रहा था जम कि उसन मेर जस माप्रारण घर की भी चीजें दखी न हा । वैसे भी केवल व उमम अतर यह था कि वह जैसे तैमे मास्टरा की बदौलत मात तक पास हा गया था । आठवी म उस पाम कराना मास्टरा के भी बस की बात नही थी । यह अलग बात थी कि वह काली जेडग्या द्वाग केवल की शादी तय करन की वान को एस सुना रहा था जस कि वह इशारा-ही इशारा म कहना चाहता हा—उन्होंने ऐसे पाणज की शादी तय करवाकर गन्त काम किया है । क्याकि उसन बताया था— वह ता उहान केवल का लडकी क पिता का गाव स बहुत दूर दिखाया । बरना यदि वह एक बार गाव जाकर उह दखता ता शायद ही हा करता ।

इमन अलावा उसन केवल और केवल के हान वाले समुर के प्रश्नोत्तरा को ऐसे मृनाया जैसे कि वे कालिदाम और विद्यात्तमा के प्रश्नात्तरा स कम न हो। बकौल उमके केवन म उमके हान वाले समुर का पहला प्रश्न था—
 'आपके पाम कितनी जमीन ह ?'

भना इस प्रश्न के उत्तर म केवल कसे मार खाता, उसे तो अपनी जमीन तो अलग, पूरे गाव के लागा की जमीन का पूता था कि किसके पास कितनी रकमी जमीन है, कितनी किसके पाम खबर जमीन है, कितनी किसके पाम मितवान जमीन है। इमीनिग केवल न उस छोटे म प्रश्न के जवाब म यह जतला दिया कि उसे गाव की एक-एक बात की जानकारि है। मक बाद उनम दूसरा प्रश्न पूछा गया था—
 'तुम्हारा गाव में अपना काड है ?'

'मरा गाव म अपना काड नहीं है। केवल का उत्तर था। इस उत्तर की रही-मही कसर काली जेडज्या न पूरी कर दी थी—भला इसका अपना ही काई होता ता क्या इसकी शादी अब तक नहीं हाती ? इसकी विधवा भा इसकी शादी कसे ठहराती ? इसके लिए तो मद चाहिए। अब तुम्ही देखा क्या कमी है इसमे। अच्छी खासी देह है। अच्छी खासी समय है। नासमझ विधवा का बटा टुआ। वरना तो यह भी पढा लिखा हाता। इमी कारण उनमे तीसरा प्रश्न पूछा गया था—
 'केवल, जोर बात तो छाडा, तुम यह बताआ, तुम आगे क्या करना चाहन हो ?'

जादमी दुनिया में अपन आप करता ही क्या है ? वह तो वही करता ह जा ऊपर वाला उमसे कराता है।' उनका उत्तर था। उनके इसी उत्तर का मुन नयी विद्यात्तमा क पिता न हामी भरी थी। तभी ता तब रतन की बातें मुन में और मेरी पत्नी दाना हसन-हमत लाटपाट हा जाय थ। मैं ता तब मही मोचता माचता रह गया था—क्या केवल के उत्तरा क पीछे उम माटी का जसर था जहा कालिदाम न माधना की थी या यह केवन की अपनी निजी मूझ थी ? रतन अब मुझमे और बातें कर रहा था। पर में सिफ केवल के बारे म साच रहा था। खाना खाकर सोत-सात तक तो मेरी यह स्थिति हा आयी थी कि जमे केवल और काली जेडज्या टकटकी बाधे मेरी वाट जाह रह है।

न्य वेरन क धुनिअथ की रश्म क मुतावित रि गात्रम्य रि गात्रम्य
 गुरु हा आया था। मगर मैं था नि मुहुट बाधे फरन के पास दडा हार
 भी रग नहीं था। मैं क्या था तलं फरन पटा पटा ऊनी ऊनी बतार-बद
 पलागिया था दगा करा थ। एमा त। रि एम मरा ही दह स्थिति
 थी। एम मराही यगे स्थिति थी। उगे अलावा माने बारातिया क हाथ
 पाव पूने हूणथ एम एम वात का जरा भी थि बाग नहीं था रि औरता और
 गात्रिया ती छड्डगनी ए वा र एव न मयम वरन मराग। उम ता एन गिना
 एमा गुस्मा आ लग था रि गुस्म की स्थिति न उह मरातना कटिन हा
 आना था। ऊरर न मार की एतान म एम पता तल चुवा था रि लडरी क
 पिता रो रेचल न अमा एरण हान का पता ला चुवा है। दुनान एर न गाय
 पितान पिलात एम दमा वात पूछ डाली थी। अलएता उगन हम यह
 भी बता दिया था रि एचारी की दा पटिया शाभी क छ महीना क अदन
 ही विधवा हा आयी। बरना क एमा बर चाटे ही अपनी लडकी के लिए
 बूढन। वह ता दर्जा आठ पाम है। हा उमका बाया हाथ अवश्य थाडा
 कमजार है। इसीलिए हम परशान थ कि किनी भी ओर स गडबड कर दन
 पर हम बात बँम निभायेंगे। कबल से खतरा था कि गुस्से म जाकर यह कह
 दें—एमी ही रह गयी क्या मेरे लिए? लडगी वाला के मना कर दन पर
 खतरा था कि गुस्मा जा जान की स्थिति म हम कबल का कैसे सभानेगे।

वसे उनकी बारात मे उनकी उम्र का एक मैं था। बाकी ता सार
 के सार सात-आठ युजुग थे। एमा इमलिए कि कम उम्र के लोगो के
 बाराती हाने की स्थिति म बचवानी वाता के हा आन का खतरा था।
 वह ता मेर कहन पर केवल न बडी बारात की जिद छोड दी, बरना ता के
 अपनी बारात म पूरे गाव का ले जाना चाहत थे। वे इस बात को ममझे
 नहीं थे, पूरे गाव का ल जाने पर वे लाग भी बाराती बन जायेंगे जा अभी तक
 उनके काटू नी पोजा की छाती से लगाये हुए थे। रससे ता यह तक खतरा
 था कि कही काली जेडग्या का किया कराया चौपट न हो जाय। इसीलिए
 उनकी बात का मैं तीव्र विराध किया था। मेरी बात के मान भी गय।
 मेरी बातें अक्सर मान भी जात थे। फिर उनके बारात की सबसे बडी
 समस्या यह भी थी कि पहल ता बलिष्ठ दह के कारण उनका भोजन ही

अच्छा था। ऊपर से उनको खाने में देर लगती थी। पक्ति में बैठकर दूसरे खाने वाला के लिए वे हमेशा सिरदब रहा करते थे। पक्ति में एक के भी खात रहने की स्थिति में दूसरे उठ जो नहीं सकते थे। इसका वारे में भी मैं तर्कीब निकाली थी। वे आज के दिन उतनी ही देर तक खाना खाएंगे जब तक कि खाना खाते-खाते मेरा बाया हाथ, ऊपर न उठ आये यानी कि केवल का अच्छी तरह समझाया गया था कि आज क दिन भूखा रहकर उह जिंदगी भर खिलाने वाली मिलने वाली है।

इधर अब धुलिअध के शास्त्राथ जाँरो पर थे। पहल ता हमार ही पडित जी बनारस के शास्त्री थ। ऊपर स लडकी वाला का पडित और तज निकल आया। वे दोना एक-दूसर को नीचा दिखान पर उतर जाय। जबकि हम बारातिया की स्थिति यह थी कि अदस्नी घबराहट के कारण हम सब एक-दूसरे का मुह ताक रहे थे। सतोप की बात कि हम लोगो के उतरे चेहरो का अथ लडकी वाला ने सारे दिन की दुगम पवतीय यात्रा का लयाया। पूरे अटठारह मील का पहाडी रास्ता था। इस पर भी चार मील की तो एक एसी चढाई कि उसे पार करने में कई बूढा के हाथ-पाव फूल आये थे। फिर मेरी ता स्थिति और भी खराब थी। मुझे न सिफ उनकी शान्ती की खुशी जाहिर करनी पड रही थी। वरन लडकिया और जोरता की छेड़छानियो का अकेल मुझे जवाब दना पड रहा था। पर शुकर कि धुलिअध की रश्म तो पूरी हो ही आयी। साथ ही मेर द्वारा बाया हाथ उठाने ही केवल न खाना सबमुच में ही छोड दिया। हालाकि हममें सबस मयाने रघुवर चाचा गलती से यह कह ही बठे—‘केवल आज के दिन ता छक्कर खाना खाते है।’

इसलिए उह खाना न खात दय हम सब फूने न समाय थ। हमारी नजरा में अब हमने आधा यन जीत लिया था। तभी ता खाना खाकर मैंन केवल के समुर जी के मकान और उनके गाव का पूरे सतोप स दखा था। उनका मकान गँसो की राशनी में आस-पास के अय मकाना की तुलना में अच्छा घर था। सयोगवश कयादान की रश्म भी खाना खाने के तुरत बाद शुरू होनी थी। इसलिए हम अब कयादान की तयारी में जुट आये। पर कयादान के लिए उनकी विद्यातमा को लाना ही था कि मेरा ता

माया ही झनगता उठा। उमकी मा की पनरें गोनी थी। एउ उमकी हा क्या लानी अय गभी भोगना की यही स्थिति थी। उनकी पनका न ता यह तय मनरा न आया था कि कही कबल की अगनियन का पता ता नहीं चल आया १। छाटी-मी रिफ्तदागिया क कारण एमा पता मन ही आना था। पर यहा यह बान नहीं थी। यहा ता दुवानगर की सूचना वाली बान थी। उन्हें अपनी दा चिटियाआ क कयापाना की यात्रा हा आयी थी। एमा का ननीजा था कि कयापान भुक्तान तक ता मुझे एमा नगन लगा जम बाइ मुझम वह रहा है—यही ता य आमू है जिनकी वजह म तुम्हार केवल का य अपनी लडकी द रह है वरना ता य भी अपनी लडकी नहीं लेन। दुय और मजबूरी म ही तो आदमी एमा करता है। यह अलग बान है कि धरती क लाग न ता तय ही कालिदास की उट्ट-उट्ट की अमलियत का समझे और न आज। दुनिया न कालिदासो और वाल्मीकिया क दद का ममपन की वागिश की ही कब है? भार् एमा कौन-मा युग रहा है जय आम आदमी और सभ्राना की भापा म अतर नहीं रहा है? उम समय क्या आम आदमी ससृत बालता था? वह ता उम समय उट्ट उट्ट बानी पाली ही बालता था। आम आदमी का बटा सभ्रानो की भापा म उट्ट उट्ट कब बाल सका ह? यही तो है उसका अभाग। वरना धरती म एसा कौन प्राणी है जो मृत्यु से डरता नहीं है? मृत्यु म ता स्वय काल तक डरता है। क्या तुमन काई एमा पागल देखा है जो जलती आग या चलती बस तथा रेल के आग कूद पडे? ऐमा ता सिफ जिदगी से हारा हुआ आदमी करता है। पागल नहीं

इतना ता क्या, धीर धीरे तो मेरी यह स्थिति हा आयी कि केवल की शादी की रश्म का भागीदार होते हुए मैं बहा नहीं था। उधर शादी की रश्म के फेरे तक हो जाय थ। इधर मैं केशव रतन तथा दामू की यादो म उलझ गया था। रही-सही कमर कबल के समुराल के उस नथुवा न पूरी कर दी जिसे लोग कबल की ही तरह छोड रहे थे। उसके कारण तो भुजे यहा तक लगन लगा जैसे केवल कयादान की रश्मा के बीच उसे बीच-बीच मे देखकर मुझसे कहन लगा है—अरे तू अभी भी नहीं समझा कि कालिदास शाखा पर बैठकर शाखा का काटने वाला आदमी नहीं था। अगर वह एमा

झी आदमी होता तो वह ठीक उतनी ही देर मौनी कसे रहा जितनी दर तक विद्योत्तमा उमकी अपनी नहीं हा आयी ? हकीकत यह थी कि वह पागल नहीं था । वह तो ऐसा आम आदमी था जिसे यदि विद्योत्तमा जमी ठोकर लग आये तो वह राम के पदा हान स पहन ही राम की मरचना वाल्मीकि की तरह कर डाने । गरीब का तो हर बेटा कालिदास हुआ करता है । कमर सिफ ठोकर मर की हुआ करती है । यह अलग बात है कि विद्यात्तमा जसी ठोकरें कभी कभी या विरला को ही लग पाती है

आज बेबल की शांती को हुए पंद्रह वष हो आथ है । इन वर्षों में वे भले ही अभिज्ञान शाकुल' जैसा कोई बड़ा काम तो कर नहीं पाये पर वे इनने तो फिर भी काबिल हो ही आये थे कि दर्जा पाच तक अपने दो बच्चा का हिमाव व हिंदी आदि पढा सकें । व तो अब अपन बच्चो के साथ ऐसे लग रहते थे जैसे अपना नाम लिखने और पढन वाले साक्षरा का कोसो पीछे छाड चुके हो तथा वे यह समझ गये हा कि उट्ट-उट्ट स उट्ट-उट्ट कहन लायक भल ही वे न बन पायें, पर बच्चा को ऐसा कैसे बनाया जा सकता है, वे अच्छी तरह जान चुके हैं । इसीलिए मैं जब भी उह दखता था मेरे सामने प्रश्न खडा हो आता था—यदि वे आज के नये कालिदास हैं तो उनकी वह विद्योत्तमा कौसी है जिमने इह बिना ठोकर मार ही इतना बदल दिया ?

●●● भूचाल

यकीन मानिए, यह कहानी 'भूचाल' वही कहानी है जिस में अठारह साल पहले एक रात पूरी करने बैठा था। मेर साथ तब एक अजीब हादसा गुजरा। उसके बाद मैं इस कहानी को अब तक भी पूरा नहीं कर पाया। हा, जब भी पुरानी कहानिया की पाहुलिपिया के बीच में इस कहानी को देखता, दुबारा पूरा करने का लालच हो जाता। मगर जैसे ही इसको पूरा करने का मूड बनान का प्रयास करता, मैं अदर-ही-अदर काप उठता। हमेशा लगता, जैसे भूचाल का जलजला अब आया अब आया तथा ऊपर से एक दीवार मेर ऊपर आ गिरी। रह रहकर आखा क सामन अठारह साल पहले की वह रात खिच जाती। उस रात सिगरेट का पूरा काटा रख तथा तब चाय का डोज चढा मैं अपने बिस्तर में चला गया। विचारा के तान-वान क बीच उन क्षणा की कल्पना कर रहा था कि जमीन के अदर के लावे या जाग पर पानी एकाएक गिर पडे कयाकि लोगो का विश्वास है कि भूचाल इसी कारण आता है। लागा का यह भी कहना है कि धरती क अदर की पदा हुई ऐसे क्षणो की गस धरती क अदर के बल्टो के जरिये पास हाकर समुद्र में गिर जाय ता ठीक है बरना यह जमीन का तोटकर बाहर निकलती है। तब उस रात मैं अभी इन्ही विचारा में गोत लगा रहा था कि सचमुच ही भूचाल आ गया। धड धड धडाम की वेहद भयानक आवाज से धरती तब काप उठी थी। मगर मैं पहले ता एक दो पल यही निश्चय नहीं कर पाया कि यह मेरी कल्पना का परिणाम है या हकीकत है? पर तभी चारा आर भूचाल भूचाल की चीत्कार तथा सटसा बिजली के गुल हो जान पर ही मैं भागा था बाहर की ओर। मूसलाधार बारिश हो रही थी। फिर लौटकर घरो में

जाने का माहस किसी म नहीं था। उस रात तब दिल्ली नगरी के लोग पहले झटके को भूल अभी बिस्तर पर ठीक तरह से लेट भी नहीं पाये थे कि दुबारा पहले जैसा ही झटका आया था। इतना ही नहीं उस रात तब जहा थोड़ी थोड़ी देर बाद पाच छह हत्के झटके आय थे, वही उसके बाद दिल्ली पूर दो महीने तक लगातार भूचाल के झटके महसूस करती रही थी।

इस अजीब हादसे के बाद जहा मैं इस कहानी का दुबारा लिखने का साहस नहीं बटार पाया वही उस भयावनी रात के बाद मैं एक रात भी सो नहीं सका। हर क्षण, हर पल एक अजीब से मूड मे रहता। हमेशा इसी प्रयास म रहता, ऐसी वस्तु खोज निकालू जिससे भूचाल की पूव सूचना दुनिया का दे सकू। मगर लाख प्रयत्न के बावजूद मैं ऐसा नहीं कर पाया। यह बात दूसरी रही कि इस प्रयास के कारण अब मैं सारी दुनिया मे इधर-उधर भटकता फिरता हू। यह भी एक विचित्र सयोग होता है कि जब कभी दुनिया के किसी हिस्से म भूचाल आता है, भूचाल आने के क्षण हमेशा मैं वही होता हू। तब ऐसे क्षणो मे मेरी दशा बडी विचित्र हो जाती है। क्योंकि एक जोर तो अपनी असफलता के प्रति दुखी होता हू, दूसरी ओर इस अथक प्रयास के बावजूद भूचाल आने के इतने कम समय पहले पता चलता है कि चाहते हुए हर बार कुछ नहीं कर पाता। भला दा-तीन मिनट म किया भी क्या जा सकता ह? वह भी पता इसलिए चल पाना है कि जब भी सडका के आवारा कुत्ता को एक निश्चित दिशा की ओर मुह कर तीमे स्वर म भीकत हुए पाता ता घबरा उठता।

इतना ही नहीं, तब एस क्षणा चूहा को खोजता। लगभग सार चूहे एक साथ घबराय विलो से निकलकर खुली जगहो की ओर दौडत हात। तब मुझे याद आना कुत्ता के माय भुगें व मुर्गिया की लगातार वाग। तब ऐसे क्षणा किसी भी कुत्ते को भीकत देखकर मेरा माथा उसके पावा की आर जा चुकता है वही मेरा जी आ मग्लानि से भग जाता। एक आर समाज इह आवारा और हानिकारक समझ जहर द तडफा-तडफाकर या गोली दागकर मौन के घाट उतागता है दूसरी आर तब मेरा जी चाहता कुत्तो के प्रति आभार प्रकट कर। मगर होना यह नि मुने कुत्ता नफरत भरी आखो से खता हुआ लगता है और इशारा-ही इशारो मे एमे लगता जस कहना

चाहता है—मिया भगवान के नाम पर रहम करो ! जानवर होने के कारण
 लाग मेर भौंवन का अथ समझ नहीं पा रहे है । तुम ता जरा जल्दी करा ।
 चिल्लाओ भूचाल भूचाल ताकि आस-पास के दरवाजे भले ही सुरक्षित
 न रह पाये कम से कम इन दरवाजा के अंदर रहने वाले वे हाथ ता सुरक्षित
 रह जाये जिनके बल पर हम यह आशा ता सजाए रख सके कि कभी ये हाथ
 बस ही दरवाजे फिर बना डालगे जिनके टुकड़ा से हम पला करत थ ।

यकीन मानिए ऐसा एक बार नहीं लगभग हर बार ही हाता । तब
 आवारा कुत्ता द्वारा कराये गये कतव्य-बोध के कारण मैं भूचाल भूचाल
 चीखता चिल्लाता कुछ ही क्षणा में सड़का सड़का, गलियो गलिया दौड़ता
 हू । मगर अपमोस कि मेरी चीख सुन भले ही लोग खिडकी खोल बाहर
 झाक लत मुझे पागल समझ मेरी चीख भरी पूव सूचना पर यकीन नहीं
 करत । तब अवश्य चीखत चिल्लात जब सचमुच ही भूचाल आचुका हाता,
 तब उन क्षणा में आम-पाम चिली क्वेटा चीन, जापान तथा ईरान आदि
 जमी बिनाशलीला एक बार और घट चुकी हाती । चारा आर एक साथ
 सड़का, हजारों चीखें सुन मैं जहा काप उठता वही पबरानर पागला की
 तरह अपन घर की आर लौटता । मगर आमपास के घडहंगे बढेर हुई
 लाशा से टकरान के कारण स्वय भी चीख उठता—बचाओ बचाओ । एसे
 क्षणा, भरी पत्नी हडबडानर मुझे झकझारती । तब मरी पत्नी मुझे मपन
 की अवस्था में समथ मुझे चेतनावस्था में लान के लिए तामडताड काशिश
 करती । तब मुझे लगता, मैंकहो-हूजाग म्रडहरा में टकरान के कारण मर
 अग प्रत्यग में जहा तीखा दद है वही मर शरीर में बह रक्त के कारण
 विपत्तिपाट है जा जमी लाशा की बराहट के बाच मर शरीर के साथ अ
 धिपका था ।

थाडी दर बाग तब पत्नी फिर सा जाती । शायद इग हकीकत का उसने
 मरी आत्म समझ लिया है । मगर मैं फिर सा नहीं पाता । घटा घटा फिर
 भूचाल के बार में साधता आगिर यह बला क्या है जा एक ता तिन का
 आभा रात का यह जहाँ अधिक भयावह हाता है वही रात के मनाए में
 इनका दानान मिनट पहन पता चल पाता है तिन का नती । दूगरी इग
 हाटपा का एगा प्रभाव क्या कि आत्मा अपना के माहजान में ग तब उबर-

कर केवल अपन तक ही सिमट आता है। आदमी पत्नी, माता पिता तथा बच्चा के प्रति नैसर्गिक लगाव तक को भूल, केवल अपनी ही प्राण रक्षा पर उतर आता है। मगर उत्तर कुछ भी खाज नहीं पाता। यह बात दूसरी है कि ऐसे कर्टे क्षणा में अपनी पुरानी इस कहानी को पूरा करने की कल्पना के बीच मेरे सारे शरीर में कपकपी छूट जाती। रह रहकर आखा के सामने व क्षण उभर आता जब अठारह साल पहले दिल्ली के काफी लाग तबुओ के नीचे पूरे दो महीने रातों बिताने का विवश हुए थे। फिर इस बार तो हृद ही हो गयी। बहुत ही साहस बटोरकर मैंने पुरानी कहानी की पाठलिपि को उठा थोड़ा बहुत उस पर साचा ही था कि पुन भूचाल आ खडा हुआ। यकीन मानिए, मेरी इस कहानी के साथ कई बार ऐसा ही कुछ हुआ है।

इसलिए मैं सोचता हूँ—जब इस भारत भूमि में भगवान का नाम ले किसी भी काम के पूरा हो मरन का विश्वास है ता फिर उसी भगवान से हाथ जोड़ प्रार्थना क्या न की जाय कि जब तक यह कहानी पूरी न हा जब तक इस कहानी को दुनिया के अधिकांश लोग पढ न ल, तब तक बम-से-बम फिर ऐसा न हा। इसीलिए इसी प्रार्थना के साथ मैं इस पुरानी कहानी का पुन उठाता हूँ।

उस रात जब पहली बार भूचाल का झटका आया, आशुताप घर पर नहीं था। घर में ज्वेली विजया थी। वह एमी विजया जा बिना महारा दिया बिस्तर में हिल तक नहीं सकती थी। उस पर भी दा कमरा तथा एक ट्राइगलम वाला फ्लट इतना बड़ा कि जिममें उसका बसे ही दम घुटना था। तब ऐसे ही क्षणों में आया था—उस वार का भूचाल। लाग तब चीखत-खिरलान अपने-अपने घरों में बाहर भागे थे। मगर तब विजया क्या कर सकती? केवल घिसट घिसटकर दरवाजे तक ही आ पायी थी। पता नहीं उम क्षण उसमें इतनी शक्ति कहा से आ गयी थी। यह बात दूसरी थी कि इसमें आगे वह जा नहीं सकता थी क्योंकि आशुताप उमक लिए दवा न जान समय दरवाजे बाहर में बंद कर गया था।

वैम डॉक्टर की दुकान अधिक दूर नहीं थी। मुश्किल से उसक फ्लट में पाच-मात मिनट का रास्ता था। मगर ताज्जुब कि इस वार उस लौटने

मे काफी समय लग गया। एक ता घर व ही जदर सिमट रहन से तग आकर टहनन कुछ आग निकल गया था दूगर मन बहलान का उस अच्छा अवमर मिन गया था। तीम दिना से विजया का इलाज करने व कारण डॉक्टर भी यह तव जान चुका था कि उमका मरीज जीर सब कुछ सह सकता है पर इम बात का जरा भी सह नहीं सकता कि उमका आशुताप उमस अधिक दर दूर रह। इसीलिए वह उसे बिना लाइन भी दवा द दिया करता था जबकि आज पहला मौका एसा था कि डाक्टर मक्खिया मारता सा ग्राहक का इतजार कर रहा था। पर इमसे क्या आज ता आशुताप का मन थाडा टहलने को वेचन था। फिर दूसरी बात यह हुई कि थाडा आगे निकलत ही जैसे भूचाल का झटका आया वसे ही विजली गुल हा गयी। उस पर भी बात यह कि भागत भागत वह बच इसलिये गया कि उसन सुन रखा था थटक के बाद घबराहट म यदि काई गिर पडे ता गिरन वान का वह अग वकार हो जाता है जा जमीन स पहुने टकराता है। जबकि यह घारणा ववल जलजने के दौरान क ही लिए थी तवे समय क लिए नहीं। फिर टाग की वमजारी क कारण वह वमे भी तज दौट नहीं सकता था।

ठीक य ही बाते विजया ने भी उम क्षण माची थी जब आशुताप न घबराहट म दरवाजा खोला था। बल्कि तव वह दरवाजे स कुछ फटर झटके क साथ जा बैठी थी। एक आर जब आशुताप पागला की तरह चिल्लाया था—विजया विजया—वही वह भी प्रत्युत्तर मे पूरी शक्ति मे चिल्लायी थी। वास्तविकता का पता संगत ही दाना न भवगकर तव एक दूसरे का अपनी-अपनी बाहो म भर दिया था। विजया के अग प्रत्यग म अपन एकमात्र महार के मिन जान का जहा प्रमनता थी वही आशुताप के अग प्रत्यग म जहा आत्मग्लानि थी, वही उसकी जाखो के आगे दम महीने पहले के वे क्षण उभर आ रह थे जब स्कूटर एकसीडट क वाट पूर तीन महीने उसक हाथ व पाव म प्लास्टर चढा रहा था तव विजया न क्या कुछ नहीं किया था। तभी ता उसकी लगन व सेवा का दख अगल-वगत के वेड वाला न आशुताप की मा से कहा था ध्य है मा जाप जो आपको इस जमान म भी ऐसी बहु मिली है। हालाकि वस्तुस्थिति यह थी कि माता पिता भाइ-बहन विजया की सूरत स जहा नफरत करत थ वही व उसके

कारण आशुताप तक की भल चुबं थे। यह बात दूसरी थी कि मा की वह ममता मा का वहा तक प्रीच लायी थी जिसने दुनिया की सामान्य माओ की तरह नह आशुताप का दूध पिलाया था।

पर अब तो मामला उट्टा था। आशुताप की जगह बीमार अब विजया थी। विजया भी वह जिसका एहसाना मे वह दबा हुआ था। भला अपनी निजी जमा पूजी उत्तम कर जेवग तक को प्रेच आशुताप का इलाज करगना आसान नही था। उस पर भी हर पल, हर क्षण उसी के सिरहाने या पावो की आर वैठी रहती थी। क्याकि अरवपति की बटी हाने के कारण, उसके एक इशार भर से इतने रुपये आ सकते थे कि जिनका बल पर वह एक तो क्या, तीन-तीन, चार चार नौकर तक आशुतोप की सेवा म रख सकती थी। फिर उसके पिता न कहा नी था 'बेटी, तुने मेरी बात न मान भले ही यह शादी कर डाली है मगर याद रखना, दूसरो के आगे हाथ मत फैलाना क्याकि मुझे सदेह है कि तगा पति इतन साधन नही जुटा पायगा जितने तू ।' पिता के इन्ही शब्दा का तो प्रतिफल यह था कि विकट से विकट स्थिति म पिता के आगे हाथ न फैलाने को जहा उसन प्रतिना कर डाली थी वही अपनी बीमारी की स्थिति म पति का डगमगाते देख कडे शब्दा म उसने कहा था, 'छवरदार पिता जी को मेरी बीमारी की सूचना नही दना। जानत हा इम सूचना का अर्थ यह हागा कि तुम्ह पसा की जरूरत है। वने ऐसे विकट क्षणो मे कौन नही चाहता कि उसके आपरेशन से पहले अपने लाग उसके पास हा। पर मैं नही चाहती कि जीवन के इन अंतिम क्षणा म आपको जयमानित होन देखू।'

तब आशुताप अवाक-मा विजया का मुह ताकता रह गया था। वसे एसा कहने के पीछे उसका यह आशय कदापि नही था। उसन तो अत्यंत सहजता मे यह बात इसलिए कही थी कि कही आपरेशन मे पहले विजया अपन माता पिता, भाई बहनो का देखना ता नही चाहती है, क्याकि डॉक्टरा न उसे स्पष्ट कह दिया था वस तो इनका बचने की जरा भी उम्मीद नही है पर अच्छा यह है कि ईश्वर पर भरोसा कर आपरेशन कर दिया जाय। ऐसी मानसिकता के बीच विजया के उन शब्दा न जहा उसके रोम रोम का शकणोर दिया था वही उमका मन म रह रहकर केवल यही

विचार आ रहे थे कि चाहे कुछ भी करना पड़े पर इसके मन में यह विचार न आय कि पसा की बजह से इसके इलाज में कमी जा गयी है। मगर लाख प्रयत्न करने पर भी कोई उपाय उस नहीं समझ आ रहा था। क्योंकि नौकरी के अलावा अपनी आय के अर्थ साधन लेखन को वह दस हजार रुपये में एक प्रकाशक के हाथों इस शत पर बंध चुका था कि अगले पांच वर्षों में वह जितना भी लिखेगा—वह केवल उसे ही देगा और यदि इन पांच वर्षों में वह प्रकाशक को तीन उपयुक्त तथा चार अर्थ कृतियाँ नहीं देगा तो उसके अब तक के सारे लेखन का कापीराइट स्वतः ही प्रकाशक के हाथ में चला जायगा। हाँ मृत्यु की स्थिति अपवाद है।

वैसे यह बात किसी और समय की हाती तो आशुताप शायद ही इस शत में स्वीकारता। क्योंकि उसका आदर्श जहाँ चाणक्य का गुरु शकटार था वही वह लिखके था—जा जपन बच्चा व पत्नी की भूख मिटाने के लिए कठिन संकठिन परिश्रम करते हुए इस स्थिति तक तो पहुँच पाया कि अपनी पत्नी तथा बच्चों का अपन उन मित्रों के संरक्षण में छोड़ दे—जिन पर उस विश्वास था कि वे परिवार के मददगार की तरह उसकी बचती का नाजायज फायदा नहीं उठावेंगे। मगर बावजूद इसके उसने विक्रम सस्ता बाजारू साहित्य लिखना नहीं स्वीकार किया। जबकि विजया के इलाज की बचती एमी थी कि आशुताप के पास इमकं अलावा और चारा न था। हालाँकि करारनामों पर हस्ताक्षर करते समय उसका मन में अपन एक महान् यागी रचनाकार की सलाह हावी हो आयी थी कि सस्त किस्म के तथा जामूसी उपयुक्त लिखो और प्रति उपयुक्त तीन हजार पत्तों में लिखो। इस बात की चिन्ता न कर कि उपयुक्त किसके नाम में लिखे। किंतु बावजूद इसके उसने अपन प्रकाशक का शर्तों का इसलिए स्वीकारा कि कम-में-कम वहाँ अपनी मनमर्जी का लिखन की पूरी आजागी तो थी। जबकि मित्र की सलाह में तो विक्रम के अलावा और कुछ नहीं था। फिर इतना सब कुछ कर चुकने पर विजया द्वारा कही बात न तो उस जड़ से ही हिना दिया था। भय ही तब वह काफी दूर तक विजया के पास अस्पताल में बड़े-बड़े इधर उधर की बातें करता रहा। पर उसका मन में बार-बार केवल यही प्रश्न आ खड़े हो रहे थे कि यह सब उसकी आर्थिक स्थिति का परिणाम

है। फिर दस हजार की पूजा है भी कितनी? यदि इनसे भी आगे जरूरत पड़ जाये तो? तभी तो अस्पताल से घर लौट एकांत पा उसने उस रात वह उपयाम लिखा था जिसे फाड़कर टुकड़े टुकड़े करत विजया न कहा था, "जब एक मा अपने जिस्म के टुकड़े अपन बच्चा का अपन से अलग होते देख तथा पति के आदेशानुसार घर म रहकर भी अपन इष्ट की साधना म भागीदार बनन का सपना सजा सकती है तो क्या मैं इतनी अभागिनी हू कि "

अब विजली आ चुकी थी। सागर शहर म छाया भयावह कुहराम अब भूचाल की चर्चा म बदल चुका था। लगभग सभी लाग अपने-अपन घरा म लौट चुके थे। अलबत्ता कभी कभार मडक पर एक दा आदमियो के चलने की ध्वनि साफ सुनायी द रही थी। मजे की बात यह कि झटके के बीच हिली धरती, दरवाजा तथा खिड़किया के खटखटाहट की किसी का याद नहीं थी क्योंकि धड़ धड़ घटाम की प्रलयाकारी आवाज के सामने य सब फीके थ। आशुतोष भी विजया का सहारा देत हुए पुन बिस्तर पर लिटा चुका था। मगर विजया अभी भी इतनी डरी हुई थी कि दरवाजा खुला ही रटन की जिद कर रही थी। आशुतोष भूचाल के झटके के क्षण घर पर न होने के प्रति दुःख प्रकट कर रहा था। जबकि विजया भूचाल का मृत्यु का प्राकृतिक महाविनाशकारी रूप बताने हुए तक कर रही थी कि मृत्यु एक ऐसा प्रत्यय है जिसे ब्रह्मांड के प्रत्येक प्राणी का अकेले वर्ण करना पड़ता है। ठीक इसी तरह भूचाल की भी ऐसी भयावहता है कि प्रत्येक प्राणी इसके दौरान एकाकी हो जाता है। तब फिर आपक इस क्षण घर पर रहने या न रहने का अर्थ ही क्या जाना?

पर आशुतोष था कि इस बात को नहीं मानत हुए दुनिया भर के त्याग के उदाहरण द रहा था। इसी तरह इन वैचारिक आदान प्रदाना म काफी समय हो गया। बल्कि धीरे धीरे दरवाजों से बाहर दिखन वाली सड़क जहा सुनसान हो आयी, वही अब दरवाजा के बंद करने की आवश्यकता तक विजया महसूस करने लगी। यही कारण था कि विजया की इच्छा के अनुरूप आशुतोष दरवाजा बंद करने के लिए आग बढ़ा। पर अभी दरवाजे

तब पहुँच भी नहीं पाया था कि धड़ धड़ घटाम की आवाज के बीच धरती एक बार फिर काप उठी। एक बार फिर विजली गायब हो गयी। भला एम म आशुतोष भी अपन को कहा रोक पाता। आस नाम के लागे की तरह वही भर में भूचाल भूचाल चिल्लाने बाहर की ओर भागा। यह बात दूसरी थी कि दरवाजा से दा चार ही कदम आगे पहुँचा विजया की याद आत ही काप उठा। विजली की-भी फुर्ती के बीच पागला की तरह अदर लौटा। एक माम की बीमारी से बहद कमजोर हो आयी विजया को नहीं गुडिया की तरह बाहा में भरकर बाहर ले आया। बाहर चारा ओर अब फिर कुहराम मचा हुआ था। सुरक्षित स्थान पर पहुँचते पहुँचते आशुतोष का अंग प्रत्यग जात्मलानि में भंग आया, जबकि इस सबसे खेबर विजय वृत्तनता के भाव से दबी जा रही थी।

अब परमपिता परमात्मा की कृपा से यह कहानी पूरी हो पायी है। इसीलिए मैं उसका तहदिल से आभार प्रकट करता हूँ। हाँ इसी के साथ उससे यह प्रार्थना करता हूँ, जस-जैसे इस कहानी को अधिक-अधिक लोग पढ़ें वैसे-वैसे भूचाल व झटका की भयावहता कम होती चली जाये तथा अपन सहृदय पाठकों से मैं यह निवेदन करता हूँ कि चाहें मैं दिखायी दूँ या नहीं मगर रात के सन्नाह के बीच जब कभी मैं 'भूचाल भूचाल' चिल्लाऊँ तो मुझ पर जहाँ वे यकीन करें, वही सडका व गलियों के आवारा कुत्ता को जावारा और हानिकारक न समझें उन पर निगरानी रखें कि जब वे एक निश्चित दिशा की ओर मुह ऊपर उठाकर लगातार ककश स्वर में भौंकते हैं और

●●● सम्मेलन

उद्घाटन भाषण के इग हिम्म न ता इम बार भास्कर का इतना विचलित कर दिया कि उसके लिए एक शब्द आगे टाइप करना कठिन हो आया। वैसे, टिकटभंग मत समय भी इग हिम्म न उस परशान किया था। सम्मेलन शुरू होने से मुश्किल से गान-आठ मिनट काप थे, जबकि उद्घाटन-भाषण छपना तो दूर, टाइप तक नहीं हुआ था। ऐसा इसलिए हुआ कि जिस मंत्री जी का पहले उद्घाटन करना था उह बिग्री जरूरी काम से नयी दिल्ली जाना पडा था। वह तो सम्मेलन के 'आगनाईजिंग-सेक्रेटरी' ही इतने तेज-तरार थे कि उन्होंने मारा मामला मभाल लिया था।

उन्होंने रात-ही रात से एक अघमत्री जी से उद्घाटन करने की स्वीकृति ले ली थी। नये मंत्री जी से मपक कर उद्घाटन भाषण का मगोदा तैयार कर उनसे एमूव' भी करवा लिया था बल्कि उन्होंने तो यहा तक व्यवस्था कर ली थी इधर उद्घाटन भाषण होगा उधर भाषण एक घंटे से छपकर पत्रकारों आदि का टीक बस ही बाटा जायगा—जसे अध्यक्षीय भाषण। यही वजह थी कि मारी तयारिया अफरा-तफरी में हा रही थी। ठीक ऐसी ही समय भास्कर की यह मानसिकता कम छपती ? तभी तो उससे टाइप राइटर की टिक टिक खी नहीं कि मन्त्री सहित तीन चार व्यक्ति एक साथ बोल उठे थे कि, 'क्या हुआ ?'

टिक टिक टक-टक। मजबूरन भास्कर को भी अपने का समत करना पडा था।

हरी-अप प्नीज, हरी-अप ।

वसे भास्कर की टाइपिंग की स्पीड नव्वे शब्द प्रति मिनट थी। पर

आज उसके लिए बचे दा प्लेट टाइप कर पाना बठिन हा आया था। वह एक बार फिर उमी मानसिकता म आ गया था, जब 'डिक्शन' लेन समय इसी हिस्स पर वह ठहरा था। तब उसकी हू हू न सुनन पर मेत्रेटी साहब न उमका ध्यान अपनी आर खीवा था। पर वह था कि न केवल अतात का यादा म जा पहुंचा था वरन उन यादा के कारण उसकी पलकें तक गीनी हो आयी थी। यही वजह थी कि मेत्रेटी साहब अवाक म भास्कर का दखत रह गये थे। वं समझ गय थे कि भास्कर की इस मन स्थिति के पीछे उनक द्वारा तैयार किये गय उदघाटन भापण की लाइनें है। भापण का विषय भी तो 'ड्राप आउट स्टूडेंटस' यानी स्कूल छोडनवाले बच्चा की समस्याए था। आखिर वे भी ता स्वय भुक्तभागी थे। तब उनके लिए भी आग भापण का 'डिक्शन' द पाना बठिन हो आया था। मगर अब उनकी मजबूरी ऐसी थी कि भापण के तयार हुए बिना काम चल नहीं सकता था। इसीलिए उहाने भास्कर को तब झकझोरा था।

साहब गुना है आपको नौकर की ।' उसी न तो पूछा था।

यस मन कम इन कम इन कितने पडे लिखे हो ?'

'जी साहब म ता अनपढ ।'

सचमुच वही दिन भास्कर की जिदगी का स्वर्णिम दिन था। कहा वह वरतन मलन की नौकरी की खोज म निकला था कहा उसकी स्कूली जिदगी फिर शुरू हा गयी थी जिसकी उम सपन म भी उम्मीद नहीं थी। क्याकि पिता की मृत्यु के साथ उसकी स्कूनी जिदगी समाप्त हा गयी थी। बेचारी मा की भी तबीयत यदि ठीक हाती, तो स्कूल पढन का सपना वह बनाय रह सकता था। पर बीमारी क कारण मा का खुद ही सहारे की जरूरत थी। ऊपर से मरसे बडा हान क कारण सार परिवार का भार उसी पर था। यह भी मात्र समाग था कि वह एम दरवाजे पट्टा जिहान भल ही उमसे नौकरी करवायी पर साथ ही उस पढाया भी। वह ता उसकी मालकिन नहीं मानी, नहीं ता मालिक शायद उसम नौकरी भी नहीं करवात। इतना ही नहीं उसक मालिक न उमक भाई-बहना व मा तक की पूरी मदद की थी। वह दिनभर काम और

रानभर पढाई करता था ।

यही सारी बातें थीं कि उदघाटन भाषण के इस हिस्से को वह सह नहीं पाया था । क्योंकि मेट्रेटरी साहब न उसे डिक्शन दिया था—'अपवादों का छाड़ जो भी बच्चे पढाई के दिनों स्कूल छोड़ते ह उसके पीछे कोई न कोई मजदूरी होती है । चाह वह माता पिता की अकाल भीत हा या फिर गरीबी । आकडे यदि इकट्ठे किय जाये ता स्कूल छोड़नवाला का पचानवे प्रतिशत ऐसे ही अभागों का होता है । पर अफमोस कि ड्राप जाउट स्टूडेंट्स' की बातें तो आय दिन होती है और उनकी साक्षरता की बातें भी आय दिन की जाती ह, पर इस दिशा म सोचा ही नहीं जाता कि एस बच्चे स्कूल क्या छोड़ते है । यह ठीक है कि संविधान के अनुसार चौदह साल से कम उम्र क बच्चा से मजदूरी करना कानूनन जुम है । क्या इस मुद्दे पर अमल होता है ? निरक्षर प्रौढों का साभर बनान क लाख प्रयास करत हुए भी निरक्षरों की सम्या म कमो नही आ पाती है । ऐसा इसलिए कि सौ निरक्षरों का जहा साक्षर बनाया जाता ह, वही निरक्षरों म एक साथ पाच सौ और आ मिलत ह । इनकी समस्याओं के बारे मे गांधी जी तथा जवाहरलाल जी ने गभीरता से सोचा था । वे समझते थे कि ये ही बच्चे आगे चलकर समाज के लिए अभिशाप बनत ह । इसलिए स्कूल छोड़नवालों की समस्याओं ।

इससे आगे भास्कर के लिए डिक्शन न पाना कठिन हा आया था । क्योंकि, इससे आगे की लाइनें बिल्कुल उमकी जिदगी से मेल खाती थी । ऊपर से 'डिक्शन' दत समय मेट्रेटरी साहब की गीली पलका के दद से उसे और भी त्रिचलित कर दिया था । क्योंकि तब उसके मन म विचार आया था कि जा व्यक्ति इस तरह की भाषा त्रिच रहा है उमके अपने अतर म कही-न कही इसका दद जरूर छिपा हुआ है । अथवा

मचमुच उसका यह सोचना तब उरा उतरा था जब मेट्रेटरी साहब ने अपनी कहानी उसे सुनायी थी । मसौदा टाइप होने के बाद मेट्रेटरी साहब ने स्पष्ट शब्दा म स्वीकारा था कि यदि मैं तीन दिन की भूल क कारण हुसनी साहब की बलास में न गिर पडता तो शायद मैं भी मूरख-गवार ही रहता । क्योंकि तब हकीकत का पता चलत ही हुसनी साहब

पढाई की व्यवस्था की थी। ऊपर स यदि मर नबरो का दण मेरी बीबी मुख पर, फिदा नही हाती, तब शायद इतन पर ही मैं किसी स्कूल का मास्टर ही रह जाता। जबकि आज मैं प्रोफेसर हूँ।' इतना ता क्या उन्हाने यहा तक सुनाया था कि उन्हाने न कवल चार-पाच घरो म बतन मल, वरन मालिका के बच्चा का मखन डबल राटी खिलाकर खुद जाधे पट कई दिन बिताय हैं। क्याकि तीन चार राटिया खात ही मालकिनें कह उठनी थी— अर, तुम तो बहुत खाना खात हा। तुम्हारी ही उम्र का मरा बेटा दा राटी भी नही खा पाता है।' मगर इतने पर भी मेरी पढने की लालमा खत्म नही हुई थी। जब भी मालिका क बच्चा के हाथा काफी-कितावें देखता, तब मेर मन म बिचार आता कि क्या कभी मैं भी इसी तरह कितावें पढ पाऊंगा ? बकरी स चलत मुह की मुचे चाह नही थी।

सयोग स एक दिन मेरा सपक रात्रि स्कूल के एक अध्यापक स हा गया। उसन मुचे मट्रिक की परीक्षा प्राइवेट तौर पर दन की सलाह दी। मगर मेरे लिए फाम भरना आदि सभी कुछ समस्या थी। जान उस अध्यापक का मुझ पर कैसे तरम आया या जान क्या बात थी कि उसन मेरा फाम खुद फीस दकर भरा दिया। मैं मालिका की नजरें बचाकर रात म पढता था। मैं परीक्षा म पास हुआ और अपन जिन म फस्ट आया था। इसी नतीजे क साथ मेरा भाग्य बदला। मुझे वजीफा मिल गया और मैंन इटर म दाखिला ले लिया।

वजीफे के पसा स काफी कितावें ता जुट जानी, पर राटी क मकान नही जुटत थे। यह मव कुछ हुमैनी साहब न दिया था। मैं भूखा उनका क्लाम म बहोश जो हुआ था। यही वजह है कि अब जब भी मैं किसी छोट बच्च का मजदूगी करत देखता हू, तब मेरा माथा फट आता है, घटों घटा मैं यही सोचना रह जाता हू, काश ! इस भी रात्रि-स्कूल के मास्टर चदरसिंह क हुमैनी साहब जस काई मिल जान।

'यह भी भाग्य की बात है कि एक जाई० ए० एस० की बंटी हात हुए भी मेरी पत्नी मुचे इन कामो स रोकती नही, बल्कि पसा की वजह स भर कामो म रुकावटें आती दख स्वय नौकरी करती है। मगर इस तरह के अभाग बच्चों की तादाद इतनी है कि चाहते हुए भी हम उनक

रिए अधिक कर नहीं पात है। बच्चे का इन केंद्रों का समर्पित करके मैं सिर्फ उम चंदरमिह की गुरु दक्षिणा को चुका रहा हूँ जिन्हान मेरी नौकरी नगन की खुशी पर मिठाई के डिब्बे का पकड़त समय कहा था—
 वेट यदि जभाग बच्चा के जादो के आसुआ का जप्रिव म-अधिक पाछ मका ता यह मेर ऊपर बडी कृपा होगी ।

भास्कर तब अवाक्-मा सत्रेटरी माह्व को दखता रह गया था। उमका अनुभव यही था कि जितन भी लाग ऊपर पहुच हे जमि जनवरी में हीच रु या ता ह ही नहीं, या फिर व एम है जा अपनी असनियन का फल थिए ह। जबकि इस वार नये मत्री जी न स्पष्ट शदा म स्विकारी थी— दुनिया की अधिकाश मरकारें भल ही शिक्षा-पद्धति पर जार देन का दिधावा करती ह, मगर उनकी याजनाए एसी हाती है, जिससे गिरे व चले जाए हमशा कमेया के लिए और अधिक दबत चल जायें। क्याकि ऐसी काल पर ही जेठके निक्कमे बेटा की जिदगी निभर रहती है। वैंम हम भी यह दावा तो नहीं करत कि इस तरह की बाता स हम उबर गय ह। मैं तो यह मानता हूँ कि हमारी शिक्षा-पद्धति बच्चा का दो भागा म बाट दती है। एक जोर सपना के बच्चे होत ह, दूसरी आर विपना के। पर एकदम सारी बुराइयो को दूर नहीं किया जा सकता। नेहरू जी का सपना था कि उनके बतन का एक भी आदमी शारीरिक व मानसिक रूप स गुलाम न रहे। इसीलिए उनके इसी सपन का पूरा करन के लिए पूर देश म एक याजना बनायी गयी है कि

उद्घाटन भाषण पूरा टाइप हो चुका था। सत्रेटरी साहज भास्कर की पीठ थपथपात हुए एक प्रति छपने के लिए प्रेस वाले का द जोर दूसरी का स्वय लेकर हाल की ओर चल पडे।

पूरा हॉल खचाखच भरा हुआ था। भीड की वजह स भास्कर का भी अदर पहुचने म थोडी दर लगी। वह अदर तब पहुचा, जब तालिया की गडगडाहट के बीच उद्घाटन भाषण शुरू हो चुका था। मच के पीछे मोट-मोटे अम्बरो मे लिखा था—‘बाल मजदूर और उनकी समस्याए।

उसने मुडकर पीछे दखा ता दग रह गया, क्याकि हाल म इधर-

उधर जान भर का छाडी जगहा म ट्रे म पानी के गिनाम लिय बारह-
 चौदह माल के बन्च जहा-तहा गडे ध । वे कुरमिया के बीच ग्रिमक्कर
 लोग का पानी पिना रह ३ । उमका माथा झनचना बठा । उमका मन
 वहा म फिर उछड गया । पर हाल से बाहर निकानन की साच ही रहा था
 कि उमकी नजर फिर मनेटरी साहब पर जा टिकी । वह साचता रह गया,
 वहा मनेटरी साहब न सम्मेलन के विषय की जार लागी का ध्यान
 गीचने क लिए जान-बूझकर ता ऐमा नही किया है या ब्यस्ततावश
 अनजान म उनम एमा हा गया है ?

००० नेकीराम की चारपाइया

मया कि वह आज जानी था। उनको अपनी जार जान दख सख वाला था—‘माहव चारपाइया बनानी ह?’ यही कारण था कि उनकी यह बात सुन नकीराम जराक उम दखत रह गये। उह तब ऐमा गगा जमे उह धरती का वह दाजत मित आयी ह जिसकी कल्पना नी उनक निए असभव थी। न्योकि वे ता त्र सत्र इम बात म परशान थे यदि इस वार व चारपाइया नही बना पाय ता फिर वे शामद ही बना पाये। खतरा था उनकी योजना का पनी को पता चरत ही उनकी योजना पर मुसोबत का पहाड टूट पडेगा। इसीलिए महमूद के खानीपन का पता लगत ही उनके झुरिया भर चेहरे पर पहनी बार चमक चाक आयी थी तब उन्होन महमूद के पीछे दीवार के सहार सटी बनी-बनायी चारपाइया का ईप्या भरी नजरों से देखा था, मोचा था—इनस सौ गुना अच्छी चारपाइया बनवाऊगा। इसी कारण मारे खुशी के वे महमूद का अपना सारा काम समझान लगे। पर हुआ यह कि उनकी बात पूरी होने ही महमूद न जैसे ही पाच चारपाइया का हिसाब फनाया ता उनकी ता जलग, उनकी खुशी तक की जमीन हिल गयी। क्याकि चारपाइया के लिए उहाने सौ तय करे थ। महमूदी हिसाब अटठारह किला बान, बुनाई तथा टूट फूट के कारण एक सा तीस तक जा गिचा था।

वमे यह बात नही कि वे आज इतन पसे खच नही कर सकते थे। आज ता उनके पास इमरजेंसी लोन के तीन सौ रुपय थे। वे ता इन पमा मे चारपाइया के अलावा रजाइया गद्दे आदि ठीक कराकर एक बच्चे का एक स्वेटर खरीदत हुए भी बचे पमो मे तनश्रा तन के चार-पाच दिन

खीचन की साचे थे। पर महमूद न उनके झुमी हिमाव व लिए प्रश्न दटा कर दिया था। मगर हृद यह कि प्तनी बातें कर चुका पर व महमूद का माता भी नहीं कर सकत थे। एक ता सफेदपाशी जिन्गी की प्रतिष्ठा की बान दूसरा महमूद और उनकी बाता व दौरान तीन चार और बाबू महमूद म खालीपने की बात पूछर निराश स लौट चुके थे। कौन जान व लाग भी नेकीराम की तरह महमूद की फिराव म धे। यही कारण था कि नकीराम का महमूदी हिमाव स्वीकारना ही पडा। यह अलग बात थी कि बान खरीदन के बाद जम ही व महमूद व माथ घर का लौटन लग तब पनी की याद आत ही व घबरा उठे।

मगर इम बार उनकी पत्नी महमूद और बान लिय जान पति को दख-कर भी खीजी नहीं। उल्टा लव असें के बाद मुस्करायी थी। यह जलग बात थी कि नकीराम न पत्नी की इस मुस्कराहट का भी अथ दूसरा ही लगा लिया। महमूद व बदल व स्वय जा बान ला रह थे। जबकि जाज की हरीकत यह थी कि उनकी पत्नी एसा कुछ माच सकन या करन की स्थिति म नहीं थी। पिछली रात की एक बात का उन पर इतना जमर था कि वह जदर ही अदर जाज रा रही थी। फिर वसाधिया वाल महमूद न उनके मन मस्तिष्क का झक्कार डाला था। उह तो महमूद का दख यहां तक लगा था जम मामन चारपाई बनान वाला महमूद नहीं बल्कि उनकी गहस्थी उसके रूप म खडी है। एक ता अतराष्ट्रीय स्तर पर मनाये गय विकलाग बप का उन पर असर था दूसर उन्हाने रात सपन म पति को बडबडात सुना था—चिता मत करा। अब कल स कार्ट फश पर नहीं भाएगा। उन्हाने सारा इतजाम कर रखा है। अब एक तुम तो क्या धरती का काई भी नहीं। तब वह जवाक-सी अगल बगल माय पति व बच्चा का दखती रह गयी थी। पहनी बार उह भी अपना परिवार चूह के परिवार-मा नगा था। सयाग कि उनका नाम दमयती था। हालाकि इसस पहल पति व गुस्म और बाता का मुने वह अक्सर साचा करती थी—उनके पति का दिमाग सठिया आया है जबकि अब पति की बात सुन अपन का कामन नगी थी—पति की इस मानसिकता के पीछे सिफ वे है। तब उनका अपना वह सारा व्यवहार याद

हा आया था जब उनका पति जकर चारपाइया की बाते छेड़न थे। और वे थी कि किमी न किमा बहान चारपाइया की बान टाल देती थी। यही कारण था कि रात उनकी गन्ना व मामा बार-बार वह दिन बिच आया था—जब उनकी जिद के कारण नकीराम की चारपाइ याजना चादर और दरी याजना में तबदील हुई थी। उनकी नजरा में ऊपर का क्वाटर हान के कारण फश पर सोया जा मता था। तब दरी व चादर खरीदन पर व काफी गुण हुए थी जबकि जब उन्हें बार-बार याद जा रहा था उनसे पति उम रात ता अलग कड कई रात सिफ बरबटे बदलात रह थे। तब उन्हें पति की खरवटा स जरा भी हमदर्दी नहीं थी जबकि जब उन्हें यह खतरा हो आया था कि कही उनके नल उमे मात न छोड जायें। जबवता पौ फटत समय तक उन्हें यह मदह अवश्य हा आया था—जाज जतर दाल में काला है। इसीलिए उन्होंने पति के नहात समय पति की जेबें टटाली थी। पर बावजूद तीन मौ रूपय नेत्र नेन के ने चुप रही थी। क्वाकि जब वे इस सीमा तक जा पहुची थी—इस बार यदि पति न कोई और बात भी की ता वे स्वयं चारपाइया की जिद करेगी।

मना ऐसी मानसिकता में वह आज विरोध कम करनी। आज ता उनका एमा तक व्यवहार था कि महमूद न छत में पहुंचकर बान बाद में फश पर गन्ना के चारपाइया के पाया और डडा का पहले लाकर महमूद के सामने रखन लगी। हा उन्हें रात उनके चेहरे पर यह घबराहट अवश्य झलकी थी कि उनको देख महमूद क्या साबंगा। क्वाकि चारपाइया के पायो व डडा का एक जार तकड़ी का ढेर सा लगा था। उन्हें इस तरह लात दख महमूद न भी सोचा था—बाबू जी अभी-अभी बदली होकर जाय है। ऐसा वह कइ घरों में देख भी चुका था। उस क्या पता था, नकीराम की चारपाइया की यह दशा बदली के मफर से नहीं, जिदगा के ऐसे सफर के कारण है जिमके लिए विश्वबैंक भी कम है। ऊपर से रही-सही स्थिति नकीराम की उम चारपाई न स्पष्ट कर दी, जो कमर में खिची हान की स्थिति में तो चारपाई की शकल में थी। मगर नकीराम तथा उनकी पत्नी द्वारा छत पर लात ही ऐस दिखन लगी जैसे कि उमके बानों में जापसी होड हो कि छत के फश का छूने का उनमें गाल्ड

मंडन कौन पायगा। एसा इसलिए कि नेकीराम के टूका व ऊपर रंगे विस्तर का महारा पाकर बान जहा उठे थ वही चारपाई पर बिछे विन्तर न नकीराम की उम अमलियत का छिपा रगा था जिमम रान उम पर स विस्तर उठावर फश पर माया जाता था। हा, उमकी बची-खुची शकन ऐसी कि वर्गावार न होवर लगभग समानातर चतुभुज की शकन म थी। यही कारण था कि अत्र महमूद तक पहल वभो नकीराम व उनकी पत्नी का देखता रह गया था, फिर मजदूरपन की अपनी मजबूरी म वह यह परखन लगा—कौन-कौन मायी पाये और डडे हैं

सचमुच नकीराम की इन चारपाइया की दास्तान ही अजीब थी। कमर म बिछी चारपाई का छाड बाकी चारपाइया तब खरीदी गयी थी जब आठ साल पहल उनके दा भाई बी० ए० पास कर नौकरी की खोज मे एक माय जाय थे। हालाकि नेकीराम तब भी चारपाइया खरीदने की स्थिति म नहा थे। क्योकि भाइया की फीम जादि क लिए उह इतना भेजना पडता था कि बची तनया म मुश्किल म राटिया चल पाती थी। वह भी इसलिए नहीं कि बची तनया राटिया के लिए काफी थी, बल्कि इसलिए कि बच्चा का दूध तथा सब्जी जम दमा खर्चो का काटकर। फिर उनका साच था—कट क दिन तभी तक ह जब तत्र भाइया की नौकरी नही लगती। इसम भी बडी बात यह थी कि उनकी पत्नी भाइया की मदद के मामले म उदार थी। उनका ता उनम कहना था—यह ठीक है वे आपके मौतत भाई ह पर क्या पिता की मदद करना आपका फज नही?

फिर भाइया के जाते ही चारपाइया खरीदन के पीछे कारण यह था कि जब वे दिल्ली आय थे तब उह लगभग आठ साल नीच फश पर ही साना पडा था। हालाकि गाव म भी व हमशा फश पर मोय थे। पर जान क्या बात थी कि दिल्ली म फश पर साना उह बेहद जखरता था। तब व जक्सर साचा करन थ—कसी अजीब है जादमी की यह जिदगी जिसम जादमी नय भार की आपाधापी से जूझत बीत दिन की बकान भी न मिटा सके। जादमी के पास भरपट खान के बाद जाराम मे साने लायक चारपाया ता हानी ही चाहिए। कई बार उनके मन मे खयाल जाता—दुनिया की कसी अजीब है यह दास्तान, मरने पर तो आदमी का चारपाई म ल जाया जाता

हैं, जीत-जी चारपाई उसके लिए सपना बनी रहती ह। इसलिए उहान एक बार नहीं, कई बार अपना फैसला दुहराया था—नौकरी की पहली तनखा पर सबसे पहले वे चारपाई खरीदेंगे। मगर इसम भी दिक्कत यह हो आयी कि पहले तो चार साल तक नौकरी नहीं लगी। फिर नौकरी लगने पर समस्या यह हो आयी, यदि वे चारपाई खरीद ले ता गाव के वे बाकी चार बेकार कहा सोयेंगे जो दिलावर चाचा की सराय म रात एक दूमरे का मुह देख अपना दु ख भूला करत थ ? ऊपर स चाचा की बाते एसी कि जिनके कारण दूसरी जगह कमरा लन के बदले उहान चाचा के ही साथ रहना उचित समझा। क्योंकि चाचा जक्सर कहा करत थ— भाई, यह ता मराय है जिसके दरवाजे गाव व इलाके के लागा क लिए हमेशा खुल ह। यह अलग बात है कि काम निकल जान पर लोग दिलावर चाचा को न सिफ भूल जात ह वरन् जब कभी सब्जी म ज्यादा पानी पट जाय ता कहा करत ह कि आज दिलावरी मार्का सब्जी बन आयी है। लाग भूल जात ह, सराय सिफ रैनबसरा हुआ करती ह जबकि मेरी सराय एनी है जिसम जब कभी काइ आया, कोई भूखा नही रहा। काइ साचे ता जरा खान वाल आठ दम जन हा ता मैं पाव जिमीकद लाकर उनका रीग-रीग सब्जी नही खिलाऊ ता और क्या करू। दुनिया समझती है, वीवी-बच्चा की भी परवाह न करन वाला मैं बेवकूफ हू, पर मैं साचता हू—मेरी धरती इतनी ता बाझ नहा जा गेमा जादमी पदा ही नही कर जो अपने दु ख मे दूसरा का दु ख बडा समझ-कर मरे इलाके व मेर देश क लागा का दु ख दूर न कर। मुझे ता हर बेकार के चहरे पर ऐस ही

भला गेसी यार्ते मुनकर नवीराम नौकरी लगन पर भी दिलावर की मराय स अलग कैसे जात ? इसी कारण वे पहली तनखा पाकर भी चारपाई नहीं खरीद सके थे। हा, उहानि चारपाई तब खरीदी थी जब शादी हा आन के कारण चाचा की मराय म रहना अब्यावहारिक था। पर फिर भी वे चाचा की सराय का भूल नहीं थ। जरा भी गुजाइश होन पर व न सिफ चाचा की सराय म दस-पंद्रह किना आटा पहुचा आन थे वरन् जब भी ठड म ठिठुरत बच्चा का देखत थे ता उनका मन पमीज आना था।

यही ता कारण था कि भाइयो को फश पर सात वे कैम सह पात।

उनके आत ही उहान उन मरके लिए चारपाइया खरीदी थी। शायद यह भी एक सयाग था। एक ता भाइया के आत ही कमरे की दिक्कत, हमरा एक गरीब मकान मालिक का लडकी की शादी के लिए एक हजार रुपया की जरूरत। तीमरा एक हजार एडवास दन पर चपरासी-क्वाटर की खुली जगह का लालच। ऊमर म जाश्चय कि नकीगम न एक मित्र म इस बात का जिकर क्या किया कि ल ही घटे मे हजार की जगह पद्रह सौ हाजिर। नतीजा यह कि ममाज की सामायटी के सहारे छत्तीस ही घट के अदर न सिफ नया मकान बरन के पाच चारपाइया म पहली बार अपन पूरे परिवार के साथ। जलबत्ता के ऐसा खत हुए भी यह भूल नहीं पाय थे कि उनकी मा मौतली मा के व्यवहार के कारण इस समय भी गाब मकान के चाख मे फश पर सायी होगी। पर तभी उहान सोचा था—भलाई का फन हमेशा भला मिलता है। उनके भाई जरूर उमकी मा को चारपाई पर मुलायमे। उह क्या पता था जिनका के भाई ममझे ह के भाई नहीं ह मौतले ह। व तब भूल गये थे आन वाल कल म अब उह पचास की जगह न सिफ पचहनट्ट किराया देना पड़ेगा बरन् छ जना के बदन आठा के लिए राशन जुटात जुटान व इस स्थिति तक पहुच जायेग कि जिम सोसायटी म उह दो घट मे हजार की जगह पद्रह सौ मिने थ उसी मासायटी की मामिक किशत जग न कर पान व कारण उह अपमानित होकर इस्तीफा इमलिए देना पड़ेगा कि भाइया व पाम म आन वाते मनीआटरा के लिए पाम ही पास्ट आफिम म खतम हा गय है

इम पर भी इतना ही हुआ हाता ता बात और थी। हद ता यह हा जायी कि एक भाई की शादी के मौके पर उह अपनी मौतली मा म एक ऐसा वाक्य सुनना पडा जिम सुन के हक्के-बक्के रह गय। तभी ता के चक्कर-मा खा छञ्जे पर बढ गय थे। पर जाश्चय कि पूरी रिश्नदारी म स न ता किसी न मौतली मा का फटकारा था और न मकी का दिलासा दी थी। वम भी नका के पाम अब बचा क्या था। अब ता उनके पास सिफ के आमू बचे थ जिह बहान की काई कीमत नहीं चुकानी पन्ती है। अगर एमो बात नहीं हाती ता मौतली यह थाडे ही रहनी—बह ता जनम भर का नगा हुआ। जरा उमम पूछा ता उमके पाम लौटन को पम हँ या नहीं हा इमक जबाब म

अब तक खामोश रही उनकी माँ जबश्य जोली थी—दुनिया में सभी नगे पदा होत ह । सभी दुनिया में नगे ही जात ह । फिर किमी के पास यदि होता भी है तो दूसरो का कौन देता है । वैसे जा दूसरा का देता है वही जाज के जमान का नगा है । कोई बात नहीं मेरा बेटा नगा ही सही, जब मैं अपन बट क साथ जाती हूँ दा रोटी, मुझे दे ही देगा । वैसे भी अपना पट ता कुत्ता भी पाल लेता है । खबरदार जा इससे जाग किमी न कुछ कहा

इसके बाद नैकीराम अपनी माँ का क्या समझात ! अगले ही सुबह अपनी माँ को अपन साथ दिल्ली ले आय थे । अतबत्ता माँ को लात समय उन्हें यह अहसास हो आया था कि वे न सिर्फ माँ को ला रह ह, वरन् हमेशा हमेशा के लिए भाइया स अलग हो रह है तथा अब आग का समय उनका ऐसा आन वाला है जिममें उनकी दमयती उनमें कहा करगी—तुम निरुम्मे नहीं तो और क्या हा, जा यह तक नहीं समय सके—जाज के जमान में तो एक काय में पैदा हुए भाई भाई नहीं हा सकते ह । हा उनके लिए थोड़े सतोप की बात यह थी कि नियोजित परिवार के जमाने में उनका परिवार इतना अनियोजित नहीं था जिम सभाला ही नहीं जा सके । इस मामल में उन्होंने काफी सफरता भी पा ली थी । क्याकि भाइया के जमाने में पहली का खतम हा आती उनकी तनखा धीर धीर बीस तक खिचन ही लगी थी । इसमें अधिक उमर बरकत इसलिए नहीं थी कि वे ऐम कमचारी नहीं थे जिनका बिना भाग ही सरकार पाच-पाच छ छ महगाई-भत्ते का नोटफा बैंक या फंड में जमा करन दिया करती थी । व ता एम कमचारी थे जिनका महगाई-भत्ता महीना पहल ड्यू हो जान पर भी वर्षों तक कुभकर्णी पैसले के अधीन लटका ही रहता था । क्याकि नीति निर्देशक अच्छी तरह जानत थ, उनकी मुविधाएँ सिर्फ तब तक हैं जब तक लोग राटी और कपडा में ही उनझे रहें । चारपाइया ता बहुत दूर की बात थी । एम में उनने पाच पाच चारपाइया को बनान नायक एम माय पैस कमे हाने ? हा वे एक एक कर चारपाइया बना सकते थ । पर उममें दिक्कत यह थी कि बच्चो को जग ही एक के बनान का पता चरता, व आपस में लडन लगत— नयी मैं मोऊगा, मैं माऊगा ।' एमलिए नतीजा यह कि नकीराम की चारपाइया नगभग तीन साल में पडी थी ।

अब ऊपर महमूद चारपाइया बुनते लगा था। जाखिर वह इतना अनुभवहीन तो नहीं था जो मालिक के न बताने पर भी अलग-अलग चारपाइया के डंडा और पाया का अलग-अलग न कर सके। यह अलग बात थी कि इस छटाई के दौरान पहले जहा वह खीजा था, वही बाद में उसका मन नकीराम के प्रति इतना पसीजा था कि उसने अदर-ही-अदर फैमला किया था—भले ही पाया के छोटे-बड़े हो आने के कारण उन्हें ठीक कराने में उसे नये सिर से मेहनत करनी पड़े। वह टूट-फूट को निभायगा। संयोग कि सिर्फ एक पाया टूटा था। अलबत्ता दो चारपाइयो के डंडे तब तक नहीं बनते जब तक फिर काटने पर चारपाई के घुटना तक सिकुचन की मजबूरी ही न हो आये।

नीचे नकीराम थे कि रजाइया और गद्दा का एक जगह जमा कराने के बाद इस कशमकश में जा पहुँचे थे करें तो करें क्या? क्योंकि बिटिया के सुबह ही फट जाय सूट की पूर्ति उनकी जरूरत में और जुड़ चुकी थी। इसलिए वे चाहते हुए भी रजाइया में हाथ डालने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे। ऊपर से रजाइया व गद्दे एम-जमे कि वे सुदामा के तदुला की पाटलिया है। क्योंकि उनकी रूई यदि कई जगह रूई के ढेर की शकल में थी तो कई जगह सिर्फ कपड़ा आमन-सामन।

— पापा चला न बाजार। सबसे पहले मेरा स्वटर।' नकीराम का लडका जिद पर उतर जाया था।

— हा बेटा जरूर खरीदेंगे दमयती बेट को दिलासा दे रहा थी। बिटिया का समझा रही थी बटी, पहल बड़ा काम कर लने दे। तरा मूट ता पहली का भी बन जायगा। देख ता पहल इसका स्वटर चाहिए। इमक निक्कम माथिया न स्वटर के टूट डारो का खीच-खीचकर पहनने लायक भी नहा छाडा है। गाठें नगायी जाये ता कब तक ?'

मगर नकीराम खामाश थे। शायद वे पत्नी की तरह बच्चा को दिलासा तक देने की स्थिति में नहा थे। क्योंकि सबकी निगाह उन पर था, उनका दुःख था—वे किसका मुह देखें। इसलिए उनकी निगाह सिर्फ रजाइया पर थी। जानते जा थे, जिस तरह से उनकी स्वाहिश चारपाइया थी उसी तरह उनकी पत्नी की स्वाहिश कभी अच्छा विस्तर था। यही

कारण था कि इस याद न उनका इतना बेचन कर दिया कि उनकी आखों के सामने उनका सारा अतीत खिंच आया। वैसे, उन्हें भी लखपति बनने के मौके मिले थे। पर व लखपति बनत कस ? उनका तो आदश वह दिलावर था—जा बेकारा का रोग रोग सब्जी खिलाया करता था। उसी का तो असर था कि वे आज के खुलआम रिश्वती जमान में भी एक कप चाय को भी रिश्वत मानते थे। तभी जान क्या हुआ कि उन्होंने आवेशवश एक रजाई उठा ली। तागा ताड़न लग। उनको देख दमयती न भी दूसरी उठा ली। अब इधर रजाइया के ताग टूट रहे थे। उधर वर्षा बाद दमयती व उनके दिला के टूटे तागे जुड़न शुरू हो भाये थे। गरीब दिलों के तागे ऐसे ही टूटते और जुड़ते हैं। नकीराम को पत्नी का वह चेहरा याद आ रहा था जब बच्चों की भाग के बीच वह अक्सर कहा करती थी—मर सामन रोकर कुछ नहीं बनगा। राआ अपन उन चाचाजा के मामन जिनकी याद छत पर पड़ी है। कौन जान चारपाइया ही पिघल आय ' दमयती का अपन पति के उस सपन की याद आ रही थी जिसमें उन्होंने धरती भर के लोगों के लिए चारपाइयों की कल्पना की थी। सामन बरामद में दम की मरीज मा खास रही थी—खो खो। शायद नीचे फश पर सान के कारण मा का भी गाव याद आ गया था। क्योंकि गाव में ठीक उनके साने की जगह के ऊपर नकड़ी की बनी पाटी में दजना पाय व डंडे पड़े रहते थे। तब नकीराम बचपन में कई बार रात ही रात में उन्हें जोड़ने की सावधानी थी। वम, इसी याद का आना था कि नकीराम के लिए भी अपने का सभाल पाना कठिन हो जाया। उन्होंने गुस्से में आकर तागा इतने जारस ताड़ा कि वर्षों पुराना रजाई का छीजा कपड़ा घुरी तरह फट आया—चर-चर

अब नकीराम और भां काप उठे। अब ता रजाई के कपड़े की जरूरत और उभर आयी थी। आखिर बधी-बधाई कदी आमद की यह स्थिति न हा ता किसकी हा। इसीलिए उनकी आखों के आग पूरी तरह अधेरा छा जाया। घबराकर उन्होंने दमयती को देखा, इससे अधिक वे कर भी क्या सकते थे। क्योंकि नकी की नकिया अब तक उन्हीं के कंधे पर टिकी थी। फिर उनके अपन अनुभव थे—इसान इसान के आसू देख पिघल सकता है पर पत्थरदिल ईश्वर नहीं। शुकर भी यह कि दमयती इतने पर भी घबरायी

नहीं। गायद जानना था—भक्ता की परीक्षा वाना बातें भले ही द्वापर व त्रेता युग म रही हा पर आज के जमान म ता म्यिति यहा तक हा आयी है कि आदमी का अपना थम तक उमका अपना नहीं। मगर आज अब उनक लिए भी समझ्या करे ता करें क्या ? आज ता उनके पाम तक कुछ नहीं था, वक्त-प्रवक्त वं लिए छिपाय उनक पैस तक अब गहस्थी वं चूल्ह म स्वाहा हा चुकं थे। उनके पति व पानी भर जाय फेफडा वं पानी का मुखान, फला की एकाएक जरूरत जा पड जायी थी। क्याकि व पिछले जमा म एम ही कर्मों वं फला की धराहर लकर पदा हुए थ। भला जब एक गूगी मा अपन बटे के लिए नगा शब्द नहीं सुन सकी ता एक नारी यह कसे सहती—उसकं पति की ता जीभ फला के लिए सूख और वह वक्त वं वक्त के लिए पति स पैसे छिपाये रह ? हा उनके लिए तब ममझ्या अवश्य खडी हो जाती था जब पति जवरदस्ती फल वच्चा का पकडात थ और वच्च उह पुन पिता का पकडा दत थे। शायद वे भी जान चुकं थे—वे धरती म धरती के फला का खान नहीं धरती क पूवज मी कर्मों के फला का खान पैदा हुए है। आखिर जब व इतने बच्चे ता रह नहीं थे जा पिता की ह्वाक्त की जनदेपी कर मकें। क्याकि व दत्र चुकं थे, उनके चाचा एक दावार जाय अवश्य थ, पर उहान पमा की कमी के वारे म फजिया भर भी पूछा नहीं था। हा जहा-तहा वहा अवश्य करत थे—भाई साहब का परिवार ता ऐसा परिवार है जिसमे ममुद्र की तरह सारी मदद स्वाहा हा जाय। य ही बातें थी जा नकी व वच्च तक एक तरह म तन स आय थ। और ता जार काइ और उपाय नहीं दखा ता उहान इन्तहान के दिना तक रात-रात बडाई कर पिता वं लिए फन जुटाय थ।

—पापा, स्वटर पहली का ही खरीना। नकी व बट न इम वार भी उह ढाढम बधाया था। आखिर वह था ता उमी बाबू का बटा जिसकी जरूरत ता द्रौपदी की थीर हा और तनखा दा जून राटी तक का न हा। भाइ की बात सुन मूट की धान कहनी बिटिया भा बाहर चली गयी थी। शायद उमके लिए भा अब अधिक दख पाना अमह्य हा आया था, जरकि अब नकीराम की निगाह बाहर उधर टिकी थी जिधर मा फश पर लटी थी। और दमयती थी कि उहें एम लगा जम भगवान नना

का नहीं उनकी अपनी परीक्षा न रह है। उनका नाम राजा नन की उम्र दमयन्ती पर जो था। नल की दमयन्ती सामान कम हान पर भी छत्तीम पदाथ तयार कर सकती थी। इसलिए वह बाहर एम गयी जैसे अनजान म वह पति का यह सबन द गयी हो, जिम आदमी क पाम पम नहीं हान उसके भा-बाप, भाइ-बहन दास्त रिफ्तदार कोइ भी अपन नहीं होन। यही वजह थी कि पत्नी क उम बार क बाहर जान क कारण नकी जोर भी धबरा आय। अब ता उह एसा लगन लगा, जम जोर ता और अब उनक अपन ही हाथ-पाव तक उनक अपन नहीं रह

हानाकि तब दमयन्ती एना मकत उन बाहर नहीं निकली थी। वह ता उम मूस के कारण गयी थी जिमक, वल पर उन्हाने चारपाइया म बचे पमा स ही स्कूली स्वेटर एक सूट-रजाइया तथा गद्दा की ही माग पूरी नहीं की वरन तीन किलो और मई खरीदत हुए घुटना मे थोड़ी फटी अपनी धाता तक की एम क्षति पूर्ति कर दी जम कि नकीराम का इमरजेंसी लान न हाकर घरती म आय दिन लगन वाली इमरजेंमिया मे कम न हा। क्याकि सयागवण उह सरकार द्वारा मगीवा के निण मुहैया वह कट्टाली कपडा मिल गया जा तनखा ज्यादा हाने के कारण उनके पति का तो मिलता नहीं था। मिलता था उनका—जा बधी जामद न हान क कारण गजेटेड अफमरा क सर्टिफिकेट के सहार दूकानदारी तक करत हुए आज के गरीब थे। यह अलग बात थी कि इतना करने पर भी नकी की एक जोर चूक के कारण दमयन्ती का इतना किया-कराया भी उस समय धरा का धरा रह गया जब रजाइया लेकर लौटत ही बच्चा स उहे पता चला—महमूद दूसरी चारपाई क बुनन के समय स लेकर अब तक कई बार चारपाइया की अदबायनी उन छ रस्सिया की भाग कर चुका है जिह खरीदन का अब पस बचे नहीं थे। हालाकि उन क्षणा की हकीकत यह थी कि पति-पत्नी दोना सब असें बाद जातरिक खुशी के बीच जहा धरेलू बातें कर रह थे वही यह सोचे थे—अब घर पहुचत ही बेटे का नया स्वेटर पहन देखेंगे बिटिया सूट सिल रही हागी। यही कारण था कि बच्चो की बात सुन ता व दोना हक्के-बक्के स एक-दूसरे का मुह

ताकत रह गय । फिर काइ और उपाय न भाच दमयती बपडे मुघान का टगी रस्मिया बरामद म खालन लगी । नबी थे कि छन पर जा महमूद म बाल—'अर अर, इम जाखिरी चारपाट क बुनने तक अभी रस्मिया खरीदकर लाना हू । मगर मामन पाक म एमे बँडे कि बब ऊवकर महमूद बमाखिया क महार दुकान को लौट और बब वे घर लौटें, न्याकि अघेरा क्षण क्षण गाढा हाता चला जा रहा था

□□

